ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

फरवरी-मार्च 2023, वर्ष 6, अंक 12

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय

आपन बात–डॉ रजनी रंजन /5

• धरोहर

पहिले करिके अंजोर– राम नवल मिश्र/6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

धुनाइल बसंत आ पीटाइल फागुन–विवेक त्रिपाठी/19–21
रीत गइल मन के पिचुकारी– भगवती प्रसाद द्विवेदी/26–27
फगुआ–बसंत के मदनोत्सव में पुरखन के बैदई– शशि रंजन मिश्र/31–32
कुंअर सिंह के आखिरी रात – मनोज भावुक/36–38
सुनी न अरज मोरे भइया हो– डॉ बलभद्र/39–40

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना

अब कहाँ उ फगुआ बसंत–मीनधर पाठक/7–10
माटसाहेब–डॉ रजनी रंजन /21
नेपाली आजी के दुख–शालिनी कपूर/22
फगुआ कइसन– रामसागर सिंह 'सागर'/23–24
कहल सुनल माफ करिह–डॉ सुमन सिंह/28–29
बेटी–पतोह – उमेश कुमार राय/38
इज्जत शालिनी कपूर/40–41 आ 46

• कविता/गीत/गजल

गजल–अजय साहनी/10
बासन्ती दोहा–कनक किशोर/11
होरी–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /11
नेह छोह के होली हो–नवचंद तिवारी/12
देखा बसंत फिर आइल बा– डॉ रामबचन यादव/12
फागुन में सब बौराये–अशोक मिश्र/13
सुनै विसभोरी पिया–राजेन्द्र शाह राज/13
गीत– लाल बहादुर चौरसिया 'लाल'/14
गीत–केशव मोहन पांडेय/14
गीत–योगेन्द्र शर्मा 'योगी'/15

• कविता/गीत/गजल

बाबा अड़भंग–धीरेन्द्र पांचाल/15
बसंत बयार–कैलास नाथ शर्मा 'गाजीपुरी'/16
गीत– लाल बिहारी लाल/16
हहरत हियरा के हिरना लोभाइल– डॉ ज्ञानेश्वर गुंजन /17
भारतीय किसान– डॉ राजेश कुमार माँझी/17
गीत–चेतन कश्यप/18
रामनवमी में अम्मा–सारिका भूषण/24
बूड़ल बंस कबीर – दिनेश पाण्डेय/25
गजल– नूरैन अंसारी/26
बसंत लेके उधार– अंकुश्री/44

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

भारतीयता के अमिट कहानी 'गिरमिटिया भारतवंशी' – महेंद्र प्रसाद सिंह/30
'कुछ चिंतन कुछ सुध' से जागत आस– दिनेश पाण्डेय/33–36
बनारसी रस में पगल 'बंगड़ गुरू'–केशव मोहन पाण्डेय/42–44
संत दरियादास के पठनीय जीवनी–धनंजय कटकैरा/45

एह अंक के चित्रकार / 46

■■

आपन बात

अनघा भाव मन के उद्बबेगत बहुत कुछ कह जाला।उहे सब जब लेखनी में समा के कागज पर उतरेला तब सबकुछ नया नया लागेला। बीतल समय से बहुत सुन्दर चित्र मिलेला जवना में वर्तमान परिप्रेक्ष्य खुद हीं अपना के फिट पावेला आ ई मेल मन के खूबे भाव. ला।सुख, दुख,दया, अहम ,क्रोध आदि भाव साक्षात आपन प्रभाव डालेगा। अपना गुण के अनुकूल ई रिश्ता में खटास आ चाहे मिठास ले आवेला बाकिर रचना के मरम हमेशा आनंद में परिवर्तित हो के मिलेला।

शिव सृष्टि के सिरजक हईं।उहाँ के मानुष आ प्रकृति के जीवन चक्र के बड़हन जिमदारी देके धरती पर भेजले बानी। एगो सा क्षात आ एगो सहचर रुप लेके साथे साथे चलेले। एगो गूंग आ एगो वाचाल। एगो मद में चूर त एगो मादक गंध से भरपूर। एगो मौसम के आधार पर आपन रूप सजावेला त दूसरका आपन प्रभाव देखावेला ।एगो चलन्त आ एगो स्थिर।एगो दानी आ एगो ऋनी। एगो माया जाल में फंसल त एगो साधु नियन। बाकिर दुनो एक दूसरा के सहारा। दुनो धरती पर जीवन के रखवैया। मानुष प्रकृति से खिलवाड़ करिहें त प्रकृति भी उनकर साँस छीन लीहें । इ सब देख के आ बूझ के दुनो के साथ संसार टिकल बा। दुनो एक दूसरे के र खवाला बारन।अइसहीं पाठक आ लेखक के बीच संबंध हो खेला।पाठक के बात लेखक अपना लेखनी से उकेरेले। पाठक यानि समाज आ परम्परा, इनका बिपरीत लिखेवाला के खिलाफ समस्त पाठक वर्ग हो जालें, एह से अनावश्यक लेखन से बचे के चाहीं।

कहीं–कहीं दुनो एक दूसरे के मीत होखेलन। दुनो के मन के बात कागज पर शब्दन के संसार से खिल उठेला इहे मेल काव्य में परमानंद प्राप्ति कहाला। भोजपुरी साहित्य सरिता भी परमानंद प्राप्ति के एगो कोना ह। हरबार लेखक के चिन्तन एगो नया रुप लेके,नया सोच के साथे पाठक लोगन के बीच रखल जाला। पाठक से मिलल प्रतिक्रिया पत्रिका आ लेखक दुनो के महत्व बढावेला। कहे के मतलब बा कि समाज के बीच ई पत्रिका खूब फले फूले आ सोपान चढ़े। रचना कवनो होखे, बालवर्ग, युवा पीढ़ी,आ पुरनिया ला. गन खातिर सामाजिक राजनीतिक आ चाहे अउर कवनो विषय होखे किन्तु ओहमे मन आह्लादित करे के शक्ति होखे के चाहीं, विवाद से बच के साकारात्मक पहलवाली लेख समाज के विकास में सहायक होखेले।

सरसों मोजर महुआ आ पलाश आपन तरुणाई के साथ प्रकृति के सजावे के काम शुरू कर देले बा।सभे गाछ बिरिछ के रंग सँवरे लागल बा।नवका पतई नवल रुप धारण कर लेले बा। मनई भी इहे तरुणाई में रहे आ सिरिजन के सुन्नर संसार सिरिजे इहे कामना बा।।

■■

डॉ रजनी रंजन
सहायक सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

पहिले करि के अंजोर

पहिले करि के अँजोर घरवा अँगना
तब जाके मन्दिरवा जराउ दियना

जेमे तेलवा सनेहिया क भरि के भरपूर
ओहमें नेहिया क बतिहरवा डारि देहु पूर
तब जराइ के करहु आरती बन्दना

जहाँ रहेला अन्हार उहाँ बसेलें पिचास
जहाँ हउवे उजास उहाँ देवतन कऽ बास
उनके पुजले पुरेला मनकामना

मन कऽ गाँठि खोलि के हिया के मइल धोइ के
राग–द्वेष बैर–भाव मोह–लोभ तजि के
भक्ति–भाव अनुरक्ति से करीं उपासना

माँगहु न सोने कऽ पुरी पानी भरें कुबेर
माँगहु न अस ऊँचाई छोटि जाय परि सुमेर
सरग सीढ़ी लगावे कऽ न देख सपना

बल माँगि लेहु सेवा–सतकार करे के
धन माँगि लेहु भला उपकार करे के
मन में राखु सबही से नेक भावना

■■

राम नवल मिश्र

जन्म– 02–01–1922

मृत्यु 04–06–2015

पता– डुमरी मिश्र, पो० बिशुनपुरा
वाया बरही, जनपद गोरखपुर

अब कहाँ ऊ फगुआ-बसंत !

मीनाधर पाठक

जनम कानपुर में भइल बाकिर लइकायी के दिन गाँवें में बीतल। लमहर परिवार रहे। दूगो तीन गो फुआ लोग के ससुरा जाए खातिर दिन धरा त दू तीन जनी के बोलावे खातिर। त हम लइका लोग के ठीक ठाक फौज रहे। घर में जेतना लोग बहरा नोकरी करत रहे ओकर परिवार ढेर घरहीं रहत रहे। पिताजी कानपुर आर्डिनेंस फैक्ट्ररी में नोकरी करत रहनीं आ हमनीं के गाँव में। ढेर दिन हो जा त मामा जी मम्मी के बिदा करा ले जायीं। तब साल दू साल मामा जी की घरे बीते। ओकरी बाद फेरु अपनी गाँव । तब सबसे सहज आ सुगम सवारी टायर होत रहे। जवना में बैल नधा जा आ गाड़ीवान बैलन के हुर्पेटत, हाँकत, कबो गावत चले। ज्यादातर बेटी पतोह टायर की सवारी से नइहर ससुरे आवत जात रहली बाकिर बिआहे में डोली में बिदा होत रहली। तब आमजन लगे आजु की तरे लमहर लमहर गाड़ी ना होत रहे। हँ, टायर ढेर लोग की दुआरे ठाड़ रहत रहे।

हँ, त हम गाँवें की माटी में होसगर भइनी। घ ार में ननद भौजाई लोग के हँसी ठिठोली होखल करे। राति के तीनिए बजे से चूड़ी के खनखन आ जाँत के घर्र घर्र होखे लागे। चापाकल चले लागे। ई एक घर के बाति ना रहे। घर घर के ईहे हालि रहे। घर के मेहरारू लोग दुआरे पर सुत्तल मरद लोग की खटिया के फराकाहे से गोड़ दबा के बगयिचा की ओर चल दे आ एही समय भाई पटिदारी घर के मेहरारू लोग से मिल बतिया ले लोग। केहू एक जनी के हाथ में टार्च होखे आ उहे ई लोग के नेतृत्व करें। सूरज बाबा अपनी घर से जबले तैयार हो के अपनी रथ पर चढ़ें, तबले घर के सब मेहरारू लोग अंगना में नहा-धो के फिट हो जा लोग। आ जइसे तनी अँजोर फरिआवे, ई लोग अपनी अपनी कमरा में ढूकि जा लोग आ जेकर रसोई के भांजा होखे ऊ लोग रसोइया घर में। बाकी बड़की ईया आपन माला ले के जपे बइठ जा आ बाकी दूनू ईया घरा भर में डोलल करें।

ओने दुआरे पर बाबा लोग के दतुअन आ नहायिल धोवल होखे तबले एने इया एक मुँह की चूल्हि पर बटुली भर चाह बना लें आ गिलासे में छान छन फुआ लोग से दुआरे पर आदमी लोग के आ भीतर दुलहिन लोग के भेजवा दें। अब ए बाति के एहिजा रोकतानी, काहें से कि हम लिखल कुच्छु अउरी चाहतानी आ लिखात कुच्छु अउरी बा।

त मामा दिन धरा के अम्मा के बिदा करा ले गइल रहनीं। हम अपनी दूनू छोट बहिन की साथे टायर में बइठ के मामा की घरे चल गइनी। आजु गाड़ी में बइठि के घुमला में ऊ सुख नइखे जवन टायर में बइठि के अपनी घर से मामाजी की घर की सफर में रहे। हमके तनी तनी मन पड़ेला, बिदाई से एक दिन पहिले बाबा जी हरियर बाँस कटवा के मंगाईं। केहू के बोला के पातर पातर फंटी चिरवा के टायर पर छज्जा छावा दीं आ ओही छज्जा पर तिरपाल डाली के बान्हि बून्हि के रथ तैयार हो जा। अगिले दिने अम्मा की बइठला से पहिले ओहिमें गद्दा बिछा के नया चादर बिछा दीहल जाउ। आ अम्मा की बइठला के बाद आगे पीछे दूनू ओर पर्दा गिरा दिहल जाउ। पर्दा के जोगाड़ तिरपाल के साथे क दीहल जात रहे। आधा रास्ता ले अम्मा के घुँघुट ना उठत रहे। दूनू बहिन खेल खुल के सुति जा बाकिर हम मोका से खेत खरिहान, बाग-बगइचा, नदी ताल, ईंटा के भट्ठा आ चिमनी से उठत धुआँ देखत रहीं। आम्मा भी बइठल बइठल हारि जाँ त सुति रहे बाकिर हमार आँखी बहरे लागल रहे।

त हम गोधन पर लगन उठला के बाद मामा घरे आ गइल रहनीं।

एक बेर में पिताजी के दू चिट्ठी आवत रहे। बड़का बाबूजी खातिर अलगे आ अम्मा खातिर अलगे। अम्मा की चिट्ठी में ईया खातिर एगो पैराग्राफ अलगे लिखल रहत रहे जवना के अम्मा पढ़ि के इया के सुना दें। जब हमनीके मामा घरे आ गइनीं त अम्मा के चिट्ठी मामा जी के घर की पता पर आवे लागल।

आजु की तरे पहिले ई ना रहे कि बेटी बहिन छने आवें, छने जा। चार बरिस ससुरा त दू बरिस ले नयिहरो रहे लोग। त मामा की घरे अइला की बाद हमार नाँव चौरा की इस्कूल में लिखा गइल। मामा की घर की लगवे मघुबन साही (जिनका के हम मामा कहत रहनी) के घर रहे। उनके बेटी मीना दीदी ओही स्कूल में सात कि आठ में पढ़त रहली। मामा उनसे कहि दिहनीं कि इनहूँ के हाथ पकले ले जइहा। ई बति हमके खूब मन पड़ेला कि मीना दीदी कबो हमके लिहले बिना इस्कूल ना गइली।

हमनी के गाँव से निकल के मड़ुआ की खेते से होत बगयिचा पार क के दूसरे गावें पढ़े जायीं जां। अम्मा की अइला के कुच्छु दिन बाद मामा मउसिओ के बिदा करा ले अइनीं। दूनू बहिन लोग डलिया बीने के कहल त नानी मामा से कहि के मूज रंग आ छेदनी, सब सामान मंगवा दिहनीं आ इ लोग मूज भे के चिर के रंग रंग के रंग से राग के जवन सुन्दर सुन्दर डिजाइन डालि के दउरा दउरी आ डलिया मउनी बीने लोग। ओकरी बाद दुसूती के चादर, तकिया गिलाफ आ जवन सुन्दर सुन्दर सीता–राम, बाल गोपाल ले फोटो काढ़ल लोग। जब ऊ फोटो बाजार से मढ़वा के आवे त बुझा कि साछात सीता राम आ पतुकी से दही निकालत गोपाल जी बइठल बानीं। जवन जीवंत चित्र सुई ध ागा से उकेरत रहे लोग कि देखे वाला देखते रहि जा। ई सब गुन ढंग अम्मा आ मउसी बक्सा भर भर के अपनी घर ले जा लोग । अम्मा आवें त ईया बड़ी साध से सबकें बोला बोला ई कुल देखावें कि हमार पतोह केतना गुनगर बाड़ी। बाद में जवन मन करे फुआ लोग अपनी घरे उठा ले जा लोग।

नेवान के बाद फगुआ के दिन सुरु हो गइल। माने फागुन लाग गइल रहे। जेने देखा ओने केहू ना केहू की कपड़ा पर रंग देखाए लागल। जब केहू लाल पिअर रंग पड़ल कुरता धोती पहिनले निकले त मामा पूछि, "का हो! बुझाता कि ससुरारी गइल रहला ह!"

"हँ, महाराज! ससुरारिये में ई गत भइल ह। नाया मर्दानी किनले रहनीं हँ, सब हेवान क दिहली कुल मेंहरारू। अरे महाराज! ऊ मेहरारू मरदों ले जबर रहली ह सन।"

सुनि के मामा जी हसीं कि हँसबे ना करीं।

एही तरे केहू बरिआते त केहू समधिआने से रंगाइल कपड़ा पहिनले घूमे। तब लोग की लगे ढेर कपड़ा ना होत रहे, त माघ फागुन भर सबकी देहि पर रंग बिरंगा कपड़ा देखाई दे जात रहे। ई ना रहे कि रंग पड़ि गइला के बाद ऊ कपड़ा फेंका जाउ।

फगुआ के दिन निकिचात रहे। कानपुर से पिता जी के चिट्ठी मामा घरे पहुँचि गइल रहे कि होली की छुट्टी में घरे आवतानी। मामा आ मउसी की ओर से तुरते जबाबी चिट्ठी लिखायिल। कि फगुआ से दू दिन पहिलहीं एहिजा आवे के बा। आ जल्दी से पटखौली जा के छोड़ाइयो गइल। ओकरी बाद घर में पिता जी की अयिला के बाद का–का होई! तैयारी होखे लागल। जहाँ मामा–मउसी में पिताजी के कइसे रंगल जाई ए बाति पर मन्त्रना होत रहे ओहिजा नानी मामी बइठि के कहिया का बनी, एकर मेनू तैयार करत रहे। नानी घर में जवन सामान के कमी बेसी रहे ओकर लिस्ट बना के मामा से किनवा के रखवा दिहनीं। का, कि दमादे की आगे कवनों सामान कीनि की ना मंगावे के पड़े। टोला पड़ोस सब जानि गइल रहे कि पहुना आवतानी। हमहूँ खुस रहनी। काहें से कि पिताजी कानपुर से ढेर कुल खाए पिए, खेले के सामान आ कपड़ा लत्ता ले के आयीं। लइकई बुद्धि खइला खेलला में ढेर रहेला आ नया कपड़ा पहिने के मिल जा, त बतिय का !

घर में बिहान से ले के सांझि ले पिता जी के बाति होखे। नानी गोंसारी से भूजा भुजवा लिहले रहली। दही चिवरा खाए खातिर घरही में चिवरा कुटा के धरा गइल रहे। रामबिरिछ मामा किहा दूध खातिर कहा गइल रहे। खुशी के दिन कब बीत जाला पते ना चलेला।

तब सवारी साधन आजु की तरे ना रहे। एगो बस बिहाने देवरिया से फाजिल नगर खातिर चले आ ऊहे बस रति ले देवरिया लवटे। पिता जी चिट्ठी में बता दिहले रहनीं कि हम हे दिने आवतानी।

ऊ दिन आइल आ मामा बस आवे से एक घंटा पहिलहीं हमके साइकिल पर बइठा के चौरा पहुँचि गइनीं। अबहिन बस आवे में समय रहे। एगो चाह की दोकान के सामने बेंच पर हमके बइठा के मामा जी बगल की दोकानि से दोना पत्तल में गरम गरम जलेबी कीनि के हमके थमा दिहनीं। चीनी की सीरा में तर–बतर जलेबी तब बड़हन मिठाई होत रहे। हम फूँक फूँक खाए लगनी आ मामाजी अपना चाय बनवा के पिए लगनीं। कुच्छु संघतिया लोग भेंट गइल रहे त बातचीत करत समय बीति गइल तबे बस के हार्न सुना गइल।

"बस आ गइल, बस आ गइल के हल्ला होखे लागल। बस पकड़े वाला लोग आपन बक्सा–पेटी, झोरी झोरा, बोरी–बोरा, सब उठा–उठा सड़क पर ध के खड़ा हो गइल।

'एहिजा बइठल रहिहा। तनिको हिलिहा जनि।" हमके सचेत क के मामा सड़क पर जा के ठाड़ हो गइनीं। मुसकिल से पाँच सात मिनट बाद बस आवत देखा गइल।

देखते देखत बस आ के हमरी सामने रुकि गइल रहे। कुछ लोग बस की छत पर सामान उतारे चढ़ावे खातिर चढ़ि गइल रहे। त कुछ लोग बसा से उतरत अवइया की हाथे से बक्सा पेटी ले ले के एक ओर धरे लागल रहे। तनिये देर में का जाने केतना लोग उतरि गइल आ केतना चढ़ियो गइल। बस जेतना कसि के आइल रहे ओतने फेरू से कसा गइल रहे। जाए वाला बिछोह में त आवे वाला मिलन की खुशी

में रोवत भेंटत रहे। हम एही दृश्य में अझुराइल रहनी कि देखनी पिताजी बस से उतरत रहनीं। मामा लपक के उहाँ कि हाथे से दूनू बेग ले लिहनिं आ जहँवा हम बयिठल रहनीं ओहीजा बेंच पर ध दिहनीं। तबले पिता जी भीड़ से बहरा निकल अइनीं। मामा जी गोड़ लगनीं आ पिता जी उनका के अँकवार में ले लिहनीं। अब पिताजी के नजर हमपर पड़ल आ मामा के छोड़ के लपक के हमके उठा के एतना जोर से करेजा से लगवनीं कि उहाँ के धड़कन हम महसूस करत रहनीं। अबले मामा जी एक बेग साइकिल की कैरियर पर त दूसरका हैंडिल पर टांग के सायकिल डगरा दिहनीं। पिताजी हमार माथ चूमि के गोदी से उतार दिहनी। आगे आगे मामा आ पीछे हमार हाथ पकड़ले पिता जी चल दिहनीं। बाकिर बस से उतर के कई जनी अपनी बाबूजी आ भाई के गोड़ पकड़ के अबले रोवत रहे लोग। कुच्छु मेहरारू लोग ठाड़ हो के आपन आँसु पोंछत रहे लोग। ओ समय के रोवायिओ में एगो राग रहे, लय रहे। सनेह आ सिकाइत सब ओही रोवाई की साथे व्यक्त क देत रहे लोग।

ळमनी का जइसे दुआरे पहुँचनी, नानी, मामी, अम्मा, मउसी सब लोग दोगहा में चउकठ पकड़ के ठाड़ रहे लोग। पिता जी के देखते मउसी दौड़ के आ के गोड़ लगली। मामाजी सायकिल ठाड़ क के बैग उतारे लगनीं। दोगहा में खटिया पर गद्दा के ऊपर नया चादर बीछवाल रहे। पिता जी नानी के गोड़ लगनीं त नानी उहाँ के हाथ पकड़ के ओही खटिया पर बयिठा दिहनीं। मामी फट दे परात में पानी ले अइनीं। पिता जी के जूता उतारे खातिर मामी हाथ बढ़वनी बाकिर पिता जी मामी के रोकि के आपन जूता मोजा उतरनी। मामी पिताजी के गोड़ परात में धोवे लगनीं। (अबो हमनीके जानी त मामी जी ई कार कारेनीं)। पिता जी के देखिके अम्मा के चेहरा पर उहे लाली पसरल रहे जवन सूरज निकलला के पहिले आकाश में पसरेला।

हम बेग खुलला की ताक में रहनीं। दूनू छोटकी बहिन लोग के पिता जी अपनी गोदी में बइठवले रहनीं। अगिलही दिनसे घर फगुआ सुरु हो गयिल रहे। पिता जी खाए बइठीं त मामी, मउसी पीछे से उहाँ की मुँहे में दही पोति दें। सुत्तल रहीं त ऊहाँ के लाली, टिकुली आ सेंदुर लगा दें। नहा के आईं त रंग फेंकि दें। पिताजी के हेरान कइले रहे लोग। नानी रिसियाँ बाकिर नानीके के माने ! फगुआ में बहनोई चाहें ननदोई भेंटा जाँ त उनके गति त बनही के रहे। दू दिन से पिता जी के ई लोग हेरान कइले रहे। मामा चालाकी से पिता जी की ओर हो जांसु आ ओने आँखि मटकिया दें, मामी मउसी मीलि के पिता जी के रंग दे लोग।

सम्हत जरे वाला दिने सबके बुकुआ लगावल गइल। पिता जी मना क दिहनीं त मामी जी उहाँ कि गोड़ की अँगुठा भर में लगा दिहनीं। देहि से छूटल बुकुआ कागज में ध के मामा के दिया गइल। मामा जी ले जा के सम्हत में डाल दिहनी कि सबके अलाइ बलाइ ओही में जर जाई।

खैर...! सौ सोनार की एक लोहार की। फगुआ के दिन आ गइल। पिताजी कानपुर से सब बेवस्था ले के आइल रहनीं। महकुआ अबीर आ एक्स्ट्रा गुलाबी रंग। राति के बगयिचा में समहत फुंका गइल रहे। अम्मा आ मउसी घर में पुआ पकवान बनावे में मामी जी के मदद करत रहे लोग। दुआर पर ढोलक झांझ मंजीरा बजावत फाग गावत लोग आ गइल रहे। मामा ओ लोग की बेवस्था में लागि गइल रहनीं। पिता जी भी बहरा ओ लोग के बीच चलि गइनीं। हम तीनू बहिन भी घूम–घूम मालपुआ खात रहनी। पिता जी अबीर से रंगा गइल रहनी। एक थरिया पुआ मामा ओह लोग खातिर बहरा ले गइल रहनी। सब लोग गा–बजा के रंग अबीर खेलि के दूसरे की दुआरे की ओर चले लागल त मामा, पिता जी के भी अपनी साथे खींचि के ले गइल लोग। गाँव भर घूमि के लोग लवटि के आइल तबले खाना बना–वना के मामी मउसी पिता जी के साथे फगुआ खेले खातिर तइयार बयिठल रहे लोग। पिताजी अइनीं त चिन्हाते ना रहनीं। छोटकी बहिन उहाँ के देखि के डेरा गइल आ बाँ बाँ क के रोवे लागल। नानी जी ओकरा के गोदी ले के चुप करावे लगनीं।

"ए जी रउरा त पहिलहीं से रंगा गइल बानीं ! अब हमनीं के कहाँ रंग लगायीं जाँ!" मामी कहनीं।

मामा जी कल चलवनीं आ पिताजी मुँह हाथ साबुन से धो के ठाड़ हो गइनी, "लीं सभे, रउरो लोग लगा लीं।"

पिता जी पीढ़ा पर बइठ गइनीं। ई लोग पिता जी के खूब दरकचल लोग। पिता जी ई लोग जवन करत रहे, चुपचाप करे दिहनीं। हाइसुक रंग के ई लोग थक गइली तब पिता जी कहनीं कि" पेट भरि गइल?"

हम ई सब दोगहा में चौकठ पर बइठल देखत रहनी। पिताजी के गति बनवला के बाद ईहे लोग नहाए खातिर पानी भर–भर के दीहल। रंग अबीर के नशा से पिता जी के मूड़ी बत्थे लागल रहे।

आ पिता जी पच्छिम घर में जा के आराम करे लगनीं। ई लोग अपनी जीत पर बड़ा खुश रहे। अँगना में बइठ के खात रहे लोग।

पिता जी पीछे से आ के आम्मा आ मउसी के कमर से नीचे ले लटकत चोटी एक्के में बाँन्ह दिहनीं। मामी दे खनीं बाकिर ए बेर आपन पाला बदल दिहनीं आ चुप रहि गइनीं। जब खा के मउसी उठली त चोटी खिंचा गइल आ अम्मा की साथे मौसिओ चिहा गइली।
घर भर हँसे। मउसी भागें त आम्मा, खींचा आ अम्मा भागें त मउसी। पिता जी रंग घोरी के दूनू लोग के खूब बनवनीं। मामिओ ना बचनीं। मउसी–अम्मा माई माई करे लोग। नानी एक और बइठ के तमाशा देखत रहनीं।

"अब भोगा लोग। तोहा लोगिन कुच्छु कम गति कइलू लोग ! हम का करीं !" ई लोग त लाल भइबे कइल लोग आंगनों लाल हो गइल रहे।

फगुआ बाद पिता जी के बिदाई भइल। लवटत घरी पिताजी लगे एगो छोटका बेग भर रहि गइल रहे। जवना में पिताजी के कपड़ा रहे आ नानी जी से मीलल बिदाई। मामा बेग साइकिल पर लटका के चल दिहनीं। पीछे पिताजी। नानीजी से ले के मामी, मउसी आ अम्मा सबकी आँखि में लोर भरल रहे। पिता जी नानी के गोड़ लागि के बारी बारी से हम तीनू बहिन के मुँह चूमि के दोगहा से निकल गइनीं। आ पीछे मुड़ि के ना तकनीं। जरूर ऊहाँ के आँखि भी लोर से भरल होई। जबले पिता जी देखइनीं तबले सब लोग दोगहा से देखल। पिता जी आँखि से ओझल हो गइनीं त सभे चउकठ छोड़ि के भीतर आ गइल।
"घर सून हो गइल।" कहि के नानी आँसू पोंछे लगनीं। अम्मा पच्छिम घर में चलि गइली। शायद अकेले में रोवे खातिर। मामी काम ले लागि गइनीं आ मउसी आम्मा लगे चलि गइली। दू तीन दिन ले घर में उदासी रहल। कुछ दिन बाद पिता जी के चिट्ठी आ गइल कि हम कानपुर पहुँच गइनीं।

अपनीं होस में हम पिताजी के ऊहे फगुआ दे खनीं। ओकरी बाद पिता जी गाँवें फगुआ खेले खातिर ना जा पवनीं। अम्मा के देहिं के सब रंग ले के अइसन सवारी पर चढ़नीं कि ऊहाँ के लवटि के ना अइनीं। ना आम्मा के देहि पर कबो रंग चढ़ल।
अम्मा के देखि के ईया, बाबाजी के जियते आपन सब रंग उतार दिहली। केहू पतोह जब उनके बार झारि के सेनुर लगावे चले त रोकि दें। उनकी आँखि से झर झर आँसू गीरे लागे। कहें कि "जवान पतोह सून मांगि लिहले बइठल बा आ हम आपन मांगि भरीं!"

हम ईया के कब्बो सेनुर टिकुली लगावत ना देखनीं। जिनगी की भागम भाग में ई कुल बतिया बिसरल रहेला बाकिर जब अकेल बइठेनीं आ ई कुल बतिया मन परि जाला त लोर ना रुकेला। ई तिवहार पिताजी के साथे चलि गइल। अब ना त मामा जी बानीं ना नानी जी आ ना ऊ तीज तिवहार!
कहे खातिर त हम अपनी घर में सब करेनीं, बाकिर एक मन से। एक मन कुहुकल करेला। अपने परिवार आ लइका लोग खातिर सब करहीं के पड़ेला बाकिर हमार मन ऊहे फगुआ बसंत जोहेला। बाकिर अब कहाँ ऊ फगुआ, आ कहाँ ऊ बसंत!

❑❑

❍ कानपुर, उ0 प्र0

गजल

अजय साहनी

रह न जाए मलाल होली में।
आव लेके गुलाल होली में।।

हर सुमन रंग से नहाइल बा,
बा बसंती खयाल होली में।।

तोहरा बिन बहे बहुत आंसू,
जब कहीं पर धमाल होली में।।

कब तलक आस में रही तहरा,
अब इहे बा सवाल होली में।।

सब गिला भूल लोग मिल जाला,
रच द तूहूं मिसाल होली में ।।

❑❑

❍ ग्राम....महुली,
पोस्ट–अगौथर नंदा
जिला.–सारण (बिहार)

कनक किशोर

बसंती दोहा

लहसत खेत बधार बा, मातल महुआ आम।
देखि आगाज बसंत क, मातल मनवा काम।।

धरा बसंती दिख रहल, राग रंग चहुंओर।
शाम सुहानी खूब बा, मनभावन बा भोर।।

हवा बसंती रात दिन, याद दिआवे मीत।
पोर – पोर मातल सखी, नीक ना लागे गीत।।

इयाद करि मन फागुन क, नाचे जइसे मोर।
अंग – अंग खोजे पिया, बिना मचवले सोर।।

हरियर पीत बधार सब, लाल गुलाबी बाग।
प्रेम गीत सुन के बदन, जइसे दहके आग।।

फागुन महके पिया से, चढ़े अंग जब भंग।
का गाईं हम गीत जब, मोर पिया ना संग।।

आपस में जब प्रेम ना, का बसंत का रंग।
मेल भूलि सब कर रहल, बात बात पर जंग।।

भूलि आपसी द्वंद क, गाव प्रेम के गीत।
देखीं किशोर प्रीत पढ़ि,बाँटि रहल बा प्रीत।।

❑❑

❍ राँची (झारखंड)

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

होरी

मंहगी के मार से झराइल बा झोरी
खेलब कइसे होरी, खूख बा तिजोरी ॥

कइसे मनाइब असों तिउहार हो
कंगना क कइसे दियाई उपहार हो
रंग आ अबीर बिन कोहांइल गोरी।
खेलब कइसे होरी, खूख बा तिजोरी ॥

रोटिया प गरहन नाही रोजगार हो
बहुते कठिन बा कइल ब्योपार हो
रोजी रोजगार ला झाँकी कवन खोरी
खेलब कइसे होरी, खूख बा तिजोरी ॥

सपना के सम्पत बबुआ के नोकरी
उघार घर बार आ सिरे चढ़ल टोकरी
बगिया उजार भइल छुछिया कमोरी।
खेलब कइसे होरी, खूख बा तिजोरी ॥

❑❑

❍संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

डॉ नवचंद्र तिवारी

नेह – छोह के होली हो

चंहु – दिसि उमंग के रंग लउके, नेह–छोह के होली हो।
कोयल के रउंवा मात करीं, अइसन होखे बोली हो।

दहन करीं जां दोषन के आ संचित पाप मिटे मन के
पर सेवा,परहित खातिर उपयोग करे मानव तन के
चउखट–चउखट, दुअरा– दुअरा, मन भावे रंगोली हो।

अनुराग के तू बवछार करे थामे हाथे पिचकारी
धियान रहे सभकर कवनो होखे जनि आहत नर–नारी
पुलकित हो जाई गांव–नगर अइसन हंसी–ठिठोली हो।

पिया लवटे परदेस से आ आस न टूटे बिरहन के
दुलहिन के सूतल भागि जगे हवा हिलोरे फागुन के
हे भगवन अंचरा से कबहूं अलग न होखे चोली हो।

गूंजे ढोल – मंजीरा सगरे, हर केहू गावे फगुआ
सभके संगी बना ले 'नवचंद' घर जोरे जइसे अगुआ
छोट – बड़े सबका माथा पर मले नेह के रोली हो।

❑❑

❍ ग्राम –पंडितपुरा, उचेड़ा
बलिया (उ प्र)

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

देखा बसंत फिर आइल बा

डॉ राम बचन यादव

सरसो के फूल फुलाय गइल
अमवों देखा बउराय गइल
पर मंगरू–लोचन कै मुंहवां
हर साल नियर पियराइल बा
देखा बसंत फिर आइल बा।

जब–जब बसंत रितु आवैले
बन – बाग बहार लिआवैले
पर मुनरी चाची के घर में
दुख के चादर फइलाइल बा
देखा बसंत फिर आइल बा।

पतई पूरान सब झरि जाले
नई फुनुगी पेड़ पे उगि जाले
पर जोखना करजा के लुह में
टिकोरा जइसे चिचुकाइल बा
देखा बसंत फिर आइल बा।

जब हवा चलै त उठै महक
कोयलिया गावै चहकि–चहकि
पर कुहुकि रोवे बबिता भउजी
दहेज खातिन खूब पिटाइल बा
देखा बसंत फिर आइल बा।

जौ–गेहूँ–केराव कुलि पाकि गइल
सरकार–सांड़ सब चापि गइल
पर अगिली फसल के चक्कर में
चेहरा होरी के सुखाइल बा
देखा बसंत फिर आइल बा।

मधुमास त सबहीं से रूठल
घर–गांव में अबहीं ना घूसल
पर गांव के छोड़ा फिरोज चचा
जाति–धरम में देस अझुराइल बा
देखा बसंत फिर आइल बा।

❑❑

❍ आदित्य नारायण राजकीय इंटर कालेज
चकिया,चंदौली (उ प्र)

फागुन में सब बौराए

अशोक मिश्र

देख हरिअरी,सोन चिरैया ललचाए
कबो बइठे,कबो उड़ि जाए
साधो! रहि रहि के मेढराए
फागुन में सब बौराए भैया
फागुन में सब बौराए।

उड़ि–उड़ि बइठे बलीयन पर
कबो अलसाए, कबो आंख चोराए
कबो चुमे, कबो चोंच गड़ाए
फागुन में सब बौराए भैया
फागुन में सब बौराए।

नील गगन से झांके दिनकर
गोरिया पल्लू सरकाए
भौंरन के ओढ़नी झार भगाए
फागुन में सब बौराए भैया
फागुन में सब बौराए।

मदमस्त बयार के झोंकन से
सरसों झूम–झूम के
लहराए, फगुआ गाए
फागुन में सब बौराए भैया
फागुन में सब बौराए।

मोजर देखि कोयलिया
डलिअन पर फुदक–फुदक के गाए
कूके आ दिलन में हूक जगाए
फागुन में सब बौराए भैया
फागुन में सब बौराए।

❑❑

चटकल दीयना

बहे पूरवाई जब छावे ला खुमार
अंगना–दुआरे उड़े रंगवा गुलाल
आईल फागुन के बहार।

हाथे पिचकारी सोहे
झोरी भरल गुलाल
आईल फागुन के बहार।

कहवां के हउवे रंग–पिचकारिया
कहवां के चिकन गुलाल
आईल फागुन के बहार।

भोजपुर के रंग–पिचकारिया
बलियां के हउवे गुलाल
आईल फागुन के बहार।
आईल फागुन के बहार।।

❑❑

❍ डीएवी कैमोर
कटनी, म प्र

सुनऽ विरभोरी पिया

राजेन्द्र साह राज

मनवा के दरदिया मोरा, मनवा के दरदिया,
कि भुलाई गइले ना
हमरी मोहिनी सुरतिया हो भुलाई गइल ना।

गवने के देखले बानी, तोहरे सूरतिया,
रहि रहि लगावत रहल, हमरा के छतिया,
काहें बिसरइल पिया,
हमरा के जियते, मुआई गइल ना,
हमरी मोहिनी सूरतिया हो भुलाई गइल ना।

नेहा लगा के होई अइसन दरदिया,
जनतीं त कहिओ ना करतीं पिरितीया,
कहिया जुड़ाई हिया,
हियरा में दियरा जराई गइल ना,
हमरी मोहिनी सुरतिया हो भुलाई गइल ना।।

❍ **जमशेदपुर (झारखंड)**

गीत

लालबहादुर चौरसिया 'लाल'

महकल बा सगरो भवनवाँ,
जबसे फगुनवाँ अइले हो राम।
निक लागे सखि हो सिवनवाँ,
जबसे फगुनवाँ अइले हो राम।।

अचरा में उतरल जइसे भोरवाँ के लाली,
रतिया बुझाले जइसे चँहकल दिवाली,
झरे रस बुनियां गगनवाँ।
जबसे फगुनवाँ.....

मनवा फुलाइल मोरा जइसे फुलगेनवाँ,
पूर होखे लागल सखी मन के सपनवाँ,
बिहँसे ला हमरा परनवाँ।
जबसे फगुनवाँ.....

छनन छनन बोले लागल पांव के पयलिया,
मनवां लुभाला सुनिके पपिहा के बोलिया,
भरि गइलें सुना ई अगनवां।
जबसे फगुनवाँ.....

बड़ा दुख पवलीं सखी पिछले महिनवाँ,
सइयां बिनु सुना रहल मन के अंगनवाँ,
कटि गइले असों गरहनवाँ।
जब से फगुनवां.....

❑❑

❍ आजमगढ़,उ0 प्र0

गीत

केशव मोहन पाण्डेय

महुआ मन महँकावे,
पपीहा गीत सुनावे,
भौंरा रोजो आवे लागल अंगनवा में।
कवन टोना कइलू अपना नयनवा से।।

पुरुवा गावे लाचारी,
चिहुके अमवा के बारी,
बेरा बढ़–बढ़ के बोले,
मन एने–ओने डोले,
सिहरे सगरो सिवनवा शरमवा से।।

अचके बढ़ जाला चाल,
सपना सजेला बेहाल,
सभे करे अब ठिठोली,
कोइलर बोले ले कुबोली,
हियरा हरषे ला जइसे फगुनवा में।।

खाली चाहीं ना सिंगार,
साथे चाहीं संस्कार,
प्रेम पूजा के थाल,
बाकी सब माया–जाल,
लोग कहे चाहें कुछू जहनवा में।।

❑❑

❍ उत्तम नगर, नई दिल्ली

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

गीत

योगेंद्र शर्मा 'योगी'

रंग कवने खेली हम होरी सखी
रंग कवने खेली हम होरी।

रँगवा पिरितिया के भइलन नदारत
सबके सबै देख बाय फुफकारत
गईल सनेहिया हेराई सखी
जब गईल सनेहिया हेराई सखी
रंग कवने खेली हम होरी।

झगड़ा धरम के कहीं जात के बा
रगरा कहीं टाट औ भात के बा
लागल हियरवा में काई सखी
जब लागल हियरवा में काई सखी
रंग कवने खेली हम होरी।

रिस्ता नपाला मोखाला न घऊवा
गरवा लगावै सबै हो देखऊआ
गयल करम अस खाई सखी
जब गयल करम अस खाई सखी
रंग कवने खेली हम होरी।

भऊजी के अपटन कहाँ अब पिसाला
देवरा के देहिया केहर हो मिसाला
सगरों समईया झुराइल सखी
जब सगरों समईया झुराइल सखी
रंग कवने खेली हम होरी।

नफरत के होलिका जरावै न कोई
छतिया से कांटा हटावै न कोई
भाव ता अईसन बेहाई सखी
जब भाव ता अईसन बेहाई सखी।
रंग कवने खेली हम होरी।

सिहकै तिहुआरी दुआरी पे आई के
जोह ता मनई पुरनका नदाय के
''योगी'' नयन डबडबाई सखी
जब ''योगी'' नयन डबडबाई सखी
रंग कवने खेली हम होरी।।

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

बाबा अड़भंग

धीरेन्द्र पांचाल

हउवे अड़भंग पिये गांजा अउरी भंग
अंग भभूत रमावेला ।
करिले गोहारि छोड़ी हिम के पहाड़ी
उ त भागि चलि आवेला ।
राखे भाल पे उ काल हवे रूप बिकराल
राखे जटवा में अपना गंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।

हवे बड़ी मजबूत ओके दिल अनकूत
जउ मांगी पहुँचावेला ।
करे हमरो उद्धार उ त आवे हर बार
प्यार बहुते लुटावेला ।
हवे गोड़वा उघार गरे सांप फुफकार
बाटे देहियां बनउले बदरंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।

नाही कवनो कमाई सुने सबकर दोहाई
कइसे घरवा चलावेला ।
रहे मड़ई लगाके सुते भुइयां बिछाके
खाई भंगिया बितावेला ।
कहें भूतवा पिशाच गुरु नाच नाच नाच
नाचा बाबा होइ मस्त मलंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।

तू ही बाबा महाकाल तोसे पूछे पांचाल
कइसे भगिया संवारेला ।
हे करुणानिधान हाई तोहरो बिधान
हम्मे समझ न आवेला ।
एगो बतिया बिशेष तोसे पुछि हम शेष
कवन भंगिया में पावेला उमंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।
भंग अड़भंग अड़भंग अड़भंग ।

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

बसन्त बयार

कैलाश नाथ शर्मा, 'गाजीपुरी'

मन हरियर हो जाता , पियर तोरी देख के ।
पियरी में गोरी देख के ना ।।
मन हरियर हो ,,,,,,,,,,,

चना , मटर , गदराइल , महुआ चुये रसबोर ।
निमन आम मोजराईल , कोयल गावे चहुँओर ।।
मोर नाचता , बसन्त नियरे देख के ।
पियरी में गोरी,,,,,,,,,,,,

तीसी कहे मन के बात , सरसो जनि करा घात ।
सनई सने रही जइहैं , पटुआ के न पुछा बात ।।
मन विहंसता , रहर के कोढ़ी देख के ।
पियरी में गोरी ,,,,

ओस परे पुर जोर , बधार सगरो कचनार ।
बदरा करता नखरा , बहे बसन्त बयार ।।
मन अघाईल , सरसो , बथुआ जोड़ी देख के ।
पियरी में गोरी,,,,,,,,,,,

होरहा खाये के मन , जियरा करे हुदुर बुदूर ।
केतारी , केराय , बुट , निमोना ताके टुकुर टुकुर ।।
जीव ललचेला , मरीचा , सेम के चहुं ओरी देख के ।
पियरी में गोरी,,,,,,,,,

घटा घेरे चहुँओर , बदरा शोर मचाये ।
लोगवा भागे चारी ओर , रही रही मेघ डराये ।।
हाड़ काँपेला , शीतलहरी देख के ।
पियरी में गोरी,,,,,,,,,,,
मन हरियर हो,,,,,,,,,,,,

❑❑

❍ तुलसी भवन,
जमशेदपुर,
झारखण्ड

गीत

लाल बिहारी लाल

1..
देवरा होली में गइल पगलाई
लगावे रंग अंग–अंग में
बात देलक उ सगरो फईलाई
लगावे रंग अंग–अंग में.....

कहेला सुन भउजी,हमके लगावे द
होठवा से रंग तनी होठ पे लगावे द
अइसे में जाला)२ देहिया मोर सिहराई
लगावे रंग अंग–अंग में.....

हम हई अबोध राजा ,कुछ ना बुझाला
देवरा के देख–देख, मोर मन घबराला
कइसे बात ई)२ हम सबसे बताई
लगावे रंग अंग–अंग में.....

मल–मल गुलाल डाले ,डालेला खूब रंग हो
हमरो त लागल रंग लाल बिहारी के संग हो
कइसे बतिया ई)२ हम सबसे छुपाई

❑❑

2–
नवरातन में मईया घरे आई,
जुड़ाई जीया सेवक के
कबसे अरजी हम दर पे लगाई
जुड़ाई जीया सेवक के

रउये कीरपा से माई ,देखेला आन्हरा
रइये कीरपा से माई, बेलेला बहरा
मईया के महिमा)2 महान हो केतना हम बताई
जुड़ाई जीया सेवक /भक्तन के....

हम हई अबोध माई ,कुछो ना बुझाला
सबका से महिमा राउर जग में बा आला
शेर पर सवार)2 होके माई घरे हमरा आई
जुड़ाई जीया सेवक /भक्तन के....

पापी के नाश करी, दुखियों के करिले कल्याण
लाल बिहारी लाल पर मईया दीही रउआ ध्यान
सारी दुनिया करे)2 शेरावाली के पूजाई
जुड़ाई जीया सेवक /भक्तन के.... ❑❑

❍ बदरपुर, नई दिल्ली

हहरत हियरा के हिरना लोभाइल

डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

आइल बसंत बगिया कुहुके कोइलिया
नेहिया निभावे आवे पिया लेइ डोलिया।

अँचरा पिरितिया के गठरी बन्हाइल
मटर के छीमी जइसन नेह गदराइल।
बिहँसेले तीसी खेतवा खाड़ सरसउँवा
चुए लागले असरा के मोती जस महुआ।।
मातले भँवरवा बनले सोहबलिया
नेहिया निभावे आवे पिया लेइ डोलिया....

सहकल सरेहिया बहेले पुरुवाई
सपना जिनिगिया के लेला अँगड़ाई।
उदसले मनवा चयनवा हेराइल
तोहरी फिकिरिया में देहिया झुराइल।।
उचरे ना काग बनले हरबोलिया।
नेहिया निभावे..... .....

आँखि मारे रहिया में सहकल बटोहिया
छने– छने इयाद आवे तोहरी सनेहिया।
कने – कने धरती के बाटे अगराइल
हहरत हियरा के हिरना लोभाइल।।
सखिया सहेली हँसि करेली ठिठोलिया।
नेहिया.....

मदन सतावे रतिया आवे नाहीं निदिया
खनके कंगनवा ना चमकेले बिंदिया।
बिरहा के आगि फाग तन – मन लगावे
सूनी सेजरिया सवरियाँ ना भावे।।
चहके चकोर मोर बोलेला टिबोलिया।
नेहिया निभावे..... .

सूरुज किरिनिया से मंगिया बहोरे
धानी रे चुनरिया से ओसवा बटोरे।
रहरी सुनहरी गढ़ावेले गहनवा
पिहिके पपिहरा जस पिया बिन परनवा।।
झनकल झाल बोलावे आवे होलिया ।
नेहिया निभावे आवे पिया लेइ डोलिया।

❑❑

❍ बेतिया, बिहार।

डॉ राजेश कुमार 'माँझी'

भारतीय किसान

खेत खलिहनवा में खटे किसनवा,
जेठ दुपहरिया में जरावे तनवा
सत्ता–आसीन जेकर रखे ना ध्यान,
भारत में आज मजबूर बा किसान.

चिड़इन से पहिले उठ जाला भोरे
कान्हा पे कुदाल लेके खेते जाला कोरे
बरखा में भींगी भींगी रोपेला धान
भारत में आज .....

अंबर से पानी जब समय से ना बरसे
कुहुके किसान मन बहुते ही तरसे
चिंता से भइल ओकर निंदिया जियान
भारत में आज .....

कर्जा चढ़ल माथे सूझे ना कवनो बात
सुबके सिसके रोवे किसान दिन–रात
भूखे पेट भइल ओकर देहिया बेजान
भारत में आज .....

गरीबी किसान के बहुते रोआवत बा
सूझे ना रास्ता त जान ऊ गंवावत बा
होई कहिया ओकरा जीवन में बिहान
भारत में आज .....

❑❑

❍ प्रभारी–प्रशासनिक
अनुभाग एवं हिंदी अधिकारी
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
नई दिल्ली

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

गीत

चेतन कश्यप

1

होली कइसन बिदेस में
होली कइसे बिदेस में
अरे मन अँकुसल देस में

ऊ टोली मोहल्ला के
रे ऊ हल्ला गुल्ला के
न मजा भूलल बिदेस में

मनवा सुखल मुरझा गइल
पूआ बड़ा सपना भइल
खाना खा तानि मेस में

2

फागुन चढ़े द
निरगुन पढ़े द
मन के करे द

दुख बा, हँसे द
भितरे भरे द

फूले फले द
मनवा फरे द

हरि के हेरे
हरि के हरे द

तहरा बा का
उनका डरे द

जिनकर बा मन
उनका चरे द

फागुन–रंगल–
रमले धरे द

3

बीतें जल्दी दिनवा हे रामा
कि लागे नाहि मनवा

देस–बिदेस के छूटल ठिकनवा
का होइ काहे बिचलित परनवा
रामे भरोसे, रामे सहारे
सब जिए के समनवा
सब जिए के समनवा हे रामा
बीते जल्दी दिनवा

रोग–बियोग से बचें सब कइसे
बँध–बँध के कुछो रचें अब कइसे
रामे कराए, रामे बचाए
सबे राते दिनवा हे रामा
कि लागे नाहि मनवा

भोर भए जेहि टूटल सपनवा
साँझ परत सेहि खोजे उ मनवा
रामे दिखाए, रामे पुराए
का सोचे के करनवा हे रामा
का सोचे के करनवा

पंछी डोलें, बोले कोयलिया
सूना परल सब सहर के गलियाँ
रामे भराए, खाली कराए
फिर भरे रे अँगनवा हे रामा
भरे रे अँगनवा

❑❑

❍ राँची, झारखंड

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

धुनाइल बसंत आ पिटाइल फागुन

विवेक त्रिपाठी

''हनुमत लेइके अबीर घूमअ ताड़े अवध नगरिया... '' फागुन चा बिहाने–बिहाने भांटी क दतुवन चबात आ होरी गुनगुनावत पूरा गाँवे क एक चक्कर मार दें। वइसे त चाचा क नाव दहारी भगत रहे, ले. किन उनके मुँहे से एतना बार लोग होरी–फगुआ सुनले रहे की नावे 'फागुन' धरा गइल। बुढ़–पूरनिया 'फगुनवा' कही के बोलावे आ हमनी के 'फागुन चा'। हर साल माघ महीना के उतरते फागुन चा क खोजाहट दुआरे–दुआरे शुरू हो जा। आ जइसे काका बिलंबित रूपक ताल में फगुआ शुरू करें– ''गोरिया कइके सिंगार अंगना में पीसेली हरदिया...ती ती ना, ध ीना धीना'' ओकरे बाद त लरिका–सवांग जे भी रहे, सभे ढोलक आ झालि के साथे–साथे जाँघे प थपरी पीटल शुरू क दे। माहौल अइसन बने की कुबेर होइयो जा, त केहू जगहि छोड़ले क नावे ना ले, भल. हीं नादे प गाई–गोरु केतनों डेंकरत–चिल्लात होखें। सुर, लय, ताल, छंद, भाव अउर ओह भाव के कुल्ह मर्म उनकरे रोवाँ–रोवाँ से फूट पड़े। अइसन लागे की सरसती माई अपना गोदी में बइठा के दुलारत–गवावत बाड़ी, कंठ एतना मधुर आ सुरीला की का कहल जाओ! परम आनंद।

गांवे–गांवे रामायण–कीर्तन गा के चाचा के रोजी–रोटी क जोगाड़ हो जा। एकदम सुघर–सामान्य जीवन, जौना में कौनो प्रकार क दिक्कत–परेशानी ना होखे, ओइसन। उनकरे परिवार में जमा–पूजी बस तीन जने, एगो लरिका रमाकांत, मेहरारू मुनेसरी 'भक्तिन' अउर 'इ' दहारी भगत। चाचा के लरिका आ गोरु से बड़ा प्यार–दुलार रहे। जहवाँ होरी गावे जाँ तहवाँ रमाकांत के संघे लिया जाँ, लेकिन ओहसे पि. हले गईया नादे लगा के, हरिहर आ लेहना क बेवस्था क के जाँ। कौनो 'पद' में जइसे 'कन्हैया जी' क नाव आवे त लरिका क हाथ जोरवा दें – ''सदा आनंद रहे एही द्वारे मोहन खेलें होली हो..''। ''इहे कुल्ह संस्कार हमनीयो के मिलल बा'' गाँव–जवार में जेतना राम–कृष्ण खातिर श्रद्धा–भाव आ संस्कार फागुन चा लोग–लरिकन में बोवलें, सायदे केहू बोवले–देहले आ सुनवले होइ।

गाँव के मुखिया ठाकुर नरपत सिंह फागुन चा प आपन छोट भाई–संघाती नियन खूब प्यार अउर स्नेह लुटावें, फागुन चा के जीवन–संगीत–साधना में भरपूर सहयोग अउर सम्मान दें। ''संगीत आ संस्कार के एक्के जाति होला, उ ह प्रेम अउर आनंद'' एही ध ारना के साथ ठाकुर साहब जाति–पाति भेदभाव आदि से ऊपर उठके लोक रस आ सांस्कृतिक धरोहर के जाने–माने अउर समझे। इहे बात कुछ लोगन के रास न आवे। फागुन चा, फगुआ गावल ओही ठाकुर साहब के दुआर से सुरु करें आ चइता गा के खतम भी– ''सूतल सइयाँ के जगावे हो रामा! कोयल बड़ी पापिन.. ''। ठाकुर साहब भी हींक भर सुर में सुर मिलावें आ चाचा क हौसला बढ़ावें। कौनो भी संगीत, प्यारे–दुलार से कंठ में फूटेला आ साथे आपन–आन्ह क विस्वास ले के बाहर निकलते हिया में समा जाला।

चाचा के आँखी क अंजोरिया 'रमाकांत' बड़ भइल, कमाए–खाये लायक, त चाचा ओकर बियाह कइनअ। पतोहि अंगना में उतरल। चाचा बेटी नियन माने। कुछ दिन बाद फागुन चा के बाबा कहे वाला भी आ गइल। जिनगी के रफ्तार कबो–कबो समझेवाला के मात दे देला। परिवार के साथे–साथ घर के जिम्मेदारी तेजी से बढ़ल की सभे अफना गइल। बेटा रमाकांत अबले त सांस्कृतिक बिरासत से ही जियत खात रहनअ, लेकिन जब लरिका ले पढ़ाई–लिखाई क सवाल मन में ऊपराइल त सब छोड़–छाड़ के, मेहरारू लरिका के साथे बम्बई चल दिहनअ। नवहा के निर्णय कबो–कबो पुरनिया हाड़े कँपा देला। फागुन चा के कुछे दिन में अपने पोता से अनघा लगाव हो गइल रहे। एह बेरी बसंत अइले से पहिले ध ुनाईल, एने लरिका–पोता के दूर भइला से चाचा क करेजा भीतरे–भीतर कसमसा गइल, आ ओन्ने ''बसंती बयार बहल सरसो फूला गइल''। परिणाम इ भइल कि एतना साल में पहिली बार फागुन चा के सुर लड़खड़ाए लागल, होरी के पद भुला जा, झाल कब बेताल हो जा, पते ना चले। चेला–चपाटी थोड़ा बहुत एने–ओन्ने गा के कइसो, फगुआ बितवलस। फागुन चा क तवियत एही फगुआ के बाद से धीरे–धीरे गड़बड़ाए लागल। चाचा के घरे बइठले से घर खर्च चलवाल मुश्किल हो गइल त भक्तिन चाची सम्हारे खातिर, घूम–घूम के शिवचर्चा गावल शुरू कइली – ''भव जल नदिया बहेला आगम धरवा, नाहीअ बारन बाट हो.. ''। भक्तिन चाची उहे शक्तिस्वरूपा हई जौना के भगवान शंकर कहले कि – '' शिव नाव से शक्ति यानि 'इ' क मात्रा हटते शिव – शव बन जइहें... शक्ति स्वरूपा सती हमार अर्धांगिनी हई''। कहले क मतलब इ बा कि जइसे माता पार्वती हर रूप रंग आ स्थिति में औघड़दानी के साथ निभवली, ओही आधार प भक्तिन चाची 'फागुन चा' के साथ

निभईह, चाहे जौन करेके पड़े। ''इहे त प्रेम ह''।
फागुन चा क जिनगी बिन पेनी के लोटा खानी लोटात–घिसरात चले लागल। लरिका क फोन कबो–कबो मुखिया जी के घरे आवे, त हाल चाल मिल जा। फागुन चा कब्बो एह बाति क एहसास ना होखे दें कि ''घर–खर्चवो चलावल मुश्किल बा'' उल्टा पूछी दें की – ''बाबू तोहके कौनो दिक्कत त नइखे, कौनो दिक्कत होइ त बतइहअ रूपया–पइसा के बेवस्था हो जाइ।'' हाए रे! कठिन करेजा, बम्बई में रहे वाला पढ़ल–लिखल लइका ले अपने बाप क स्थिति, रत्ती भर भांफ न पावे। ''एह से बड़ बात क होइ''।
हार–पाछी के फागुन चा ठाकुर साहब से खेत, बटईया प ले के ओहमे सब्जी क केनवाई कइले रहनअ। जौना बात से ठाकुर साहब के पट्टीदार लोग मुँह फुलवले रहे, रोज सांझी क पारस ठाकुर आपन गोरू चाचा के खेत में हाँक दें आ कुल्ह केनवाई नुक्सान करा दें। फागुन चा, बेचारे! सीधा–साधा आदमी मन मारिके चुपचाप नया केनवाई करें, लेकिन ''परिवार में एगो केहू सहेला केहू कहेला'', एह हरकत से एक दिन परेशान होके भक्तिन चाची पारस ठाकुर से बाजि गइली, चाचा छोड़ावे गइनअ की धाका–मुक्की में बाँहि झटका गइल, चाचा सीधा खूंटा प गिरनअ आ करिहाइ में अइसन गंभीर घाव लागल की कई दिन नूरानी तेल मलाईल तब जाके कुछ राहत भइल। पता चलते नरपत ठाकुर खासे पट्टीदारे के मारे पड़ी गइनअ। एह बात के ले के बहुत कुछ उल्टा सीधा विवाद ठाकुर साहब के परिवार आ रिश्तेदारी में उठल, लेकिन ठाकुर साहब फागुन चा के साथे हर परिस्थिति में डटल रहें।
कुछ दिन बाद ठाकुरो साहब क तवियत खराब भइल, तुरन्ते जिला अस्पताल में भर्ती करावल लोग। जउले अस्पताल में रहलअ तउले कुछ ना भइल, लेकिन कहल जाला न कि ''काल केहू खातिर नाहि बइठे ला'', अचानक से एक दिन दिल के दौरा पड़ल, लगातार अटैक आइल की परान निकलिए गइल। इ दूसरा बार रहे जब बसंत फेरु जोर से धुनाइल। तवियत के चलते फागुन चा अंतिम समय में आपन सबसे करीब साथी–संघाती के, ठीक से बिदा तक ना कइ पवलें। बेचारे! मने मन तड़फड़ा के रहि गइनअ। कई दिन ले कोउनो गुनगुनाहट उनके गल्ली में ना सुनाइल। ना ही कहीं लउकें केहू के, चुप–चाप घर में पड़ल रहें, बिछौना प। घंटों सोचत रहें, पता नाहीं का कुछ दिन बादे, फिन फगुनहटी बयार उठल, चारो ओर हल्ला, शोर–शराबा मचल। फगुआ के कुछ दिन पहिल. हीं से मठियाँ मंदिरे प चाचा क चेला–संघाती होरी गावल शुरू क दें। फागुन चा बुढ़–पुरनिया–सवांग खातिर मंडली में शामिल हो जाँ। थपरी पीट–पीट के साथ देहले क कोशिश करें, लेकिन बेमन से। फगुआ के दिने जब मंडली ठाकुर साहब के दुआरे पहुँचल, आ जब आपन वाली गा के सभे उठल त सबके उठते एगो गीत फागुन चा के कंठ से ठाकुर साहब के याद में फूट परल – ''चललें बनवा के ओर अवध से राम रघुरइया... एतना कसाई कइसे बनी गइलू माई... कइसे के तेजब हम राम जइसन भाई..''। आवाज एही जु मद्धिम हो गइल, फिन एकदम से बंद। फेरु चेला–चपाटी कुल्ह अंतरा जल्दी–जल्दी आधा–अधूरा पूरा क के आ झाली ताल से एहर–ओहर पीट के कउनो तरह से फगुआ ओरवउलें।
समय क पहिया जइसे–तइसे फिर घूमल, कुछ दिन कटल राम भरोसे। फागुन चा के आपन उम्र अउर तवियत क अंदाजा लग गइल रहे, आँखी में मोतियाबिंद भइल रहे आ देहीं में अब पहिले नियन ताकत ना बचल रहे, गाई–गोरू बेंच के गोड्डा प बइठ के बस राम–नाम लेत रहनअ। जिनगी के अंतिम समय में आदमी क इच्छा आ व्यवहार छोट लरिका खानी हो जाला, बाति–बाति प मुँह लटकावल, जिद्दीयाइल–खिसियाइल, इ सब आम लच्छन हो जाला। रमाकांतो कुल्ह परिवार बम्बईए में छोड़ के, बाबूजी से बिना मिलले बाहरे–बाहर बंका (विदेश) चल देले रहनअ। कहल जाला न की– ''बापे क जिउआ गाई अइसन आ पूता क जिउआ कसाई अइसन...''
फागुन चा क जीवन पहिले जेतना सीधा–सरल–आसान रहे, अब ओतने कठिन आ मुश्किल हो गइल, समय एतना उम्मीद तुरले रहे की अब एक–आध गो ही बचल रहे – '' लरिकवा कब आई? गईया फेरु राखि लीं का?.. मन नइखे लागत.. वगेरा–वगेरा'' एह बेरी बसंता अलसात–अलसात आइल तब्बो धुनाइल। आखिर एक बार फेरु से 'फगुआ' नहवा–सवांग लिहले पहुँच गइल फागुन चा से मिले। जेंगा, भाषा 'सरलीकरण प्रक्रिया' के नाव पर आपन सुघराई, आपन संस्कार धीरे–धीरे खो देले, फागुन चाचा के सीखावल फगुआ, होरी, चइता, ठुमरी आदि लोकगीत आ ओहके प्रस्तुत कइला क अंदाज नवहा–जन के आगे हेरा गइल। कुम्हीलाइल मन से चाचा कुछ सोच के मंडली में फेरु शामिल भईनअ, ए उम्मीद आ इच्छा से की – ''एह बेरी खूब निम्मन से होली मनी, खूब निम्मन–निम्मन फगुआ गाइब, कबले एहिंगा रहल जाई? जवन हमके मिलल बा उ सब नवहा लोगन के भी त पता चले!.. सुनें आ सीखे कुल्ह''। मंडली सजल

आ चाचा चोनरात–गुनगुनात पहुँचलें। जोगीरा शुरू भइल। फागुन चाचा सोचते रहनअ की–''कुछ पद बोली'' तउले कुछ नवहा आपन सुर छेड़ देहलें, एतना फूहड़–पातर गीत रहे की चाचा सुनिके अवाके रहि गइनअ। खिसियाके झाली–ओली फेक के मने मन गरियावत घरे चल देहनअ। लेकिन मंडली के एह बात से कोउनो फरक ना पड़ल। चाचा क खास चेला–चपाटी लोग, जेसे परंपरा आगे बढ़वले क उम्मीद रहे, सब भांगि आ दारू पी के ओही में लोटात–कोहनात रहे। उहे फूहड़कम दोहरावत–कढ़ावत रहे। बस इहे चाचा क आखिरी बार रहे। फागुन चा के सोझा होरी, चइता, फागुन आ बसंत सब के सब धुनाए–पिटाए लागल। एह पीड़ा के झेलत खुद के सम्हारत, कसमसात घरे पहुँचनअ। हाए रे बसंत! हाए रे फागुन! टेरत–टेरत एकदम्मे चुपा गइनअ। कई दिन ले भक्तिन चाची उनकर सेवा कइली, गीत सुनवली – '' बीतल इ समईया शिवगुरु थकल इ शारीरिया हो, शिवगुरु नाहीं कइलीं राउर भजनिया, तनवा इ समसनवा जईहें हो.. ''। आ एक दिन इहो सुना गइल...। फेरु बसंत धुनाइल आ फागुन पिटा गइल।

❑❑

माटसाहेब

डॉ रजनी रंजन

माट साहेब के आवे से पहिले लइका सब इस्कूल गेट पर भीड़ लगा देत रहलन। माट साहेब आवते हाथ में बाल्टी उठा लेस।उनका पीछे सब बच्चा सब सफाई में लाग जात रहले। तनिके देर में इस्कूल के काया कलप हो जात रहे। फेर सब लइकन के सथहीं बइठा के ककहरा, पहाड़ा, कविता आ खेल सब करवावस।लइकन के साथहीं खाना खाये बइठस। छुट्टी होते अपना फटफटिया पर छुटल छाटल लइकन के साथे भी ले जास।

ई माट साहेब के गाँव के कुछ लइका,जवन कि ओही इस्कूल से पढ़ के कॉलेज पढत रहलन, झाड़ू मार मास्टर कहिके रोजे हँसैं। ऊ इस्कुल में पढेवालन बचवन के भी चिढावें। कभी कभी तो कवनो लइका अपना बाबूजी के इहो कहते देकर गइल कि हम उहां ना पढब ना त झाड़ू मार विद्यार्थी भइया लोग कही। बचवन के मानसिक तनाव के माट साहेब के कथा कहानी गतिविधि ई कुल कब बिसरा देत रहे कि बिगड़ल बबुआ लोग कुछ खास कभो बिगाड़ ना पवले।

एक दिन जिला प्रशासन से बोलाहट भइल। समाज में खुसुर फुसुर शुरू हो गइल। सभे माटसाहेब के चरित्तर में खोंट गिनावे शुरु कर देहलन। कभो रट्टा त कबो झाड़ू के कहानी त कबो लइकन के संगे जीमला खातिर।

एकबार सचिव, शिक्षा विभाग के दौरा अचानक एक इस्कूल में हो गइल। माट साहेब शिक्षा सचिव के त ना चिन्हलन बाकिर हाथ जोड़ के परनाम करत आवे के कारण पूछनी।उहां के कहनी–ना, हम कबो इहें बगल वाला गली में रहत रहीं आ पढत रहीं। आज गुजरत रहीं त कदम खुदे रुक गइल। माट्साब बीचे में बात काट देहनी–''शंकर....!एगो कुर्सी ले आव।बइठीं आ चाहे घूमीं रउरे इस्कुल आजुओ बा,''कहते काम पर लग गइलन।उहे दिनचर्या फेर शुरू।बीच–बीच में अतिथि के सत्कार भी धेयान में रहल। अतिथि माटसाहेब के जीवट मन देख के खुश हो गइलन।खाये घड़ी आज अतिथियो के साथे खात उ अतिथि चकरा गइलन जब माटसाहेब के छोट लइकन सभ के साथ से खियावत देखलन। उनकर मन खुश हो गइल। जाये घड़ी कहनी कि हम भले रउरा कहला से रूक गइनी, बड़ी अच्छा लागल ह इहां।आज इ सनेह आ खेयाल के साथे लइकन के ज्ञान बाँटल देख के हम बहुत खुश बानी।

कुछ दिन बाद राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के घोषणा भइल। ढेर नाम में माटसाहेब के भी नाम रहे।उनकरा क्षेत्र में ई घोषणा माटसाहेब के कोसे खातिर बड़का बम बन के आइल रहे। माटसाहेब खातिर ई एगो संशय आ भय के काल रहे।

दिल्ली जाये घड़ी जब राजधानी ट्रेन पर चढ़े खातिर गइलन तो उहे अतिथि स्टेशन पर खड़ा रहनी।माटसाहेब देखते हाथ जोड़ले अतिथि के लगे पहुँच गइलन। वाह का संयोग बा! सपनवो में ना सोचले रहीं कि रउरा से एतना जल्दी मुलाकात होई। का हाल बा? इहाँ कइसे?

रउरे के दिल्ली भेजे के बा।उनका कहते– आयऽऽ? रउरा कइसे पता कि हमरा दिल्ली जाये के बा। अतिथि मुस्कुरा देहनी। बीचे में एगो आफिसर कहे लगलन–ए माटसाहेब चिन्हत नइखीं का? एतना बात हो गइल आ इहां के के हईं,ई रउरा जानते नइखीं ! आश्चर्ज होता।

इहां के शिक्षा सचिव बानी। हेंऽऽ? तनी लजात आ तनी भरम से फेर माटसाहेब अतिथि के तरफ देखत हाथ जोड़ देहलन।

अतिथि मुस्कुरात टरेन पर चढ़े खातिर इशारा कइलन।

माटसाहेब अतिथि के प्रति आभार आ सनेह बरसावत टरेन पर चढ़ गइलन। आज उनका आपन दैनन्दिन पर भरपूर तोष के अनुभव भइल। ❑❑

❍ घाटशिला, झारखंड

नेपाली आजी के दुख !

शालिनी कपूर

चइत क घाम में साईकिल चलावत शिखा स्कूल से घरे चहुँपल त, पियास क मारे मुँह झुरा गइल रहे। तेज हवा रहे त बाकिर लूह लेखा गरम ना रहे, लेकिन हवा के बिपरीत साईकिल खिंचल एतना आसान न होखे। साईकिल दुआरी पर ठाड़ा करके जल्दी से घर मे घुसल त दुगो नया परानी के देख ठिठक गईल।

तनी देर गौर से देखला क बाद ओकरा जोर के झटका लागल अरे बाप रे, ई त 'नेपाली आजी' हई। बाकिर ई सँगवा एगो मुस्टंडा बा, ई के ह? नेपाली आजी से कबो बहुत नेह–छोह क रिस्ता ना रहे, बाकिर ऊ बाबा क साथे जवन कईली ओकरा बाद त देखेहूँ खातिर ऊ गोड़ ना छुवलस। बड़की बहिन एकगरी ले जा के बतवली कि ईहे साधु बाबा हवन जिनका साथे आजी घ ार–दुआर छोड़ के तीरथ प चल गइल रहली। एतना सुनते शिखवा क भूख–पियास उड़ गईल आ बे कुछ सोचले–समझले बहरा निकल गइलस।

दिमाग में सनसनाहट रहे कि बाबा के छोड़ के चल गईल रहली त अब काहें खातिर आइल बाड़ी। महीना भर से बेसी खटिया पर पड़ल बाबा क कपार में पिलुआ पड़ गईल रहलन स। शिखवा जब गाँवे जाए त चाचा के संगे–संगे उनुकर दवाई आ मलहम–पट्टी करे में मदत करे। एकदम रिष्ट–पुष्ट बाबा बुढापा में हीन हो गईलन। जवन बाबा क कान्हीं प शिखवा आ ओकर भाई रामलीला देखे जा सन,ओहि बाबा क ई दुर्दसा?

आहि रे! बिधाता कवन दिन देखावे लन। ईहे बाबा रहलन कि अपना जवानी में साँड़ के पट खनी दे देस। लाठी ले अपना सफाचट मूड़ पर गमछा क फेटा बान्ह के निकलस त बड़–बड़ बदमास डहरी छोड़ लुका जाए लो। अपना घर क त छोड़ द, उनुके चीन्हे वाली बेटी–पतोह भी आँचर कपार पर ओढ़ के एक ओरी हो जाये लो। घर के मवेसी चरावल, बगईचा अगोरल, लड़कन–बचवन के सबेरे इस्कूल चहुँपावल, दुपहरिया में टिफिन ले गईलय ई कुल्हि काम बाबा क जिम्मे रहे।

नेपाली बाबा शिखवा के आपन बाबा ने रहलन। उ छोटे उमर में कहीं से भुलाईल–भटकल आ गईल रहलन आ ओकरे घरे रह गईलन। नेपाल के कवनो गाँव से रहलन बाकी उनुकर बाबा से दोस्ती हो गइल आ उ एहि घर के हो के रह गईलन।

शिखवा के आपन नेपाली बाबा से बेसी मोह रहे, एहीसे अब जब आजी लवट के आवल ह त ओकरा बर्दास्त ना होत रहल ह। काहें गईली आजी बाबा के छोड़ के। ओकरा खूब इयाद बा कि जब तब ई किस्सा सुने मिल जाये कि नेपाली बाबा क बियाह खातिर आजी सोनपुर क मेला से खरीद के आइल रहली। आ सबका मन मे ई बात रहे कि अइसन मेहरारू कबो केहू खातिर ईमानदार ना होखे ली सन। छोटे उमर में बियाह क बाद आखिर अइसन का हो गईल कि आजी सन्यासी बने घर छोड़ निकल गईली।

ज गो मुँह, त गो बात। सुन–सुन के आजी खातिर मन मे अउरी घृणा हो गइल रहे शिखवा के। तनी देर बाद जब खीस पर भूख भारी पड़ल त ऊ घ ारे लवट गईल। बड़की बहिन रोटी, तरकारी, भात दाल आ अचार क साथे दुनों बेकत के खाना परोस देहली। शिखा चुपचाप एक ओर बईठल कुल तमासा देखत बिया। खाना खइला के बाद ओहि जगह चटाई पर साधु बाबा ओठंग भइलन आ आजी उनुकर गोड़ दबावे लगली। गोड़ दबावत आजी क हाथ तनी धीरे भईल त साधू बाबा आजी के गोड़वे से ठुनकिया देस– '' जोर से दबाव''। जब ईहे करेके रहल ह त बाबा क साथे रहला में का दिक्कत रहल ह! शिखा क दिमाग मे एक–एक गो बात फिलिम जईसन घूमल जाता।

तीन दशक बाद शिखा के ना जाने काहें आजी इयाद पड़ गईली ह। आज बुझाता कि बाबा आजी के कबो आपन पत्नी ना स्वीकार कइलन। बाँझ क ताना अउरी बाबा क बेरुखी आजी के चिड़चिड़ा कर देले रहे। बाबा खातिर पूरा दुनिया रहे लेकिन आजी खातिर उनुकर दुनिया खाली बाबा रहलन। तब ना समझ मे आवे कि उपेक्षा केहू के एतना तोड़ देवे ला कि ऊ आपन जीवन क उत्तरार्ध में केहू के देखावल सब्जबाग में फंस जाला।

आज आजी क दुख, शिखा के समझ मे आवता, लेकिन ओह समाज के कब समझ मे आई जे आजी के तकलीफ देवे क ओतने जिम्मेदार बा जेतना बाबा रहलन।

❍ सुपरटेक केपटाउन सोसायटी /टावर सीएस – 3 /फ्लैट संख्या 806 /सेक्टर –74 नोएडा (उ.प्र.)

फगुआ कइसन?

रामसागर सिंह ''सागर''

नौकरी से रिटायर भइला के बाद गाँव जाये के खुशी कइसन होला, इ वंशीधर बाबू के चमकत चेहरा पर साफ साफ झलकता रहे! उहो जब गाँव में अब हमेशा खातिर बसे के इरादा बन गइल होखे, तब इ खुशी कई गुना बढ़ जाला! वंशीधर बाबू के जब से नौकरी लागल तब से उ बरिस में एक दु बार गाँव के चक्कर जरुर लगा लेस, बाकिर जब से लरिकन के पढाई मैट्रिक के उपर बढ़ल तब से उ तीन चार साल बाद ही गाँव के दरसन कर पावस, उहो कवनो शादी बिआह के अवसर पर ही! तीज त्योहार त गांव में मनवले केतने बरिस गुजर गइल रहे! लेकिन उ अब बहुत खुश रहले कि गाँव गइला के बाद पहिला त्योहार फगुआ आवे वाला रहे!

आखिर उ दिन आ गइल! वंशीधर बाबू जब आपना मलकिनी के संगे गाँव पहुँचले त पटी पटीदार सब बहुत खुश भइले! अपना लरिकाईं के संघतियन से मिल के उ बहुत खुश भइले! अब रोज सबेरे उठ के खेत खरिहानी घुमे निकल जास! खेत में फुलाइल सरसो, मटर, लहरत गेंहु के बाल, गेंहु के आरी आसमानी रंग के फुलाइल तिसी के धारी त बगीचा में मंजराइल आम आउर ओकर मध के जइसन मीठ सुगंध उनका मन के मोह लेव! साठ साल के उमिर में उनका आपन लरिकाईं आउर जवानी इयाद आवे लागल! नौकरी और परिवार के जिम्मेदारी इंसान के केतने सोना जइसन जिनगी के समय छिन ले ला, इ कवनो परदेशी से निमन के जानी? वंशीधर बाबू जवना दिमागी सुख खातिर शहर के रेडीमेड पार्क के ओर जास, ओह से निमन आत्मा के सुख देवे वाला हर चीज गाँव में रहे बाकिर जिम्मेदारी जवन करावे!

दु चार दिन बितल, शनिचर के दिन रहे! वंशीधर बाबू के मन में आज अलगे उल्लास रहे, काहे कि गाँव के शिव मंदिर पर हर शनिचर के गायकी के परम्परा उनका जनम के पहिले से चलत आवत रहे! ओही मंदिर पर पुरानका लोग आपना गवनई के विधा नवका पीढ़ी के सिखावत, गवावत आउर सौंपत आइल रहे!

किरिन डुबे के इंतजार करते दिन बितल! फेरु का.. वंशीधर बाबू अपना लरिकाईं के संघतिया तिलेसर के संघ ो मंदिर पर पहुँच गइले! धीरे धीरे गवनई करे सुने वाला लोग जमा हो गइल! पहिले त मंदिर पर खाली ढोलक, झाल आउर डफली, झाँझ से गवनई होखे, पर अब हारमोनियम, तबला, नाल वगैरा भी मंदिर पर उपलब्ध हो गइल रहे! पहिले मंदिर पर लाउडस्पीकर ना रहे, बाकिर अब मंदिर में लाउडस्पीकर लागी गइला से माइक वगैरह के भी बेवस्था हो गइल रहे! गवनई कीर्तन चालू भइल! वंशीधर बाबू के लागल की लरिकाईं लवट गइल बा! कुछ देर भजन कीर्तन भइला के बाद वंशीधर बाबू कहलन... ''बाबू लोग, फागुन के दिन बा, दू चार गो फगुआ होखे! ''

वंशीधर बाबू के बात सुन के आउर कुछ लोग कहल.. '' हँ हँ होखे फगुआ ''

गवइया फगुआ गावे खातिर तइयार भइले! बाकिर इ का... फगुआ के जगहा पर पहपट...! उहो कैसेट वाला?

वंशीधर बाबू कहलन... ''आरे बाबू कुछ पुरानका में के होखे, आपना माटी के चीज! ''

वंशीधर बाबू के संघतिया वंशीधर बाबू के बात सुन के हंसे लगलन! ''आरे वंशीधर, अब उ करेजा कहाँ बा कि लोग फगुआ गाई, फगुआ होठ हिलावला से ना, छाती के दम से होला! अब के नवछेड़िया दूध बेंच के दारु पियत बाड़े त उ करेजा कहाँ से होई? ''

वंशीधर बाबू सोंचे लगले कि गाँव के का हो गइल बा? गाँव पहिले त अइसन ना रहे!

फगुआ के एक दिन पहिले सम्हत जरावे के तैयारी जोर शोर से चलत रहे! घर घर से जलावन लकड़ी इकट्ठा होखे लागल संग में फगुआ के चन्दा वसुली भी होत रहे! वंशीधर बाबू के लागल कि कवनो ढोलक फुट गइल होई, उ चंदा दे दिहले! रात भइल सम्हत फुंका, बाकिर खाली दु चार जना लुकारी ले खदेर के नियम जोगा दिहले! ना ढोल बाजल ना झाल, ना फगुआ गवाइल... बस सम्हत फुंका गइल! वंशीधर बाबू अपना जिनगी में पहिला बार अइसन निरस सम्हत फुँकात देखले रहले!

जइसे तइसे रात कटल! सबेरे सबेरे हल्ला गुल्ला सुन के वंशीधर बाबू के नींद खुलल! उ घबरा के आपना मलकिनी से पुछले .. ''का भइल? ''

''बड़का टोला पर मार भइल बा, सुनत बानी कि चार जाना के कपारो फूटल बाबा! '

'' उ कइसे? ''

'' सुननि ह रात ही से संघहि दारु पियत रहलेहसन, भोर होते होते आपसे में खूबे लाठा लाठी कइले बाड़े सन! ''

वंशीधर बाबू सोंचे लगले... हँ त गजबे फगुआ मनावल जात बा गाँव में!

धीरे–धीरे दिन दुपहरिया के ओर बढल! उनकर संघतिया तिलेसर उनका घरे अइले! दुनु संघतिया एक दूसरा के अबीर लगा के अँकवारी मिलले! दुनु जने बइठ के आपन आपन दुखम सुखम लगले बतियावे! कुछही देर बाद टाली पर बड़का बड़का साउण्ड बॉक्स लदाइल ट्रेक्टर कान फारत सोझा से पार भइल! वंशीधर बाबू तिलेसर से पुछले... ''इ कहाँ जात बा? ''

तिलेसर कहले.. ''आरे इ मंदिर पर जा रहल बा.., काल्ह जवन चन्दा वसुलाइल, एही खातिर! ''

दुनु संघतिया अबीर ले के मंदिर के ओर चल दिहले! गाँव में ज्यादा लोग के ना अबीर लागल रहे ना कवनो रंग! सभे फगुआ के दिने सादा सादा ही लउकत रहे! इ देख के वंशीधर बाबू तिलेसर से कहले.. . ''का हो तिलेसर,लागते नइखे कि आज फगुआ ह? ''

तिलेसर कहले.. ''अब जेकरा दू चार किता केस लड़े के होई, मारा मारी करे के होई, मुँह फुलौवल करे के होई, उहे नु केहु पर रंग,अबीर डाली? इहाँ गाँव में त इ हाल हो गइल बा कि केहु केहु के दुआर पर नइ खे जात! केहु के रंग लगा दी तो मारा मारी हो जात बा! तेवहार के नाम पर के केकरा से टेंट बेसाही!''

तिलेसर से इ बात सुन के वंशीधर बाबु के मन बहुत दुखित भइल! दुनु संघतिया मंदिर पर पहुँचले! मंदिर पर ट्रेक्टर के टाली पर डीजे पर बहुत कान फारे वाला आवाज में अश्लील, फुहर, समाज में ना सुने जाए वाला फगुआ गीत बाजत रहे! ओह फुहर गीतन पर नवछेड़िया त नवछेड़िया, पैंतीस चालीस पार लोग भी डांड़ हिला हिला के नाचत रहे! अब ट्रैक्टर बड़का टोला के ओर चल दिहलस! जइसन गाना के बोल ओह से बढ़के नाचे वाला के हाव भाव! छत पर के पांचिल पर से निहारत मेहरारु, बेटी, बहिन, घुह कढ़ले नवकी कनिआ सब भी डीजे के फुहर कनफरुआ गीत आउर किसिम किसिम के विभत्स नाच के भरपूर मजा लेते रहली!

इ सब देख के वंशीधर बाबू के मन गाछी पर से गिर गइल! उनका इ ना बुझात रहे कि ए गाँव के का हो गइल बा! इ कवन फगुआ ह, इ कवन तेवहार ह?

जहाँ ना आपस में प्रेम होखे, जहाँ केहु केहु के रंग अबीर लगावे में डेरात होखे! जहाँ केहु बेमन से गरे लगावत होखे! जहाँ ढोलक,झाल, डफली, झाँझ के बदले डीजे पर फुहर गाना बजा के बेशरमी से लोग बेटी बहिन के सोझा नाचत होखे! एतने ना जहाँ घर के माई, बहिन, बेटी ओही अश्लील गीत आउर बेशरम नाच के मजा लेते होखे! एकरा के का कहल जाव फगुआ कि कुछ आउर?

जहाँ प्रेम,भाईचारा,लाज, शरम, संस्कार, संस्कृति, के लोग बिल्कुल भुला के इरखा,द्वेष, निर्लज्जता, बेश. रमी, फुहरपन अपना लिहले होखे, उहँवा कइसन फगुआ? फगुआ त प्रेम भाईचारा रंग अबीर, ढ़ोल मजीरा के तेवहार ह, जहाँ इहे नइखे त फगुआ कइसन?

❑❑

❍ सिवान (बिहार)

रामनवमी में अम्मा

सारिका भूषण

अम्मा पुजेली
सातों बहिनी
अम्मा गावेली
मईया–गीत

माथा प अँचरा
जुड़ल हाथ
भरल अँखिया
मईया तोहार साथ

अम्मा बैठावेली
कलशा के भंडार
झुक–झुक करेली
मईया के शृंगार

दलपूड़ी, रसिया
गुड़ के बनल गुलौरा
रात भर के जागल

पूरण होला रतजग्गा
टुकुर–टुकुर देखेली अंजोर
अँचरा पसारे मईया दुआरे
अम्मा भरेली घर के कोर–कोर ।

❑❑

❍ **राँची , झारखंड**

बूड़ल बंस कबीर

दिनेश पाण्डेय

1

तीन तिरिखा–
देह, मन के, तत्त्व के।
:प–रस–धुनि–गंध–परसन
तीर रहलन सत्त्व सारा
देह के, आदिम समय से।
भटक जाला बेबसी में
अनवरत मन,
भाव के फैलाव–घन में।
चिर तरासा अस बयापल
तत्त्व के बुनियाद में,
कन परस्पर डूब रहलन
तिश्नगी में।

के कही कि के पियासल–
नदी–जल कि माछरी?
बेअरथ जनि हँस कबीरा।

2

छोटीमुटी गुड़ुही में
बुलुकेला पनिया,
छलछल गुड़ुही के कोर।
पनिए से उपजलि
नन्हींचुकी जीरिया,
जीरिया भइल सहजोर।
सातहूँ समुन्दर के
सोखेली मछरिया
मछरी में छुपल अकास।
अँखिया में मचलेली
नन्हीं–सी बुँदनिया,
बुँदनि के मिटे न पियास।

माघी भोर

चिलबिली के शाख पुरनम
जंगला के पार।
झीन–अस उजियार।

किरमिची बदरंग जइसन असमानी,
धूँध मे ह डूब रहलसि
भोर के सरबस निसानी।
आँख से ओझल कहीं पर
धूप के किरदार।

पात पर थथमल पड़ल कुछ कन बिलौरी,
कब रुकल संग्दिल हवा
कतिनों करीं मिन्नत–चिरौरी।
रेख में ढलते गइल ह
चंदपातरि धार।

❑❑

❍ पटना बिहार

गजल

नूरैन अंसारी

निमने बतिया लोग के खराब लागत बा।
धतूर जइसन कडुआ गुलाब लागत बा।

करीं झूठे बड़ाई त खूबे गच बा लोग,
साँच कहला पर मुंह में जाब लागत बा।

बाबू माँगत बाडे़न बुढ़ऊ बाबू जी से पानी,
अब त बाप नौकर आ बेटा नवाब लागत बा।

अरे... मुंह मारी अइसन जमाना के भाई,
जेहि में अमृत से बढ़िया शराब लागत बा।

मत पूछी त बढ़िया होई संस्कार के दशा,
बबुनी के भर देह के कपड़ा खराब लागत बा।

अब त लद गइल जुग ईमानदारी के 'नूरैन',
भाई-भाई में पाई-पाई के हिसाब लागत बा।

❑❑

❍ न्यू अशोक नगर, दिल्ली

डॉ भगवती प्रसाद द्विवेदी

रीत गइल मन के फिचुकारी

अलमस्त फागुनी महीना। सरसों आ टेसू के फूलन से सजल-संवरल, बसंती चुनरी झमकावत, लहरात-बलखात प्रकृति रानी। धूरि-गरदा के गुबार लेले छेड़छाड़ करत उतपाती पवन के झकोरा। लखरांव में आम के मोजर से टपकत मद-पराग। रस भरल महुआ के उज्जर-उज्जर मादक फूल। नयना में नेह जगावत पलाश, सेमर आ कचनार। कोइलर के 'कुहू-कुहू' के कूक। आलस के आलम। मन में फूटत बसंती कोंपड़। का सचहूं फागुन आ गइल?

बाकिर आजु काहें नइखे लउकत ऊ फागुनी नजारा? आखिर कहवां हेरा गइल कन्हैया के इंद्रधनुषी रंग से लबालब भरल फिचुकारी? काहें नइखी नजर आवत भींजल चुनरी में सकुचात-लजात राधा? रंग रंगीली फुहार का जगहा ई सुखार काहें? एक-दोसरा से चुहलबाजी आ मीठ छेड़खानी! भादों के भींजल तन-मन के सुखावे खातिर आंचर के खोलि देबे के सलाह अब काहें नइखे देत कवनो रसिया?

खोलि दऽ अंचरवा, लागे घाम
भादों के भींजल बा जोबनवा!

बसंत पंचमिए से त समहुत हो जात रहे फगुआ गावे के। बिरज, बरसाना आ वृंदावन से अलगा हटिके भोजपुरिया होरी के आपन खासियत रहल बा। छकिके एक-दोसरा से रंग-गुलाल, अबीर खेले आ बहुरंगी फगुआ गावे के खासियत। फागुनी पुरनवासी आ चइत के पहिलके दिन ले ना, बुढ़वा मंगर ले फगुआ-जोगीरा के सरसता परवान चढ़ेला। गवैया गोल के गोल ढोलक, झाल, झाझ आ डफ लेले निकलि परेलन। एक-दोसरा से चुहलबाजी करत, रंग-अबीर खेलत फाग राग अलापे में मस्त नर-नारी।

अइसना में केकरा फिकिर बा राह-कुराह के! जदी जाने-अनजाने लौंग के कांट गड़िओ गइल, त देवर आखिर कवना दिन-रात खातिर बाड़न? ऊ त निकलबे करिहन।फेरु दरद के छूमंतर-अस भगावे वाला प्रियतमो त बाड़न-

चले के रहिया त चललीं कुरहिया से
गड़ि गइले ना,
लवंगिया के कंटवा से गड़ि गइले ना!
देवरा ऊ कंटवा निकलिहें ननदिया
से पिया मोरे ना,
से हरिहें दरदिया से पिया मोरे ना!

सम्मत जरावे माने होलिका दहन के नायाब प्रतीकात्मक परिपाटी। माघ सुदी पंचमी का दिनहीं से बांस–बल्ला, लकड़ी, गोइंठा तय चौक चौराहा पर जमा करेके होड़। चोरा–चोरा के जुटावल लकड़ी के ढेरी शुभ मुहूरत पर अगजा जरावे के रसम। हवन सामग्री का संगहीं नवान्न–बूंट के झेंगरी, गहूं के बाली, नीम के पतई आ लरिकन के उबटन लगवला से निकलल मइल के सम्मत में डालिके उठत धुआं के दिशा से नया सम्मत के शुभ–अशुभ के अंदाज। सरसों के तिलाठी बान्हिके मशाल जुलूस के शकल में जरत लुकाठी भांजत गाँव के सिवाना का बहरा फेंकि आइल आ सम्मत का बगल में बइठिके झलकूटन करत फगुआ गावे के मस्ती के का कहे के! सम्मत जराके रोग–बियाध का संगहीं बैरभाव, मन के मइल, ईर्ष्या–द्वेष जइसन तमाम बुराई जरा दिहल गइली स। फेरु त मन चंगा हो गइल। दिल के कोना–अंतरा में लुकाइल काम–प्रवृत्ति मुखर हो उठल। आजु कवनो पाबंदी ना रहल।'अररर भइया–सुनि लऽ मोर कबीर!' जोगीरा भा कबीर का जरिए अगर गारिओ दे देबऽ, त केहू अमनख थोरहीं मानी–

गारी के भइया हो, बुरा न मनिहऽ
होरी हऽ भई होरी हऽ!

धूरखेली आ रंगन के छटा का संगहीं कीच–कादो, धूरि–गोबर आ गारी–गलौज। बूढ़ का संगें जवान मेहरारू के देवर–भउजाई के नेह–नाता।सूतल मनोभाव के जगावे आ उगिले के होड़। दोसरा ओरि राधा–किसुन के परेम में पगल निश्छल होरी–

इत से निकली नवल राधिका
उत से कुंवर कन्हाई,
खेलत फाग परस्पर हिलि–मिलि
सोभा बरनि न जाई
घरे–घरे बाजे बधाई
ब्रज में हरि होरी मचाई!

रस भरल होरी में रसलोलुप पाखियन के उड़ान आसमान छूवेला।अगर सोझ–सपाट मरद घोड़ा बेचिके सूतल रही आ कवनो रसिया कागा यौवन–रस लुटला का संगहीं नकबेसरो लेके उड़न–छू हो जाई, त मेहरारू बेचारी का करी! अइसन अभागा पियक्कड़ पति के नींन के अइसन–तइसन!

नकबेसर कागा ले भागा
सइयां अभागा ना जागा
उड़ि –उड़ि कागा कदम पर बैठा
जोबन का रस ले भागा
सइयां अभागा ना जागा!

मुंह, आंख, चुनरी–किछऊ त बाकी ना रहल। बसंती हवा के छुअन अंग–प्रत्यंग सिहरा देत बा राधिका के। ओहू पर श्याम के फिचुकारी के धार। राधा के हाल बेहाल। ऊ मने–मन निहाल होत कहत बाड़ी–'मत मारो श्याम पिचकारी!' जदी एहू प कान्हा नइखन मानत, त माई जसोदा से शिकायत करहीं के परी।

बाकिर आजु ई कइसन बदलाव? फागुन आके चुपचाप चलल जा रहल बा। एक ओरि महामारी के आफत, दोसरा ओरि चुनावी उठा पटक। सुरसा–अस मुंह बवले महंगी के मार आ दिमागी तनाव से त्रस्त समाज। तबे नू आजु नइखे फूटत आनंद के रससिक्त कऽ देबे वाला उद्‌गार–निश्छल भाव से फागुनी शुभकामना–

सदा आनंद रहे एहि द्वारे मोहन खेले होरी!

कतहीं होलिका दहने में हमनीं के हर्षोल्लास, उत्साह आ सांस्कृतिक चेतना के त ना जरा दिहलीं जा? तबे नू नइखे फूटत सांच मन से सिंगार के होली–गीत! साइत हिरदया के फिचुकारी में अब रंगे नइखे बांचल।दिल रसहीन हो गइल बा। फेरु का सिंगार, का हास, का हर्षोल्लास आ का होरी!

रीत गइल मन के फिचुकारी, रस–रंग कहवां पाईं?आखिर कब तक हमनीं के नशा में धुत्त होके, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आयातित अपसंस्कृति में आपन सुध बुध खो के गौरवान्वित होत रहबि जा? कब लवटबि जा कुदरत आ कृत्रिमता से सहजता का ओरि? आखिर कब मन परी जिनिगी से गहिरे जुड़ल आपन सांस्कृतिक धरोहर होरी? तनी मुड़िके देखीं, जिनिगी में हर्षोल्लास, उमंग के इंद्रधनुषी रंग भरे खातिर होरी–फगुआ के मदमस्त चितवन राउर पीछा करत बा। तनी सम्हरि के–फागुन महिनवा आइल सुदिनवा!

❑❑

पटना (बिहार)

कहल-सुनल माफ करिहा

डॉ सुमन सिंह

बंगड़ परेसान हो –हो खटपटिया गुरू के मकान क चक्कर काटत रहलन। कब्बो गेट के लग्गे जाके भित्तर झाँके क कोसिस करें कब्बो खिड़की के बंद पल्ला पर कान रोपें बाकिर कवनों आवाज–आहट ना। दू तल्ला क बड़–बरियार मकान अइसन सून–सपाट रहे कि लगे बरिसन क उजाड़ ओम्मे वास ले लिहले ह मानुस त मानुस चिरई–चुरुंग भी ना दे खायँ। दू दिन पहिले त अइसन सन्नाटा ना रहल अब एकाएक कइसे अइसन हो गइल! हरान–परेसान बंगड़ मकान के बंद गेट पर मूड़ी टिकवले अबहीं सोचते रहलन कि आखिर का बात भइल, काहें दू दिन पहिले क हँसत–बोलत मकान एतरे सून हो गइल। कहाँ गइलन गुरू, कहवाँ गइलिन भउजी ...कि पिंकू पीछे से आके बंगड़ के पीठ पर जोरदार मुक्का मरलन–

"का बंगड़ भैया! अब इहे रह गइल ह। का ताक–झाँक लगवले हउवा यार। कहीं डाका–वाका डाले क त ना मन बनावत हउवा ?"

पिंकू अबहीं सुर धइले आगे बोलहीं के रहलन कि बंगड़ खिसियाय गइलन– "देख पिंटुआ एक त सबेरे ही सबेरे हमार दिमाग खराब हो गइल ह अब तू अउरी मत खराब कर नाहीं त जान जइहे।"

बंगड़ के अगिया बैताल बनत देख पिंटू के मन में अनार फूटे लगल। बहुत दिन बाद बंगड़ गुरू भेंटाइल रहलन। पिंटू क मन लहकत–चहकत रहे चिकारी करे खातिर। कुछ दिन पहिले बंगड़ पिंकू क बीच बजार, साह जी के चाह के दुकान पर कुल ढाँकल–तोपल भेद उजागर क दिहले रहलन। भाँग–गांजा पियले–छनले क आ इँहा तक कि जवन–जवन नसा आ काण्ड दुनु जानी आपस में गाँठजोड़ के कइले रहलन कुल्ह उजागर हो गइल। संगी–साथी, भइया–चच्चा लोग के समने पिंटू क जमके जगहँसाई भइल। एह जगहँसाई करे के पीछे का कारण रहे न त पिंटू जान पइलन ना बंगड़ बतावे गइलन बाकिर ओह दिन के बाद केहू बंगड़ आ पिंटू के एक संगे न देखलस।

का अब जब बंगड़ केहू के दुआर ओरी झाँकत–ताकत पकड़इलन त पिंटू के उनकर लानत–मलामत करे क मौका मिल गइल। बंगड़ के एह करतूत के भरल समाज में ले आवे खातिर पिंटू भर जोर चिचिआए बदे मुँह फड़हीं वाला रहलन कि बंगड़ उनकर मुँह दबवले, घिसिरावत अपने दुआरे ले अइलन– "का बे, पिटाये बिना मानोगे नहीं का। अबहीं मारे दुई चप्पल ससुर क नाती!"

बंगड़ अबहीं गोड़े में से चप्पल निकलहीं जात रहलन कि पिंटू अकड़ के खड़ा हो गइलन– "भैया जवन कहना है हमको कहिए बिच्चे में ससुर को मत लाइये, समझे कि नाहीं।"

पिंटू बात त क्रोध से किटकिटा के कढ़वले रहलन बाकिर बंगड़ ठठा के हँसे लगलनद "का बे, अबहीं उ ससुर तोहार ससुर बनबे नहीं किये आ अबहिएँ से तुम उनसे एतना थर्रा रहे हो ? बाद में का होगा बे। उ ससुर एक ले बिसधर।का जान रहे हो तोहरे नियन लहकट के दमाद बनायेंगे। आ जदि लइकी के मोह में पड़ के बनाइये लिए तो का समझ रहे हो तुम्हारे जइसे आवारा की आरती उतारेंगे आयं।"

बंगड़ क हँसी–ठिठोली बोली–कुबोली में बदल गइल रहल। पिंटू के फिर से आपन पिछला अपमान याद आ गइल। क्रोध में लहकत कहलन– "भइया ई कुल बात ठीक नहीं है। आपका सादी–बियाह नहीं होगा तो का केहुवे का नहीं होगा। बचपन से पचपन के उमिर तक आप जिनगी में करबे का किये जी। पढ़ाई–लिखाई छोड़ के गल्ली–गल्ली घूम के बस इनके उनके रासन–पानी, दर–दवाई आ अनाज–तरकारी ढोवे। तीज–त्योहार में, सादी–ब्याह में बिना मजूरी लिए खटनी खटे। मिला क्या? सुनने को फटकार आ खाने को गारी। आप आज ले तो चेतबे नहीं किये अपना नफा–नुकसान। मय गाँव–जवार, हीत–नात, आपन–आन आपको सुधारने में लगा रहा आ आप न सुधरे। कम से कम हम्मे तो अपना हानि–लाभ समझने दीजिये।"

पिंटू बिना साँस लिहले कुल उघटा–पैंच कय भइलन। ई कुल सुन के केहुवे के कपार ध ीक जाए के चाही बाकिर बंगड़ सनाका खा गइल रहलन। कुछ घरी बंगड़ के चुप देख के पिंटू के अपने बोली–कुबोली पर पछतावा होवे लगल। बंगड़ के मूड़ी गोतले आ आँस छिपावत दे ख पिंटू क कुल मोहमाया उमड़–घुमड़ आइल। बंगड़ एह घरी अइसन दीन–हीन दुखियार देखात रहलन कि पिंटू अपने के कोसे लगलन। बहुत साहस बटोर के कहलन– "भइया माफ कर दा यार। अब अइसन कुछु ना कहब कि तोहके बुरा लगी।हम त...।"

अबहीं पिंटू हकलात आगे अउरी कहहीं के रहलन कि बंगड़ आँस पोछत ठाढ़ हो गइलन––''आज ले सबही हमके कुछ न कुछ टेढ़–सोझ कह देत रहल ह बाकिर हम केहू क बात करेजा पर ना लिहलीं,तोहरो ना लेब। बाकिर

में मार–मार दुर–दुर होवे लगल ह।दू जून क रोटी खातिर एतना जहर–माहुर नियन बोली–टिबोली सुनले से ठीक कि आदिमी गंगा जी में समाय जायं। बेरोजगारी जिनगी खातिर गरहन बनल जात हे भाय पिंटू.... अच्छा! ई कुल जंजाल त लगले रही...छोड़, चल चलीं जा बड़का भइया के घरे।

पता ना काहें हमार मन घबरात ह।कल्हिएँ से उनकर गेट बंद ह।अइसन आज ले ना भइल।सबेरे से लेके सुतली रात ले भउजी बोलत –बतियावत मनसायन कइले रहत रहलीं ह आ...'' ऐसे पहिले कि बंगड़ आगे कुछ बोलें पिंटू बिच्चे में कूद गइलन––''ओके मनसायन ना कहल जाला।कपार खाइल कहल जाला भइया। अइसन करकसा मेहरारू हम अबहीं आज ले ना देखलीं।केसे ना करकर कइले होई ऊ मेहरारू.. सब्जीवाला, ठेलावाला, दूधवाला, राशनवाला तक ओकरे दुआरी जाए में आनाकानी करेला।आ तोहीं बतावा, तोहरे कवनों करम छोड़लस ऊ ? का–का अछरंग लगा के तोहके घर–निकाला दिहलस आ अबहीं तू उनही के फिकिर में बूड़त–उतरात हउवा ? बड़ा बरियार करेजा बा भइया तोहार यार ! मान–सम्मान कुल्हिये घोर के भोग लगा लेले हउवा का भाय ? हम त ना जाइब ओह करकसनी के दुआरी तोहके जाए के ह त जा।'' कह के पिंटू भागे के भइलन कि बंगड़ कस के उनकर बाँह पकड़ लिहलन––'' मान–अपमान क चिंता आज तोके ढेर लेस देहलस...चल नाहीं त अबहिएँ तोहरे ससुर के हिकभर गरियाइब....। ''बंगड़ हँसत पिंटू के बाँह पकड़ के घिसिरावत खटपटिया गुरू के दुआरे ले गइलन।

कई बेर गेट पिटलन, कॉलबेल बजवलन बाकिर केहू क अता–पता ना। बहुत देर तक दुनू जनी घर क परिक्रमा क के गेट पीट के,घंटी बजा के जब थक गइलन त बंगड़ कहलन––'' कूदे के पड़ी। ''बंगड़ क विचार सुनते पिंटू के कँपकँपी छूट गइल––''ना भाई ना। तोहके कूदे के होय त कूदा बाकिर हमके माफ करा भइया।बत्तीस के उमिर में त केहुतरे पियाय,खयाय–पटाय के बियाह तय भइल ह।का चाहत हउवा ई तोहरे समाज सेवा में हम चोर–चाईं बनाय के जेल भेज दीहल जाईं। हमसे ई कुल ना होई।तू ही कुद्दा..हम बहरे रह के निगरानी करब।''

''कवने बात क निगरानी बे ? चोरी करे जात हईं का हम ?।'' मारे खीस के बंगड़ क मन करत रहे पिंटू के हिकभर कूटे क बाकिर केहुतरे धीर धइलन आ चारदीवारी धय के धप्प से घरे में कूद गइलन।

बइठका क खिड़की उढ़कल रहे, खोल के भित्तर झंकलन। भित्तर दिनहूँ में अन्हार रहे।बंगड़ क जी धुकपुक करे लगल।का बात ह,का भइल बूढ़ा–बूढ़ी के...कहीं ... । मन के कड़ा क के गोहरवलन––'' भइया हो !सब ठीक ह न हो ? कहवाँ हउवा भाय तू लोग ? बेमार–ओमार हउवा का ?आँख फाड़ –फाड़ के ...बंगड़ भित्तर के अन्हार में भइया –भउजी के टोहत रहलन आ लगातर गोहरावत रहलन।दस–पंद्रह मिनट के मेहनत–मसक्कत के बाद भउजी गिरत–भहरात अइलीं। भर्राइल कंठ से कुछ बोलल चहलीं पर बोल ना फूटल। भउजी के एह दसा में देख के बंगड़ क परान सूखा गइल––'' भउजी पहिले केवाड़ी खोला। भित्तर आवे दा।'' बंगड़ हाल–समाचार जाने खातिर बेचौन रहलन बाकिर भउजी केवाड़ी ना खोललीं।भितरे से बोललीं––'' तोहरे भइया के तीन–चार दिन से जर–बोखार रहल ह। जाँच करवावल गइल त कोरोना बतावत ह बचवा।तब्बे ले केवाड़ी बन के आदिमी पड़ल हउवन।बहरे केहू के पता न चले के चाही बचवा ...।''कह के भउजी रोवे लगलीं। बंगड़ समझावत–बुझावत कहलन––

'' देखा भउजी बहुते आदिमी के आजकल कोरोना होत ह आ बहुते लोग ठीक हो जात हउवन। घबराए क कवनों जरूरत ना ह।एतरे केवाड़ी बन कइले आ ढंकले–तोपले बेमारी ठीक होई कि बढ़ी? तोहन लोग के बढ़िया देखभाल आ इलाज क जरूरत ह। घबरा जिन अबहीं घरे से बहिनिया के भेजत हईं। तोहन लोगन क भोजन–पानी क बेवस्था आ देखभाल खातिर।तनी दूरी बना के आ सावधानी रख के चलिहा लोग। सब ठीक हो जाई। घरे में लाइट जरावा, खिड़की–दरवाजा खोला। ई का मनहूसियत फइलवले हऊ।बंगड़ के एक–एक सबद भउजी खातिर संजीवनी रहल। ऊ रोवे लगलीं––'' ए बचवा, तोहार एहसान कब्बो ना भुलाइल जाई हमहन दुनु जनी। आज दिन जब आपन औलाद हमहन के अकेल मरे खातिर छोड़ देले हउवन त तूँ ....ए बचवा ...।'' भउजी बहुत चहलीं बाकी ऐसे आगे ना बोल पवलीं।

''अच्छा ––अच्छा अब ढेर रोवले क आ कमजोर पड़ले क जरूरत ना ह।मजबूती से जइसे आज ले भइया के ठोंकत–बजावत आयल हऊ वइसहीं कोरोना के भी तू बढ़िया से ठोक–बजा लेबू। परेसान भइले क का जरूरत आंय.. बतावा भला कोरोना माई क मजाल जवन तोहरे नियन मातारानी के समने टिक पइहन...अब आके गेटवा खोलबू कि फेर से चारदीवारी फाने के पड़ी..आयं। '' बंगड़ क बोली एसे पहिले भउजी के कान में अंगार जस लगत रहे बाकिर आज संकट में संजीवनी बन गइल रहे।गदगद कंठ से टूटल –फूटल एतने कह पवलीं–

'' कहल –सुनल माफ करिहा ए बचवा...।''

''तोहरे ना भउजी हम त सबही क कहल –सुनल माफ करत चल जात हईं... बज्र बेहया आदिमी क का मान,का अपमान ?

आपन आ भइया क खेयाल रखिहा। तनिको जिन घबरइहा।ठीक न ...!'' भउजी पहिली बार केहू के रोवां–रोवां से असीसत रहलीं।

❑❑

❍ डी आई जी कॉलोनी,
खजुरी, वाराणसी

भारतीयता के अमिट कहानी 'गिरमिटिया भारतवंशी'

महेंद्र प्रसाद सिंह

'पत्थर पलटबऽ त सोना मिली!' ईहे लालच देके गरीब भारतवंशी के अंग्रेज अपना दलालन के माध्यम से, सात समुन्दर पार एगो एग्रीमेंट के तहत ले गइलन सँऽ। सोना पावे के ललसा में गाँव–गाँव से जवान, मरद, मेहरारु अपना बाल–बच्चा के संगे आ अधबयस, आपन रोअत–कलपत, परिवार के छोड़ के चल देलनय पानी के जहाज प बइठ के एगो अनजान देस जाये खातिर। ओह गिरमिटिया लोगिन के मन में, समुन्दर के लहर का संगे–संगे, सवालन के तूफान चलत रहेय कइसन देस होई, कइसन घर में रहे के मिली, का पाइब, का खरचब, कतना माल–असबाब लेके आपन माटी प फेनु गोड़ धरब आदि।

महीना भर के कठिन समुद्री राह में कतना लोग बेमार परलन आ जब परान पखेरू उड़ गइल त उनकर माटी के पानी में गिरा दिहल गइल। गरीबी जे ना करे। चारों ओर के अथाह जलराशि से घेराइल टापू प, गाँव घर से बिछोह के दरद करेजा में लेले, धन कमा के लवटे के आस में, अंग्रेजन के अपमान आ अतियाचार सहत, जेह तरह से देह ठेंठावे के परल, एह सब के कहानी करेजा के बेध देला। ओही कहानी के एगो अंश डॉ. राजेश कुमार 'माँझी' मंच पर नाटक, 'गिरमिटिया भारतवंशी' के रूप में ले आवे के एगो सराहनीय काम कइले बाड़न। भोजपुरी साहित्य के विभिन्न विधन में कलम चलावे वाला एह युवा नाटककार के आपन माईभाषा के प्रति प्रेम आ समरपन के हम सलाम करत बानी।

जब एह नाटक के खाका राजेश जी तइयार कइले रहन तब एकर कथावस्तु हमरा बहुते नीक लागल आ हम एकरे विश्व भोजपुरी रंगमंच खातिर समर्पित अनियतकालीन पत्रिका 'विभोर' में प्रकाशित कइनी आ एकर बड़ाई डॉ. विवेकी राय जइसन विद्वानों कइलें। आगे चलके ई नाटक 'रंगश्री' के बैनर तले, संस्कृति मंत्रालय प्रदत्त रिपर्टरी ग्रांट के तहत, हमरा निर्देशन में मंचित भइल आ सराहल गइल। वर्तमान नाट्यालेख में राजेश जी गिरमिटिया भारतवंशी मजूरन के फीजी, मॉरिशस जइसन टापू पर फुसला–बहला के ले जाये के पाछा अंग्रेजन के रणनीतिक विश्लेषण बखूबी करत बाड़न जवना में ओहनी के समाज के अग्रणी जाति पंडित के दलाल के रूप में इस्तेमाल करे के योजना बनावत बाड़न सँऽ। एह यथार्थ के, भोजपुरी के सेक्सपियर कहाये वाला महान लोकनाटककार, भिखारियो ठाकुर अपना 'बेटी बेचवा' नाटक में बेटी बेचे के कुप्रथा के जड़ में पंडित का दलाली के उजागर करत बेमेल बिआह पर भारी चोट कइलन आ एह कुप्रथा के अंत करे में एगो समाज सुधारक के भूमिका अदा कइलन।

गरीबी से मजबूर, आपन घर–दुआर छोड़ के परदेस जाये वाला लोगन के पाछा छूट गइल परिवार के बिछोह आ दरद उकेरत नाटक आगे बढ़त बा। बाकि जहाज प सवार जब कुल्हि जाति–धरम के लोग एके संगे कठिन सफर प चल दिहलन त सोभाविक रूप से नाटककार सामाजिक जातीय आ धार्मिक विभाजन के देवाल के चरमरात देखवले बाड़न। तबो चारों ओर से अकेल आ बेसहारा होखत ओह गिरमिटियन के सबसे बड़ सहारा रहे तुलसी बाबा के रामचरितमानस, रामकथा, आपन संस्कार आ संस्कृति। जइसे रामचन्द्र जी 14 बरिस बनवास के बाद अवध लवट गइल रहन ओइसहीं अपना देस लवटे के आस में, रामजी के सुमिरत भजन–कीर्तन एक ओर मनोरंजन त दोसरका ओर आत्मबल बढ़ावे के सबसे बड़ साघन बनत लउकत बा एह नाटक में।

उख के खेतन में काम करत, आपन बेटी–बहुअन के अंग्रेज अफसरन के गिद्ध–नजर से बचावत गिरमिटिया लोगन के सांस्कृतिक–सामाजिक एकजुटता के अंत बिआह जइसन खुसी आ जंगल में मंगल वाला झलक देखावत नाटककार दर्शकध्पाठक लोगिन के दिल पर के बोझ उतारत राहत के अहसास करावत बाड़न।

15 दृश्यन में विभाजित एह नाटक में पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग कइल गइल बा। बीच–बीच में भोजपुरी बोले वाला गवई पात्रन से हिन्दी बोलवावे के पाछा नाटककार के नजरिया, हमरा समझ से, ओहनी के अपना के शिक्षित भा समझदार देखावे के कोसिस बा। लेवनीदास जहाज से फीजी पहुँचे वाला गिरमिटिया लोगन के गीत में क्रेओल शब्दन के प्रयोग कहाँ तक होला ई हमरा जानकारी नइखे। हँ मॉरिशस में स्थानीय भाषा क्रेओल ह आ ओहिजा के भोजपुरी में ओह शब्दन के बहुत प्रयोग होला।

भोजपुरी नाट्य संग्रह 'नून तेल' के रचइता डॉ. राजेश कुमार 'माँझी' के नाटकन में माटी के गमक मिलेला आ शिल्प के नजरियो से इनकर नाटक के उठान धारदार होत जाला। भोजपुरी नाटकन के भण्डार भरे में एही तरे उनकर जोगदान होत रहे इहे मंगलकामना के साथ राजेश जी के हार्दिक बधाई आ हमरे एह नाटक के भूमिका लिखे के अवसर देबे खातिर तहे दिल से आभार।

❑❑

❍ **रंगश्री, नई दिल्ली**

फगुआः बसंत के मदनोत्सव में पुरखन के बैदई

शशि रंजन मिश्र

बसंत के मौसम में पहिला रंग–अबीर बसंत पंचमी जवन माघ शुक्ल पंचमी के होला। एहिजे से बसंतोत्सव भा फगुआ के शुरुआत होला। बसंत ऋतुराज कहाले। एह बसंत के महिमा एतना कि श्रीमद् भगवद्गीता के दसवां अध्याय में श्रीकृष्ण कहत बाड़ें–

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः।।

हम सामों (गवाये वाला मन्त्र) में बृहत्साम आ छन्दन में गायत्री छन्द हईं। हमहीं सब महिनन में श्रेष्ठ अगहन (मार्गशीर्ष) महिना आउर ऋतु में बसन्त ऋतु हईं।

जब श्री कृष्ण अपना के बसन्त कहत बाड़ें त एकर बहुत गहिर मतलब बा। द्वापर में उनका दू बेर आपन विश्वरूप रूप में आ के कहे पड़ल–

यह देख, गगन मुझमें लय है,
यह देख, पवन मुझमें लय है,
मुझमें विलीन झंकार सकल,
मुझमें लय है संसार सकल।
अमरत्व फूलता है मुझमें,
संहार झूलता है मुझमें। (तृतीय सर्ग, रश्मिरथी)

कृष्ण अपना के बदलाव के रूप में देखा रहल बाड़ें। आरंभो उहे... अंतो उहे... आ जब बदलाव होला त मय संसार एह बीतल के बिदाई आ आवेवाला के स्वागत में लाग जाला। बसन्त ऋतु फागुन आ चईत के महिना के मानल जाला। बितत साल के अंतिम महिना से नया साल के नया महिना के संधिकाल। कामदेव के कला आ बसन्त के सृंगार के गठजोड़ एही समय भइल रहे। महादेव के तपस्या से जगावे खातिर जब कामदेव असमर्थ भइले त ब्रह्मा के तरफ से बसन्त के रूप में सहायक मिलल। कामदेव के धनुहा से जब बसन्त के सजावल फूल के बान छुटल त महादेव के आँख खुलल। तप भंग भइल, बाकि ओकर ताप जब महादेव के तिसरका आँख से बरसल त कामदेव भस्म हो गइलें। उनकर पत्नी रति के रोअल महादेव के क्रोध बहा देलस आ कामदेव के अनंग रूप मिलल। अनंग उहे जवना के आस्तित्व त होखे बाकि बेअंग होखे। अनंग रति आ बसन्त के संगति तब से आज तक चलत बा। इंसान के भाव में रति के प्रवाह बसंत में चरम पे रहेला। फागुन बसंत के लड़कपन ह त चईत बुढ़ापा। एह अनंग–रति–बसन्त के जोर एह संसार पर सबसे जादे एही फागुन में रहेला। फागुन आवते प्रकृति के हरेक कोना मतवाला हो जाला। लइका–सेयान, बुढ़–जवान, मरद–मेहरारू, दुपाया–चउपाया, जड़–चेतन सभे पे फागुन सवार हो जाला। आम में मंजर का लागल, आम बौराइल। पलास–सेमर के फूल के ललई जंगल में आग लगावे लागल। खेत में लागल सरसों के पियर–पियर फूल से धरती के आँचर लहलहाये लागल। मैथिली के कवि विद्यापति कहले बानी–

आएल रितुपति–राज बसंत
धाओल अलिकुल माधव–पंथ

आनंद उमंग के एह परब के मनवला के पाछे ढेर कहानी बा आ हरेक कहानी के पाछे कुछ वैज्ञानिक बात छुपल रहेला।

बाल्मीकि रमायणों में बसंतोत्सव के चर्चा आइल बा। भविष्य पुराणों में एक तरह के उत्सव के लिखल गइल बा जवना में कामदेव आउर रति के स्थापन आ पूजा कइल जात रहे। संस्कृत साहित्य में एह तरह के उत्सव के बारे में खूब लिखाइल बा। संस्कृत नाटक 'चारुदत्त' आ 'मृच्छकटिकम्' में कामदेव के जुलुस निकाले के चर्चा बा। एगो आउरी किताब 'वर्ष–क्रिया कौमुदी' त एह जुलूस के जवन रंग रूप बतवले बा ओहमे ढोल–नगाड़ा के साथे गाना–बजाना आ फेर एक दूसरा पे कीचड़ फेंकल आ अश्लील हास परिहासो के चर्चा बा। सांझ के नया कपड़ा पहिर लोगन के मेलो जोल के चर्चा बा। कालिदास के ऋतुसंहार में त बसंत के जवन वर्णन बा अगर एहिजा लिखल जाय त एह लेख पे सेंसरबोर्ड बइठ जाई। बस ई समझ लीं कि एह बसंतोत्सव भा मदनोत्सव में राग रंग आ अश्लीलता के खुला खेल होत रहल ह। हर्षचरित होखो, दशकुमार चरित्र भा कुट्टनीमतम् सब जगहा मदनोत्सव के चर्चा बा। अश्लील हास–परिहास के चर्चा बा। पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदीयो आपन किताब 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद' में मदन पूजा बतवले बानी।

अब सोचेवाला बात ई बा कि समाज में एह तरह के उत्सव आ आयोजन के जरुरत काहे पड़ल? का कारण रहे कि समाज में मदनोत्सव आ होली के नाम पर शील आ अश्लील के भेव मिटा के आनंद उमंग के एह उत्सव के मनावल गइल! त एकरा के समझे खातिर हमनी के पुरखा पुरनिया के बनावल नियमन के पाछे छुपल गूढ़ विज्ञान के समझे पड़ी।

ऊर्जा कइसनों होखो ओकर प्रवाह नियंत्रित कइलो जरूरी होला। ऊर्जा के बेलगाम भइला पे शारीरिक, व्यवहारिक आ सामाजिक नुकसान ज्यादे होला। एही से पुरखा लोग आपन शारीरिक ऊर्जा के बचावे के बात कहत रहे लोग। ब्रह्मचर्य के बाँध लगा के काम ऊर्जा के रोकल जात रहे। जाड़ा के मौसम में शरीर में गरमी आ ऊर्जा बरकरार राखे खातिर पहिले के लोग

तरह–तरह के खान–पान करे। बैदई के नुस्खा जाड़ा मे बरियार चले। लोग एह नुस्खा मे सोना–चाँदी सहित ना जाने केतना गरमी लेत रहे लोग। ऊर्जा के संभारे के एह उतजोग में ऊर्जा के नुकसानों खूब होत रहे। वैज्ञानिक लोग के कहल सांच बात कि ऊर्जा के केहू बाँध ना सके आ एकर रूप परिवर्तन होत रहेला। नदी के बाँध देला से प्रवाह रुकी आ ओह प्रवाह के बिजली बनायीं त ऊर्जा के उपयोग भइल। ना त जहिया बाँध टूटी, जान–माल के नोकसान करी। इहे हाल शरीरो के ऊर्जा के होला। ऊर्जा के संचय (एकट्ठा) कइला के साथ रेचनों (निकालल) कइल जरुरी होला। आ इहे आधार बनल एह मदनोत्सव, होली आ फगुआ जइसन उत्सव मनावे के। ई एगो उत्जोग बनावल गइल समाज के एह उत्सव आ आयोजन के माध्यम से काम ऊर्जा के मनोविकार आ मनोरोगी हो खे से बचावे के। अश्लील हास परिहास के छूट देके मन के मानसिक विकार निकाले के। कहल जाय त ई पुरखा लोग के एह उत्जोग में ढेर अइसन चीज अलोत रहे जेकरा के साधारण लोग के समझ से बाहर रहे।

अब मदनोत्सव बा त राग–रंग रहबे करी। गायन–वादन होखबे करी। राग–रंग, हास–परिहास, गायन–वादन एह उत्सव के कुन्जी बनल जवना से समाज के लोगन के मनोविकार के दूर करे के उपाय कइल गइल। गायन वादन में दू गो शैली बनल– फगुआ आ चईता।

फगुआ आ चईता दूनों के पुरुष राग मानल जाला। एही फगुआ के भेव में जोगिरा आवेला जवन सोझ सोझ जोगी आ चेला के बीच शास्त्रार्थ के रूप होला। अश्लील हास–परिहास तुकांत–बेतुकांत पद आ अंतिम में जोगिरा सारा रा रा... के घोष में जनम. ानस आपन मन के सब विचार विकार कह देला। फगुआ के अंतिम चरण में चईता गवाला आ एह में शरीर आ मन के अंतिम रूप से बांधे के उपाय कइल जाला। चईता शब्द के उत्पाती भइल बा चौत्य से जवना के बौद्ध धर्म में देवता के मंदिर कहल जाला। एह चौत्य में रंग, ध्वनी आ प्रकाश के माध्यम से साधना कइल जाला। ओहू में ध्वनि भा आवाज के अधिका उपयोगिता बा। त होरी, फाग, बारहमासा भा चईत के गावे के शैली प्रधान होला, खास तरह के आवाज निकाललो जरुरी बा। गायन करेवाला लोग गोलाकार घेरा में बइठेला आ एकरा के मंडल कहल जाला। बीच में ढोलक भा नाल बजावेवाला लोग बइठेला। आ एह घेरा के परिधि पे गायक लोग झाल, करताल के साथे संगत करेला। बीच में एतना दुरी रहेला के एक–दू लोग मेहरारू के भेस ध के नाच सके। ई लोग जोगिन कहाला। परिधि पे बइठल केहू गायन के सचालन कर सकेला। एहिजा सभे कोई एक बराबर होला आ केहू एह समूह के प्रधानी ना करे। त एह मंडल के चौत्य रूप में लेके गायन कइल जाला। फाग के शैली में जहां माधुर्य के साथे अल्हड़पन होला (जोगीरा, धमाल इत्यादि) ओहिजे चईत के गायन में कड़ापन होला। गायक आलाप के साथे आरोह के ओर बढ़ेले। एहिजा अवरोह ना होखे... बस चढ़ाव रही दोगुन, तिगुन, चौगुन तक पूरा समूह एके भावे एके रागे ऊपर बढ़त जाई।

"हो! रामा एही ठइयां... आज चईत हम गायिब ए रामा! एही ठइयां"

ओह समय गावे बजावे वाला के मन के लगाम कसा जाला, देह दशा के होश ना रहे आ जब आरोह के ऊँचाई पर तान पहुँचल कि अचानक 'हा' के आवाज के साथे अचानक तान तूड़ दियाला। ध्वनि एतना लयबद्ध आ तालबद्ध होला कि मन बीच में भटकबे ना करे। एही समय पे मन के चंचलता रुक जाला। हा आ हू आवाजो के महत्व बा जवन साधना के अंग ह। ई शरीर के मणिपुर चक्र भा नाभि के आंदोलित करेला। चंक्रमण ध्यान के रूप ह आ ई भगवान बुद्ध के खोज आ बौद्ध साधना के प्रारंभिक प्रशिक्षण के विषय ह। चईत गायन के मंडल में जोगिन घेरा के चारों ओर नाचेले आ गायक बौद्ध उपासक के रूप होला। बीच में बइठल ढोलकिया ध्वनि के केंद्र भा ध्यान के केंद्र होला। ध्यान के बदलत आवृति से मन ओही आवाज में डूब जाला। आउर अन्दर के वासना, आक्रोश, गुस्सा अपने आप संस्कृत, लयबद्ध आउर तालबद्ध होके ढोलक, मंजीरा के थाप में संगीत के अंग बन जालें। (संदर्भः मगध की रहस्यावृत साधना संस्कृति–डॉ0 रवीन्द्र कुमार पाठक)

शील–अश्लील, तुकांत–अतुकांत पद के साथे मन के विकार निकले एह प्रयोग के पुरखा बड़ी जतन से सम्भरलें। बाकी आज के होली आ चईत गायन में साधना पक्ष आ व्यवहार पक्ष गायब हो गइल बा। पुरखन के बनावल नियम कानून आ चिकित्सा पक्ष के आज जाना आ बुझल जरूरी बा। आज होली गीतन में अश्ल. ीलता के प्रवाह ज्यादा बा। अब ना उ मंडल रहल ना गायन। फाग–चईत के प्रारंभिक आ जरुरी वाद्य के जगह पे अंग्रेजी बाजा आ जोगिन के जगह पे अश्लील नृत्य करत मेहरारुन के प्रवेश से फाग आ चईता गायन के महत्त्व कम हो गइल। लोग सिनेमा संगीत पे अबीर उड़वला के, अश्लील गीतन पे मरद मेहरारू के नाचल आ नशाखोरी के ही आज होली के नाम दे देले बा। होली फगुआ आ चईत त अब नइखे... होली बेराग आ रंगहीन हो चुकल बा। शहरीपन के भीड़ मे प्रेमभावो व्यवहारिक आ व्यापारिक बन गइल बा। शहर मे अब ई साधना संभव नइखे, एह से एकर व्यवहारिक पक्ष रंग गुलाल आ पिचकारीये तक ठीक बा। समाज बदल गइल आ साथे समाजिकतो। एह से जेतना सधे ओतने साधल ठीक बा।

❑❑

❍ उत्तम नगर, नई दिल्ली

'कुछ चिंतन, कुछ सुध' से जागत आस

दिनेश पाण्डेय

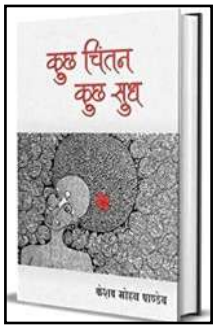

निबंध शब्द आम तौर पर बान्हे, कसे, काबू में करे के वाचक ह। निबंध के आन अरथ रचल, लिखल, मूल मकसद आ साहित्यक रचना ह। सुबंधु के कथन–

''प्रत्यक्षरश्लेषमयप्रबंधविन्यास – वैदग्ध्यनिधिर्निबन्धनम्।'' ('वासवदत्ता', श्लो0–13) में अच्छर में श्लेष सहित प्रबंध–सज्जा, आ रचना– कुशलता के निबंधन, भामह के साहित्य सिरिजन के परोजन प बिचार करत 'साधुकाव्यनिबंधन' आ 'वक्रोक्तिजीवितम्' में कुंतक के 'काव्यबंधोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारकः' कथन में काव्य रचना खातिर 'निबंध' शब्द के प्रयोग देखे लायक बा। निबंध के सरूप में निरंतर बदलाव आ भिन्नता के कारन एकर कवनो सटीक परिभाषा कइल मोसकिल मानल गइल बा। संस्कृत के बिचार–प्रधान दार्शनिक, आध्यात्मिक रचना भा साहित्यिक प्रबंध के तुलना में आधुनिक निबंध के मेंह आत्मप्रगटन के गुन ह। ओइसे त बेकती के हमता के प्रगटन कवनो–ना–कवनो रूप में हर कथन याकि भाषायी बेवहार में होला बाकी प्राचीन निबंध कोटि के चीज में ई सीधे–सीधे जाहिर ना होत रहे, जबकि हालिया निंबंध लेखन एह मायने में बिल्कुल अलग आ बेकती के पहिचान के अभिव्यक्ति के साधन बाड़े। निबंध वर्तमान सरूप में एकदम से आधुनिक ह आ साहित्य सिरिजन के एक अलग विधा के रूप में मान्य भ गइल बा। आन भारतीय भाषा सभ में आधुनिक निबंध के बिकास का तरे भोजपुरियो में निबंध लेखन भइल। लिखेवाला लिखल, पढ़ेवाला पढ़ल, बाकी प्रचार–प्रसार, पठनीयता आ लोकप्रसिद्धि के आभाव में ऊ मुकाम ना हासिल भइल, जवन कि भइल चाहत रहे। ज्ञान के कवनो चरम ना ह, बेहतर के चाहना हरमेसे रहेला आ रहहूँ के चाहीं, ईहे जीवंतता के गुन ह, बाकी जवन बा तेकरा प हीनाई के अहसास ना, बलु संतोख महसूस कइल जा सकेला।

'कुछ चिंतन, कुछ सुध' में संगाती केशव मोहन पाण्डेय जी भोजपुरी निबंध लेखन के अतीत से आगत तक के हालात आ असलियत के पड़ताल करे के जतन कइले बानी। एजा 'जतन' शब्द के प्रयोग पर एक कैफियत देल जरूरी बा। एक त ई कि आधुनिक अरथ में निबंध, फ्रेंच के 'मेंपे' जवन कि क्रिया–धातु 'मेंलमत' के नाम–रूप ह, के समार्थी के रूप में बिकसित ह, तेकर अरथ ह– जतन कइल, प्रयास कइल। संकेत साफ बा, निबंध में कथ्य भा बिचार के इतिना तलासल जा सके, हँ एकर जतन कइल जा सकेला। ई प्रयास अपूरन ह, आ रही। हर निबंध खुद में एक गोहार, एक चुनौती ह, बस्तुगत साँच के खोज के, बेकती के इयत्ता के प्रगट करे के। दोसर कि भोजपुरी में एह जतन के दरकार बहुत अधिक बा त एकरा के एक डाँक बूझल जाउ कि– ''आईं एह विधा के उजागर करे के कोशिश होखे।'' एह मायने में एह कीरति के महत्व बढ़ जाता।

ई किताब में दस गो मथेला के तहत् लेख–सामग्री सन्मुख रखल गइल बा। दसो में भोजपुरी साहित्य के कुछ चुनल बात पर आ खालिस भोजपुरी में बात कइल गइल बा। बात बा एह भाषा में संस्मरण लेखन के हालात के, लेखन के चुनौती के, एक मुठी सरसों के बहाने भोजपुरी संस्कृति के रंगत के, लोकचेतना में नारी के, एह भाषा में उपन्यास लेखन के शुरुआती जतरा के आ जिनिगी के कवनों मोड़ पर जीयल समय के सुध के ताना–बाना में भोजपुरी संस्कृति–सभ्यता के पहिचान के।

योग दर्शन के 'अनुभूतविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः' सूत्र के अनुसार संस्कार के रूप में अवचेतन में पड़ल कवनो बात भा अनुभव के फिर से प्रगट भइल स्मृति ह। संस्मरण लेखन के आधार ईहे स्मृति ह। स्मृति बेकती के भोगल जथारथ अथवा तेकरा संसर्ग में आइल कवनो बिसय से जुरल होला एह वजह से संस्मरण में लेखक भा बकता के खुद के पहिचान के सुर सभसे अधिका मुखर होला। ओइसे त सारा साहित्यिक ताना–बाना जिनिगी के अनुभवे से पैदा भइल चीज ह बाकी संस्मरण में ई अनुभव सीधे–सीधे उजागर होला। आत्मकथा, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रावृतांत आदि संस्मरण के आन रूप हवें, ई एक तथ्य ह, बाकी एकर पइस कविता, कहानी वगैरह में, कहईं, हो सकेला। 'कुछ चिंतन, कुछ सुध' के सोगहग अधखंडी में संस्मरण के संकलन के आधार के पीछे के एक वजह ई नजर

आवत बा कि– ''ढेर विद्वान लोग संस्मरण के साहित्यिक निबंध के एगो रूप मानेला'' (पृ0–25)। भोजपुरी जइसन लोकभाषा में भाषा भा साहित्य के कवनो विधा के उठान के चरचा करत अध्येता लोग अक्सर असुभाविक आत्ममोह भा 'हम आ हमार, केहू से कमतर ना' जइसन उच्चभाव के चपेट में होखेलनि एकर हस्र ई होला कि असलियत कहईं ओझल हो जाला बाकी 'कुछ चिंतन, कुछ सुध' के लेखक के मन में एह तरे के कवनो संकोच भाव नइखे। एक अजीब सहजता आ बेबाकी केशव मोहन जी के लेखन में सगरी मौजूद बा। ना शब्दन के कीमियागरी, बस एगो जुनून बा कि जवन चरचा में नइखे ओकरा के सामने ले आवल जाव। जवन कहईं आन्ह–अलोत में उपेक्षित पड़ल बा ओकरा पर पड़ल धूरि झारल जाव, लोग असलियत देखे–बुझे आ अगर कहीं ओज पड़त बा त तेकर बेहतरी खातिर कुछ करे के उकसावा मिले। ई हकीकत ह कि भोजपुरी में संस्मरण लेखन के सुगबुगाहट आजादी के बाद के कालखंड में भइल। एह विधा के अधिकतर शुरुआती सामग्री गुन–प्रशस्ति लेखन भा स्मारिका के रूप में बाटे। खाँटी साहित्यिक संस्मरण कम बाटे एह बात के तस्दीक डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी के कथन में भइल बा– 'भोजपुरी में संस्मरण विधा में एह सभ कुछ के अलावा अउर किताब छपल बा बाकिर ढेर नइखे।' एह बात से मन बइठे के वजह बा बाकिर ईहे बात मन में निहिचौ के दिढ़ाई पैदा कर जात बा कि एह दिसाईं कुछ होखो। ईहे जिद्द एह किताब के हर बुनावट में मुखर बा।

बात महज संस्मरण लेखन तक सीमित नइखे, चुनौती हर छोर प बा। साहित्य केवल मनबहलाव के चीज ना ह, बाकी परोजन के अलावे बेकती आ समाज के हित, बुद्धिबिकास, लोकोपदेश, बेवहारचातुरी, आदि सिरिजन के उद्देश्य हवें। पाण्डेय जी के कहनाम कि ''साहित्ये अइसन साधन बा, जवन जिनिगी के जटिल, कठिन आ त्रासद बनावेवाली स्थिति–परिस्थिति के कलम के चाकू से चीरत ओकरा पाछे के चेहरन के बेनकाब करेला।'' लेखन कर्म में एह शल्यक्रिया बदे निसंगता, जिनिगी के जथारथ के बारीक पहिचान आ कहे के ढंग जरूरी औजार हवें। का बात कहल गइल कि ''जब साहित्यकार आ पत्रकार केहू के जूतो मारी त मखमल में तह–दर–तह लपेट के।'' निजी हरख–बिखाद, लाभ–लोभ, ईरिखा आदि कुभावन का संगे सिरिजन के बात बेमानी ह, जरुरियात चीज ह आम आदमी के भावना संगे सहानुभूति। बात सोचे जोग बा, भोजपुरी के के कहो समूचे भारतीय साहित्यिक माहौल में हम आ हमार के गुमस–गंध पसरल बा। घिनावन सोच, निजी कुंठा, तिकड़मी राजनीति के बिभेदक घोषित–नीति आदि से संक्रमित आदमी उदात्त साहित्य के सिरिजन ना कर सके। हालात माफिक नइखे, पूरा हालिया साहित्य घमंड, घुड़की, घिन, घबराहट, घात–बिघात के इजहार के जरिया बन गइल बा भा बना दिहल गइल बा, एह बात से असहमत भइल कठिन बा। लेखक के नजरिया साफ बा कि लेखन में आम जीवन से सारोकार, जुग–चेतना के परख, मानव–समाज से बंधुवत जुड़ाव आ अनागत बदे सपनशीलता के गुन होखे के चाहीं। ई अकाट बयान ह कि पहिचान आ अंगीकरन के संकट से भोजपुरी त का, सरबस लोकभाषा जूझ रहल बाड़ीसँ। एह में थापित–थोपित भाषा के अलंबरदार लोग के कुलक मानसिकता आ भोजपुरी भाषा–भाषी लोग के खुद के भितरे से उपजल हीनता–बोध कम जवाबदेह नइखन। भाषा के सामरथ से आजीविका के अभाव, मानकीकरण के समस्या, प्रबुद्धवर्ग के उदासीनता, उच्च साहित्य के सहज–सुलभता के अभाव, पठनीयता के संकट, जुग आ तेकर जरूरत के हिसाब से हो रहल भाषायी बदलाव के अपनावे में हिचक, भाषा के खुदमुख्तारन के गलाकाट गुटबंदी, बिचार के हठ, अवैज्ञानिकता, धर्मांधता, जातिवाद, बाजारवाद, गीत छोर से अमरबेलि अस पसरल जात भदेसपन आ छिछोरपन आदि भोजपुरी भाषा के उठान में गंभीर रोड़ा के शक्ल में ढल गइल मसला बाड़न। चुनौती एगो–दुगो होखे त नू? हिंहा त बाग–के–बाग कोलवाँसे बा।

पीअर रंग ज्ञान–बिद्या, सुख–शांति, योग्यता, एकाग्रता, देह–मन के आपसी तालमेल आ भारतीय संस्कृति के निशानी ह। 'एक मुठी सरसों बनाम भोजपुरिया' के चिंतन रुख एनहीं बा। संस्कृति कवनों समाज के अंतस में गहिरोर पसरल गुन–गिरोह के बिटोर ह जवन ओहि समाज के सोच–बिचार, मान्यता, इच्छा, सपन, आदत आ कर्मशीलता के सरूप में पेहम होला। भोजपुरी भावलोक में सरिसों के पिअरछहूँ रंग के फैलाव, खेत में हिलोर मारत तेकर फूल, कवनों अल्हड़ तरुनी के बेपरवाह दुपट्टा, पाहुन के बिदाई बदे अलगनी प सूखत पिअरी धोती, कल्पना में बसल भगवान के पीतांबरधारी रूप, मधुमास में उमगत प्रकृति आ गदराइल फसिल के आभा, कवनो बदलाव–बेअगर कवि के मन में उपजल आग के लपट में नवका उठान के लच्छन, नवब्याहता के हरदी मलल देह के पीलापन, आ ना जाने कवना–कवना शक्ल में कहीं गहिरे पैबस्त बा। सरिसों के गुन–सुभाव में जवन

विविधता बा ऊ भोजपुरी जिनिगी में बेआपत बिबिधता के प्रतिकात्मक अभिव्यक्ति बदे एकदम से सटीक परतुक के रूप में सामने आइल बा। ललित निबंध के रूप में 'एक मुठी सरसो बनाम भोजपुरिया' में सरिसों के ब्याज से भोजपुरी संस्कृति के कवन–कवन कोना–सानी उरेहल गइल बा ई त तेकरा भितरे पइसले प उजागर होखी। ललित निबंधकार में अक्सर एगो कुटेब देखल जाला, ऊ ह पांडित्यप्रदर्शन। अतिशय बौद्धिकता चंद लोग के दिमागी तोस के कारक हो सकेला बाकी तेकरा में लालित्य कहईं ओझल हो जाला, ई बात पक्का ह। केशव मोहन जी खुदे एह अझुरहट से दूर रहल चाहत बानीं– ''हमार लेख कवनो विद्वान के लेख ना ह, नाहिए कवनों ज्ञान के गरिमा के प्रमाण ह आ ना कवनों सोध के साधन ह। हमार लेख हमरा मन के नम जमीन पर बिना–कवनो कोड़–झोर के, बिना कवनो डाई–पोटाश के उपजल भाव के लहलहात फसिल ह।'' ई भइल कथन के सोझपन, आ ई सोझपन एह निबंधे ना पूरे किताब में सगरे लफार मारत बा। साहित्यिक मरजादा त ई ह कि रचनाकार रचना के बीच में खुद जनि ठाढ़ होखे बाकी निबंध ह नू जी, ई कवन बात भइल कि सइ–सइ सींकड़ गोड़ में कसले बिचारबंध के चउफट्टा में घुसकुरिया काटल जाव। बात सरिसों के बा, त अइसने सरिसों एक बेरि हमरो मन में फुलाइल रहे, कवनो भोर के टेस बासंती घाम के रूप में। ना–ना, ई कवनो आपन बात ना ह, बात ह भोजपुरी मानस में सरिसों के पसराव के–

''मेहरारुन क एगो झुंड
गइल ह सिवाला ओरि तनिके पहिले।
उनकर सहगीत के बोल छितरा गइल बा
सगरे
सरसों के दाना अस।
एगो–दूगो अनगिनित टुसियाइल सरसों,
देखत–देखत भर गइल आसमान
पियर–पियर फूल से।
बाँचल अखबार के हरफ पसरल जाता
खेते–खरिहाने, घरे–बगरे,
ओरी बँड़ेरी सभ जगे,
मुँहाँमुँहीं।–

(भोजपुरी साहित्य सरिता, अंक–10 में प्रकाशित)

आधुनिक साहित्य में नारी–विमर्श एक मुख्य मुद्दा रहल बा। 'भोजपुरी लोकगीतन में नारी' के बस्तु लोकगीतन में प्रगट स्त्री के जैविक–पारिवारिक–सामाजिक सरूप, स्थिति, नजरिया, बेबसी, बिडंबना आदि के इर्दगीर्द घुमत बा। ई बेपर्द जथारथ ह कि इतिहास के हर पायदान प स्त्री या त दिरिस ते गाएब बाड़ी भा उनकर मौजूदगी नोक भ बा। अइसना में लोकसाहित्य के समतुल कवनो साधन नइखे जे इनकर इच्छा, इनकर सपना के अपना भीतर जोगा के र खले होखे। एकर वजह बा, ऊ ई कि कला भा ज्ञान–विज्ञान के हर क्षेत्र में मरदवर्ग के दबदबा रहल ए से मेहरारुन के स्वत्व, उनकर ताकत, उनकर कमजोरी, इच्छा आ चाहत, प्रेम–घिन, हर ख–बिखाद, सारा भावलोक के अभिव्यक्ति ए सब में कम भइल। लोकगीतन में बात उलट बा ई उनकर आपन इलाका ह। एह इलाका में पुरुस के पइस के प्रयास कतिने ना बिसंगति के जनम देलें, भोजपुरी से बढ़के एकर भुक्त–भोगी अउ कवन भाषा होई? कहीं भला, जब मरदे सोहर, झूमर, खेलौना, छठ, रोपनी, जँतसार, संस्कार आदि गीत गावे लागस त हेह मउगाही के कवन ओर, कवन छोर? लोकगीत के लगभग हर प्रकार में, चाहे ऊ संस्कारगीत, बरत–तिहार, संझा–पराती, श्रमगीत, बालगीत, रितुगीत आदि कवनों रूप होखे, स्त्री के अखंड सत्ता कायम बा, ए से उनकर अस्मिता के पहिचान के एह से बढ़ के दोसर कवनो स्रोत नइ खे। भोजपुरी लोकगीतन में उभरल नारी–स्वर, तिनकर अनुभूति, आस्था–बिस्वास, निष्ठा, संवेदना, प्रेम–बिरह, सुघराई, ममता, करुना, उमंग, बिथा, हताशा आदि के एह निबंध में उजागर कइल गइल बा। एक बात, सारा विवेचन में लेखक के भूमिका ना ज्ञानी के बा, ना उपदेशक के, ना दूर से देखल अधसाँच देखनिहार के, ऊ त खुदे ओह संवेदना के अनुभव के एगो हिस्सा बाड़े, माई संगे, उनुकर अंगुरी धइले, आपन तुचा पर स्त्रीलोक के समूचा रकत–प्रवाह के महसूस करत। चिंताजनक बात ई बा कि व्यवसायिकता आ बाजारूपन के आधुनिक दौर में ईहो धरोहर बिरूपीकरण के शिकार होखल जात बा। एकर असर से ना केवल भाषा बलु पूरा समाज विकृति के दिशा में बढ़ल जात बा जवन एह संस्कृति के लोप के कारन बनी आ स्त्री महज उपभोग के बस्तु में तब्दील होके रहि जइहें। बदलाव प्रकृति के गुन ह बाकी ओकर दिशा सही रहे एकर जवाबदारी ओह समाज के ह।

एक निबंध में भोजपुरी के पुरोधा उपन्यासकार स्व. रामनाथ पाण्डेय जी के कृति 'बिंदिया', जेकरा के एह भाषा के पहिला उपन्यास कहल जाला के वर्तमान प्रासंगिकता के पड़ताल कइल गइल बा। सही बात ह कि कवनो साहित्यिक रचना आपन समकालीन जुगबोध के बुनियाद प ठाढ़ होला बाकी तेकर तागत भविष्य दृष्टि आ दीरघकालीन सुसंगति के आसरे ह। दरअस्ल में ई स्व. पाण्डेय जी के पुण्यतिथि प

बाँचल आलेख के प्रस्तुति ह, जवना में लेखकीय सोच के बारीक अनुशीलन आ उहाँ के जीवन के कुछ अनछूअल पहलू के सामने रखल गइल बा।

एह किताब के उत्तर अर्धांश में संस्मरणात्मक रचना बाड़ीसँ। संस्मरण बेकती के अनुभव आ स्मृति के सहारे रचल अतीत के बखान ह। एह में लेखक के जीवन से जुरल घटना के बरनन होला। आत्मकथा के सरूप में होइला का बादो आत्मकथा जइसन पूरापन ए में ना होखे, दोसर कि ए में अक्सर दोसर के काज के अहमीयत दियाला आ लेखक सिर्फ देखनिहार होखेलें। अब देखे के क्रिया, ढंग आ कोना का बा, लेखक के भूमिका इन्ह बातन में बा। आजु के नजरिए 'बरम बाबा' अंधबिस्वास के नाँव हो सकेला बाकी गाँव के जिनिगी में कवनो तार्किकता बहुत कारगर उपाय सामने ना रख पावे। बेगर भौतिक मौजूदगी के एक बेकती के रूप में ऊ सगरो बाड़ें, कथा में, किंवदंती में, सपन में, दुखम–सितम में, बिस्वास में, आपद में सबके संबल देत, जेकरा सहारे गाँव–समाज आपन जिनिगी के जाँगर खे लेता। प्रकृति आ जुग के चक्का निरंतर चलत बा, एह समय के चकरचाली बाढ़ में बरम बाबा भलहीं नारायणी के धार में अलोपित हो गइल होखस बाकी अनुभव के तकाजा ईहे ह कि ओहि संबंल के टुटले गाँव कतिना टूटल होखी। 'एगो त्रिवेणी ईहवों बा' संस्मरण त हइए ह, बाकी यात्रावृतांत के रूप में, जवना में गंडकी के इर्दगीर्द पसरल प्रकृति आ संस्कृति सभ्यता के त खसीस के बखान बा। 'साँस–साँस में बाँस' के बहाने गिरामिन जीवन में बाँस के अहमियत आ सामाजिक ताना–बाना, भिन्नता के बावजूद अलग–अलग समुदायन के बीच के संबंध उजागर भइल बा। नाँव में का रखल बा? बहेलिया टोला के लोग कतिना पढ़ल–लिखल बा, एहू बात के तवज्जो देला के कवनो खास मकसद नइखे, बहेलिया टोला में प्रयुक्त शब्द 'बहेलिया' के मूल व्यध् होखे, बधिक हो खे, बहल भा बहलाव कुछो होखे 'पढ़–लिखल गाँव, बहेलिया टोला नाँव' के जतरा के उद्देश्य के सिद्धि गाँव के जिनगी के अध्ययन से हो जाता। 'आरोही जी कहानीकार से भेंट' संस्मरण कोटि के चीज ना बलु 'कहल–सुनल–बाँचल' प आध ारित बा, जवना में आरोही जी के जीवन के कुछ पहलू आ उहाँ के कहानीकार रूप प फोकस कइल गइल बा।

अंत में एक बात कहल जरूरी बुझाता– ''बाकी कहीं चाहे कुछुओ केशव मोहन जी के निबंधकला नायाब लेखन शैली के नमूना के रूप में प्रगट भइल बा। बेगर कवनों आडंबर के सहज, सपाट, आ चुटीला। बिस्वास बा प्रबुद्धजन हाथोहाथ लीहें।''

❑❑

❍ पटना,बिहार

मनोज भावुक

कुँवर सिंह के आखिरी रात

26 अप्रैल 1858 के रात कुँवर सिंह के आखिरी रात रहे. तीन दिन पहिले 23 अप्रैल के 80 बरिस के एह घायल शेर के कटल हाथ पर कपड़ा बन्हाइल, ओकरा ऊपर से चमड़ा के पट्टा से ढ़ाल के बान्हल गइल, तिलक लगावल गइल. फेर त ई राजपूती तलवार अंगरेजन के गाजर–मूली के तरह काटल शुरू कइलस. ली ग्राण्ड के जान गइल आ बाकी बाँचल अंग्रेज सैनिक जान बचा के भगलन सन. जगदीशपुर आजाद हो गइल. यूनियन जैक के झंडा उतार के परमार वंश के भगवा पताका लहरावल गइल. लोग खुशी के मारे पागल रहे आ कुँवर सिंह भी. 23 तारीख के कुँवर बाबू के सबसे छोट भाई आ युद्ध में उनके सबसे मजबूत हाथ बनके तैनात रहल अमर सिंह के जगदीशपुर के जम. ींदारी सौंप दीहल गइल. अमर के बेटा रिपुभंजन के उत्तराधिकारी बनावल गइल. सभा समाप्त भइल. बाबू कुँवर सिंह महल के भीतरी गइलें त उनका कटल हाथ में होत असह्य दर्द के ध्यान आइल. अचानक उ लड़खड़इलें, भाई आ भतीजा उनके सम्हारल लोग आ ले जा के उनका बिछौना पर सुता दिहल लोग.

विजय दिवस से मृत्य दिवस के बीच एक–एक पल उ जिंदगी खातिर मौत से लड़त रहलें. जिनगी के बीतल पन्ना सिनेमा के रील के तरह पलटत रहलें. जब इंसान अपना जिनगी के सफर के अंतिम पड़ाव पर रहेला त ओकरा आपन हीत–मीत, मोखालिफ, जानकार सभे इयाद आवेला. उनका आँखिन का सोझा उनकर बाबूजी साहबजादा सिंह, माई पंचरत्ना, पत्नी देवमूंगा, भाई अमर सिंह, साथी हरीकिशन सिंह, बंसुरिया बाबा, अंग्रेज

अफसर विलियम टेलर, विन्सेंट आयर, डगलस आ ना जाने केतना लोग के तस्वीर नाचत रहे. ओही में सबसे तेजी से नाचत रहली धर्मन बाई.

त ई धर्मन बाई के रहली आ कुँवर सिंह से इनकर का नाता रहे? धर्मन बाई आरा शहर के एगो नर्तकी रहलीय बहादुर स्त्री, अप्सरा लेखां सुंदर, मध जइसन गला वाली, नृत्य अउरी गीत गवनई में मँझल, वीरांगना आ कीचड़ के बीच रहे वाली कमल. बहुत लोग कहेला कि उ त नाचे वाली रहली बाकिर उ लोग ई ना जानेला कि उ माटी के रक्षा खातिर कुँवर सिंह के स्वतंत्रता अभियान में शामिल हो गइली आ अपना शरीर पर गोली, तलवार, भाला के घाव लेहली बाकिर पीछे ना हटली. धर्मन बाई अपना बहिन करमन के साथे रहत रहली आ नाच गाना उनकर पेशा रहे. उनके प्रसिद्धि पूरा शाहाबाद क्षेत्र में फइलल रहे.

उनके कुँवर सिंह से मुलाकात तब भइल जब एगो उत्सव में उ अपना बहिन के साथे प्रस्तुति देबे आइल रहली. उनके सुरीला कंठ से मार्मिक गीत अउरी भाव भरल नृत्य देखके बाबू साहेब काफी प्रभावित भइलें. बाबू साहब एगो कुशल शासक त रहबे कइलें, साथे गीत–संगीत के पारखी रहलें. कुँवर बाबू खुद गावे–बजावे में निपुण रहलें आ साल भर में फगुआ, चइता जइसन कवनो आयोजन ना छोड़ें जहां गीत–संगीत के उपासना होत होखे. उहाँ के नजर में हर एक कलाकार महादेव के रूप नटराज के उपासक रहे. एही से ओह कलाकार के कला के सराहना ईश्वर के उपासना से कम ना रहे. कुँवर बाबू धर्मन के एह प्रस्तुति खातिर खूबे बड़ाई कइलें. धर्मन कुँवर बाबू के बारे में सुनले रहली. आज उनका बात–विचार से बहुते प्रभावित भइली. इ दुनू जाना के पहिला मुलाकात रहे.

एक बार धर्मन आ करमन जंगल में घूमे गइल रहे लोग. उहवें एगो अंग्रेज दुनू बहिन से छेड़खानी करे के कोशिश कइलस. भाग्य से ओही जंगल में कुँवर सिंह अपना दल बल के साथे शिकार खेले गइल रहलें. उ समय पर आके दुनू बहिन के सम्मान आ प्राणरक्षा कइलें जवन धर्मन के मन में कुँवर सिंह के बहादुरी के प्रति अनुराग जगा देहलस. एकरा बाद कुँवर सिंह से उनके एक दू मौका पर अउरी भेंट भइल. धर्मन के नृत्य देखे कई गो अंग्रेज अफसर आवेसन आ उनका सामने मदिरा के नशा में बहुत कुछ अइसन बक द सन जवना गुप्त जानकारी होखे. धर्मन एगो सहृदय देशभक्त नारी रहली. उनका अंदर भी भारतीय लोग पर हो रहल अंग्रेजन के अत्याचार खातिर खीस रहे. जब उ कुँवर सिंह से मिलली त एह आक्रोश के आग के हवा मिलल. धर्मन कुँवर के अंग्रेजन के अत्याचार आ ओकनी के प्रपंच के जानकारी देबे लगली. कुँवर सिंह शुरुए से बागी रहलें, आ अपना सीना में कंपनी सरकार खातिर गुस्सा दबवले रहलें. उ धर्मन के एह राष्ट्रभक्ति से बड़ा खुश भइलें.

ओह समय कुँवर क्रांतिकारी नेता आ जम. ींदारन के संपर्क में रहलें. सभे कंपनी सरकार के खदेड़े खातिर गोलबंदी करत रहे, योजना बनावत रहे, संसाध ान जुटावत रहे. धर्मन धीरे–धीरे कुँवर के नजदीक होत गइली. कुँवर के आपन पारिवारिक जीवन बहुत उथल–पुथल अउरी नकारात्मकता से भरल रहे. कुँवर अक्सरहाँ एकांत में समय बितावे जितौरा जंगल के अपना शिकारगाह में आ जास. धर्मन सहृदय त रहबे कइली, जीवन दर्शन के बड़ा समझ रहे उनका. उहो अक्सरहा जितौरा चलि आवस. कुँवर बाबू के अंतरमन में बरिसन से लागल जाला साफ करे लागस. इंसान कई बार अपना उलझन के हल जानेला आ ओकरा से निकलहूँ के चाहेला बाकिर निकल ना पवेला. ओकरा एगो अकुंसी लगावे वाला के गरज होला जवन ओकरा माछी जइसन छटपटात मन के विचारन के मकड़जाल से बाँहि पकड़ के बाहर निकाले. धर्मन उहे अँकुसी रहली.

धर्मन त बाते बात में कुँवर बाबू के प्रति अपना अनुराग के प्रकट के देहले रहली बाकिर कबो बदले में बाबू साहब से कवनो मोह आ माया के इच्छा ना कइली. ई निःस्वार्थ प्रेम ही रहे कि कुँवर बाबू हमेशा ध ार्मन के साथ देहलें. उनसे कबो बियाह ना कइलें बाकिर उनके ओसहीं सम्मान देहलें जइसे उ अपना परिवार के देत रहलें. कुँवर बाबू साहेब के चरित्र के ई बड़प्पन रहे कि सगरो समाज खातिर जे धर्मन बाई रहली, उनका खातिर उ धर्मन देवी रहलीय उ धर्मन जे बाबू साहब के हर छोट–बड़ फैसला में सलाह देस, उ धर्मन जे बाबू साहब के देश खातिर लड़ाई में साथे साथे चलली, उ धर्मन जे कबो उनके पत्नी त ना बनली बाकिर कुँवर बाबू के रास्ता में आवे वाला बाधा के सामने खुद खड़ा होखे खातिर तैयार रहली.

साल 1857 के आखिरी में ग्वालियर के नजदीक काल्पी में अंग्रेजन से आमना–सामना के लड़ाई में धर्मन दुश्मन से खूब लोहा लेहली. एक ओर से कुँवर लड़त रहलें, एक ओर से उनके साथी लोग लड़त रहे. घमासान युद्ध मचल रहे. काल्पी के बगइचा लड़ाई के खून से पाटल मैदान हो गइल रहे. अचानक एगो अंग्रेज के गोली चलल आ सामने के तोप पर तैनात कुँवर के एगो सिपाही मर गइल. तोप से आग गरजल बंद भइल त अंग्रेजन के ओह साइड से

कुँवर सिंह के बनावल चक्रव्यूह में घुसे के राह लउकल . तले धर्मन बिजली के रफ्तार से गोलियन के बीच से ओह तोप के लगे पहुँच गइली आ मोर्चा सम्हार लेहली. गोला पर गोला दगली आ अंग्रेजन के आगे ना बढ़े देहली. तले कुँवर सिंह अउरी उनके सेनापति आके अंग्रेजन के घेर लिहल लोग. अंग्रेज तीन ओर से घेरा गइलन सन अउरी उलटे पाँव भाग गइलन सन. तोप गरजल शांत भइल. धर्मन अपना जगहि से उठे के चहली बाकिर बेजान होके बइठ गइली. कुँवर बाबू दउड़ के अइलें, धर्मन के सर अपना गोदी में रखलें. उ धर्मन के जल्दी ठीक होखे के ढाँढ़स देत रहलें, उनका आँखी में लोर भरल रहे, सभे अकबकाइल रहे. धर्मन कहे चहली कि बाबू साहब अब हम जा तानी, माफ करब रउआ साथे अउरी दूर तक ना चल पवनी. बाकिर कहि ना पवली, कई गो गोली आ तीर के चलते उनके ढेर खून बही गइल रहे, देह में हूब ना रहे . हाथ उठवली, कुँवर बाबू के लहलहात गलमुछ छुअली, एक बार पीला पड़त चेहरा पर मुस्कुराहट लि. अवली आ एगो सच्चा वीरांगना अउरी प्रेयसी के जइसन एह माटी अउरी कुँवर बाबू के आलिंगन में आपन प्राण छोड़ दिहली. कुँवर बाबू के आँख से झर झर लोर गिरत रहे.

बिस्तर पर सुतले–सुतल करवट बदललें कुँवर बाबू. बाबू साहब के आँख से लोर झर झर गिरत रहे जइसे अचानके सुखल झरना में पहाड़ से पानी आके झरे लागल होखे.

❑❑

❍ गौतम बुद्ध नगर, (उ0 प्र0)

उमेश कुमार राय
जमुऑव ,भोजपुर (बिहार)

बेटी–पतोह

का बात बा कनेया ! ढेर परेशान लागत बड़ू ? काकी कनेया के परेशानी के बारे में जानल चहली।असली में कनेया कवनो नया नवेली ना रही।कनया के बेटा–पतोह, बेटी–दमात सभ भरल रहे बाकी इनकरा के जब से नया–नया बियाह के आइल रही तबे से सभ केहु कनेया कहेला।कनेया आ काकी सलहिया रहली ।

परेशानी तै बड़हन बा ए काकी !आनका आगे रोई कि आपन दीदा खोई।घूंट–घुंट के जियत बानी ।

तोहरा कवना चीज के कमी बा ।सोना जस बेटा आ दमाद बा। नाती–पोता से घर भरल बा।बेटा–दमाद दूनो नोखरी–चाकरी करते बा।अब का चाही ए कनेया ?

काकी तूं ना जनबू।तोहरा कपारे नइखे नूं ?

का बात भइल ए कनेया ? काकी तनी चिंतित हो के छोह से पुछली।

का कही ए काकी! हमार बेटा आ पतोह बेहाथ हो गइल ।ओकर ससुररिया वाला जवन–जवन कहत तवन–तवन करत बा।ई सब देखके हमार अकिले हेरा गइल बा ।हमार करमवे के दोष बा।

सुन कनेया, समय के साथ सभ बढ़िया हो जाई।आपना के हकलान मत कर ।काकी सबुर बंधवली।

काकी!एके बात के सबुर बा कि हमार बेटी – दमाद सोना बा।हम जवन कहेनी तवने करेलन।हमार एको बात ना टारेलन।

काकी मुस्कइली आ कहली कि जइसन तोहार दमादवा बा ओइसने तोहार बेटवो कहुके दमाद बाड़न।जइसन तोहार लड़िका बाड़न ओसही तोहार दमादो केहुके लड़िका बाड़न।तूं आनका लड़िका के आपन बस में राखल चाहत बाड़ू त तोहरो लड़िका के केहु बस में रखले बा।ई त पईचा बा कनेया ! तू दोसरा के लड़िका लौटा द, तोहार लड़िका अपने लौट आई।एक हाथे द दूसरा हाथे ल।ओसही आपना पतोह के बेटी मनबू त उहो तोहरा के मतारी मानी।ईहे दुनिया के रीत ह कनेया!

❑❑

सुनीं ना अरज मोरे भइया हो

डॉ बलभद्र

भोजपुरी कविता प जब बात होई त भोजपुर के भोजपुरी कविता प जरूर बात होई भा होखे के चाहीं। भोजपुर के जमीन भोजपुरी कविता खातिर काफी उपज के जमीन ह। भोजपुर के भोजपुरी कविता के एगो महत्वपूर्ण पक्ष ह ओकर जनधर्मी मिजाज। सत्ता से असहमति आ जन आ जन आंदोलन से सीधा संवाद।

रमाकांत द्विवेदी रमता, विजेंद्र अनिल, दुर्गेंद्र अकारी एही जमीन के खास कवि हवें। कृष्ण कुमार निर्मोही के नांव भी एह जमीन से जुड़ल बा। एह बीचे जितेंद्र कुमार के भी कविता सोसल मीडिया प लगातार पढ़े के मिल रहल बा। जितेंद्र कुमार भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी– मार्क्सवादी लेनिनवादी से जुड़ल बाड़न। ई पूर्णकालिक कार्यकर्ता हवें। भोजपुर जिला कार्यालय के प्रभारी। जाहिर बात बा कि रोज रोज इनका अनेक तरह के लोग से भेंट–मुलकात होत रहेला। किसान से, मजदूर से, छात्र से, नौजवान से, महिला से। अनेक तरह के सवालन से रोज –रोज पाला पड़त रहेला। कई कई मोरचा प काम करे वाला लोग से भी इनकर रोज के भेंट ह। एह सबसे हासिल ज्ञान आ अनुभव के अभिव्यक्ति इनका गीतन में हो रहल बा।

जितेंद्र कुमार खुद निम्नमध्यवर्गीय गंवई परिवार के हवें। पार्टी ऑफिस में रहे के चलते इनका रमता जी, अकारी जी जइसन अनेक कार्यकर्ता कवि लोग के देखे सुने के मोका मिलल बा। ओह लोग से बहुत कुछ सुने आ समझे के भी। जनता के दुख–दरद आ ओकर जुझारूपन के बोध के बीचे इनकर कवि आ कविता आकार ले रहल बा। बिना कवनो शोर शराबा के।
भाकपा माले के कार्यक्रम, ओकर राजनीतिक एजेंडा के कविता के विषय बनावे के कला ई अकारी जी से लेत लउकत बाड़न।

इनकर एगो गीत ह –''भोंभा लेके विकास गुन गावल करीं।'' भोंभा के मतलब हर भोजपुरिया जानत बा। बहुत पहिले से ही लाउडस्पीकर के लोग भोंभा कहेला। आजकल सरकार बहुते जोरशोर से आपन काम के परचार करे में लागल बिया। ओकरा हाथ में मीडिया बा, गोदी मीडिया। ई सब सरकारी भोंभा ह। सरकार अब एही भोंभा के जरिए आपन छवि चमकाऊ परचार में लागल बिया। बिहार के मौजूदा सरकार होखे भा केंद्र के। विकास– विकास खूब गवा रहल बा। बाकी कवि कुछ दोसर बात कह रहल बा। बिहार सरकार के नल–जल योजना के हकीकत बता रहल बा। आकासे टंगाइल बिना जल के टंकी के ओर इशारा करत बा –
''खलिहा टंकी आकासे देखावल करीं
भोंभा लेके विकास गुन गावल करीं।''

कुछ बात बा जेके ठीक से समझे के होई। गीत में चापाकल आ इनार के सुखाए के बात बा। का एह के हलुके में लेवे के चाहीं!

''नल जल के जबसे दिहलीं पाइप पसार
चापाकल बन भइल, गंउवा के इनार।''

एकरा बाद बा खाली टंकी। ठीक अइसहीं जइसे गैस सिलिंडर बांटे के जोजना चलल। आ फेर हजार रोपया से ऊपर हो गइल सिलिंडर के दाम।

भरोसामंद सहारा जे रहे से ठप हो गइल आ जेकर सपना देखावल गइल ऊ फेल भ गइल भा पहुंच के बहरी।
एह गीत में एगो अउर बात बा। ऊ बात बा कि सरकार खूब जोर शोर से

खुशहाली के परचार करा रहल बिया आ एने गरीबन के हांडी लेवन लागे के जुगुत नइखे बनत। लेवन हांडी के पेनी में लागेला। जे हांडी के पेनी देखे के दृष्टि वाला बा, जाने के चाही कि ऊ समाज के सबसे निचिलका पावदान के आदमी के माली हालत देखे के दृष्टि वाला बा। ऊ देख रहल बा कि जीए के जद्दोजहद में लोग गांव छोड़ रहल बा, कवनो सवख में ना।

महंगाई आज चरम से चरम प बा। आम आदमी के जियल मुहाल बा। हर दौर में महंगाई प भोजपुरी में गीत लिखाइल बा। अटल बिहारी वाजपेयी के सरकार के समय अकारी जी लिखलें –
'महंगइया हो बड़का भइया बढ़ल बेशुमार।'

इंदिरा गांधी के समय खइनी के बढ़ल दाम प अकारी जी गीत लिखलें।
खइनी –बींडी प महंगी के मार भोजपुरिए कविता गीत के विषय हो सकेला। जितेंद्र के भी एगो गीत बा –
'' डेढ़ा सवइया रोज बढ़े
महंगइया मोरे भइया हो
मजधार में जिनगी के
नइया मोरे भइया हो।''

शालिनी कपूर

इज्जत

हम एह बात प गौर करे प मजबूर बानी कि बेशुमार बढ़त महंगाई प गीत लिखत समय अकसरहां मोरे भइया, बड़का भइया जस टेक अदबद काहे आवेला! बुझाला जे ई टेक आपरूपे आ जाला। बात अपना लोग से कहे सुने के क्रम में। गीत के अगिला कड़ी देखीं–

'' करुआ तेल के बोली
रोज भइल जाता टांठ हो
आग लाग जाता देख
गैसवा के ठाठ हो
दामवा बढ़े शान झरेला
दवइया, मोरे भइया हो।
रोज रोज बढ़े दाम डीजल पेट्रोल के
नाचवा देखावे महंगी लाता कपड़ा खोल के
नइखे बुझात कहवां घुसत बा कमइया, मोरे भइया हो।''
''नाचवा देखावे महंगी
लाता कपड़ा खोल के''

प गौर जरूर करे के चाहीं।

ई सामान्य कथन ना ह। ई करारा व्यंग्य ह, मार ह, बलुक सबसे कारगर। एह व्यंग्य से मौजूदा सरकार लंगटे हो जात बिया। ओकर सजल– धजल ठाट के धज्जी धज्जी उड़ जाता।

जितेंद्र कुमार के पासे स्मृति के खजाना जे बा, ऊ कविता के धज में जगह ले रहल बा। जाड़ा के कड़ा शासन में कउड़ा के सहारा बा इनका स्मृति के खजाना में। पुअरा –पेटाढ़ी के अलम बा। इनका लगे एगो जिद बा, समझ बा, भरोसा बा कि ''बीती रात अन्हरिया आई नयका भोर हो।'' रमता जी कहत बानी कि ''फाटी कुहेस सब घरी अन्हार ना रही।'' जितेंद्र जी भोजपुर के भोजपुरी कवि हवें।

❑❑

❍ गिरीडीह कालेज, गिरीडीह

'ते केकरा घर के हवे बबुआ?
इस्कूल से लवटत घरी ऊ दूबर–पातर लगभग चउदह–पनरह साल क लड़िका के राजन रोक के पूछलन।
'महेन्दर के' लड़िका छोटा सा जवाब दिहलस।

राजन क आँखिन में चिन्हार लउकल आ ऊ अचके लड़िका के हाथ पकड़ले कहलन– '' जिलेबी खइबे बबुआ?''आ जवाब के इंतजार ना करिके लड़िका क हाथ थमले हलवाई के दुकान ओरी बढ़ गइलें। लड़िका भकुवाइल राजन की ओरी देखता कि आजु अइसन का हो गइल कि दू बारी से इलाका के विधायक आ एह बेरी मंत्री पद के उम्मीदवार ' राजा साहेब' के खासमखास हमरा के बे बात जिलेबी खाये के नेवता देत बा? बाकिर जिलेबी के लालच अइसन रहे कि पढ़ाई में हुसियार आ बुद्धिमान लड़िका इनकार ना करि पइलस। भूख क मारे पेट में चूहन के दौड़ा–भागी के आगे लड़िका के बुद्धि हेरा गइल । भिनुसहरे बे दूध के आधा गिलास चाह(चाय) में रात के बाचल बासी रोटी में से एगो खाके निकलल रहे आ अब दिन के तीन बजे से बेसी समय हो गइल बा।

लड़िका राजन सङ्गे मिठाई के दुकान पर ठाड़ कनखया के समोसा छनात देख रहल बा। जिलेबी त सबेरहीं छना के ओरा गइल । सांझी बेरा चाय के साथे अदमी नमकीन पसन करेला। दुकान में सीसा के बनल काउंटर में तरह–तरह के रंगीन मिठइयनों पर ललचाइल नजर फेरा लेवे।राजन लड़िका के नजर आँक लेत बाड़े अउरी समोसा के सङ्गे इमरतियो मंगवा लिहवन। लड़िका के मुँह खुसी के मारे चमक गइल । मिठाई खात लड़िका के राजन कपार से लेके गोड़ तक खूब निम्मन से तिकवत बाड़े। गोर रंग के दूबर–पातर लड़िका खइला–पहिरला के दुख से झुराइल जरूर बा बाकिर चेहरा के लुनाई आ कमसिनी अइसन बा कि मेहरारू के कपड़ा–लत्ता पाहिन के कहीं ठाड़ हो जाये त केहू रत्तियो भर के सन्देह ना करी कि ई लड़िका ह।

मदन नाम ह एहि लइका के। पाँच गो भाई–बहिन में दुसरका नम्बर क। एगो बड़ बहिन, दुगो छोटहन भाई आ एगो छोट बहिन। जुआड़ी–सराबी बाप दू साल पहिल. हीं घर छोड़, का जाने कहवाँ गायब हो गइल। महेन्दर के घर छोड़ दिहला के बाद कुछ दिन त लेनदार ओकर टूटल–फूटल, ढहत मकान के दुआर पर आके लानत–मलामत कइलन जा बाकिर टूटल केवाड़ आ माटी के भरभरात देवार देख तगादा कइल छोड़ दिहल लोग।

चुनाव नजदीक आवते राजन अइसन लइकन के खोज में जुट जावे, जेकर केहू पुछनिहार ना होखे। जरूरतमंद आ हालात के एतना सतावल होखे कि भरपेट खाना आ झुठहूँ के इज्जत बचावे खातिर हर बात पर चुप्पी साध लेवे। कबहूँ बड़हन जोत के मालिक रहलन मदन के बाबा सदासिव बाबू। दु गो गाय आ तीन जोड़ी बैल नाद पर

बन्हाइल दुआर क सोभा बढ़ाव से। सदाशिव बाबू सरल सुभाव के इज्जतदार मनई रहलें। बाकिर बिना महतारी के बेटे महेन्दर कमे उमिर में जुआड़ीयन के सोहबत में पड़ के घर के बरतन–भण्डा चोरा के बेचे लगवन। एकलौता लइका के सही राह पर ले आवे खातिर सदाशिव बाबू नजदीके गाँव के खूब सुघर–गुनी लइकी के बिना दान–दहेज के महेन्दर से बियाह कर दिहलन। गरीब घर के लईकी कुछ ऊंच–नीच भइलो पर कहाँ कुछ कह पाई।

बहुत जल्दी सदाशिव बाबू के अपना गलती के एहसास हो गइल। अभी तक ले जवन काम चोरी–छिपे करे, अब सीना चौड़ा कइले होखे लागल। जुआ आ सराब के लत में महेन्दर एक–एगो करते सउँसे गहना–गुरिया बेच दिहलस। मना कइला पर हीक भर पतोह के पिटाई कर देवे। सदाशिव बाबू पतोह के अइसन दुरदसा देख मने–मन कुढ़त मुड़ी झुका लेवें आ एहि हुडुक में एक रात बे केहू से कुछ कहले चुपचाप स्वर्ग सिधार गइलें। बाप के मरते महेन्दर छुट्टा साँड़ हो गइल। एने घर मे बाल–बच्चन के बढ़ोत्तरी होत गइल आ ओने जोत कम होत गइल। बाकिर महेन्दर अउरी ढीठ होत गइल। खेत, गाय, बैल कुल्हि बिका गइल ऊपर से कर्जा एतना हो गइल कि लेनदार दुआरी पर आके गारी फक्कड़ देवे लगलन से। उधारी ना चुकइला पर दबंग अब तक खाली धमकी देत रहलन से, बाकिर एक दिन भरल बाजार में मुवली के मार मरलन से त महेन्दर के पास इलाका से भागे क अलावा अउरी कवनो राह ना बाचल।

मदन के बहिन आ महतारी चोरी–छिपे दु–चार गो घर मे बर्तन माँजे आ झाड़ू–पोंछा के काम करे लागल लोग। जइसे–तइसे नून रोटी के जुगाड़ होखे लागल। मदन पढ़े में बहुत होनहार लइका रहे आ सरकारी इस्कूल के नामभर के फीस क जुगाड़ कइसहूँ कर लेवे। फसल क कटाई के बाद मदन आ दुनों छोटका भाई खेत मे गिरल गेहूँ, धान, सरसों जइसन अनाज बीने त कबहूँ खुरपी लेके बाचल आलू कोडन से। खेत क मलिकार आधा से बेसी हिस्सा खुद ही रख के बाकी उहनी खातिर छोड़ देवे। गिरहस्थी के गाड़ी जइसे–तइसे खिंचात रहल, अइसना में जब राजन मिठाई खाये क नेवता मदन के दिहलन त उ आगा–पीछा ना सोच पाइलस कि एकर एहसान क बाद में का कीमत चुकावे के पड़ी।

राजन खातिर मदन आसान शिकार रहुवे। कुछे दिन में मदन ओकरा से अइसन मेल हो गइल कि जइसे ऊ आपन खास चाचा होखे। राजन लइका के निम्मन से सीसा में उतार लिहले बा आ फेरु एक दिन कहता कि 'राजा साहेब' के फार्म हाउस पर भी. सी.आर. पर फिलिम देखावल जाई। तोरा उमिर के कइगो लइका अवेलन से। फारम हाउस के हवेली पर राजा साहेब के मेहमानन के सेवा–सत्कार के बदले बीस रुपिया रोज मिली। सयान होत लईका एह लालच में फँस गइल। मोहल्ले क दु गो अउरी लइका राजेसवा आ पवनवा भी आवे ल सन ईहो बात राजने बतइले रहवन।

अगला दिने तीनों बेकत तय समय से तनी पहिलहीं फारम हाउस क बड़हन गेट तरे चहुँप गवे। ऊंचहन छरदेवाली से घेरल फारम हाउस के गेट अतना बड़हन रहे कि दु गो हाथी एकही सङ्गे संवसे निकल आवे। भीतर ऐन हवेली तक जाए खातिर लला ईंटा से बनल डहरी के दूनों ओर मन मोहे वाला खूब सुघर फूलन के झाड़ी लागल रहवे। थोड़की–थोड़की दूर पर पूरा फारम हाउस में फलदार पेड़ लागल रहवे। नाहियो त कम से कम पाँच एकड़ से बेसी जगह में बनल ई फारम हाउस अपना सुंदरता के सङ्गे–सङ्गे रहस्य खातिर भी प्रसिद्ध रहे। दूर–दराज के इलाका ले ई सुनगुन बा कि हवेली के पिछला हिस्सा में बड़हन पोखरा बा जेहमे मगरमच्छ पालल गइल बाड़न स` अउरी ' राजा साहेब' के विरोध करे वाला भा धोखा देवे वाला परानी एहि मगरमच्छन के कलेवा बन जाला आ सबूत खातिर पुलिस के हड्डी के एगो टुकड़ो ना भेंटाला।

भीतरी जात घरी मदन तनी घबड़ाइल बाकिर रकेसवा अउरी पवनवा हँसिए मजाक में बरियाइये हाथ धर के खींच ले गइल सन। हवेली के भीतरी अपने उमिर के कुछ अउरी लड़िकन के देखि के मदन के डर तनी कम हो गइल। खूब बड़हन हॉल खूब सुघराई से सजावल रहुवे। बड़का–बड़का सीसा के खड़की पर मोटे–मोटे सुघर परदा लगावल रहवे आ ओहके बान्हे खातिर पीतर के नक्कासी वाला वाला छल्ला लगावल रहवे जे पर बाघ के मुँह बनल रहवे। ई हॉल राजा साहेब क खास मेहमानन खातिर बनल हवे, एहिजा हर केहू ना आ सकत बा। हॉल में यू क आकार में खूब मोटे–मोटे गद्देदार सोफा लागल रहवे। सेंटर टेबल पर महंग–महंग शराब के कई गो किसिम के सङ्गे चाँदी के खूब सुघर प्याली में चखना सजा के राखल रहवे। ओही हॉल के एक ओर भी.सी.आर. के भी इंतजाम रहवे।

मदन के सङ्गे–सङ्गे कुल्हि लड़िकन के ई जिम्मेदारी दिहल गइल रहवे कि एहिजा आवे वाला मेहमानन के कवनो दिक्कत भा परेसानी ना होखे। मदन अउरी बाकी लड़िकन के निम्मन से नहा के, नया कपड़ा पहिर तैयार होखे के कह दिहल गइल। हवेली के रसोईया कुल लड़िकन खातिर लिट्टी, मीट आ खीर बनवले रहे। राती के आठ बजत–बजत फिलिम चालू हो गइल। हाथ में ठंढा के गिलास थमले टीवी पर सन्नी देवल के डीलडौल आ डायलाग

————————**शेष भाग पेज नं0–46 पर**

केशव मोहन पाण्डेय
साहित्य संपादक

बनारसी रस में पगल 'बंगड गुरू'

बनारस संसार के सबसे पुरनका शहरन में से एगो लोकप्रिय शहर हवे। ई हिन्दू धर्म में सबसे पवित्र नगर मानल जाला। बनारस के 'मंदिरन के शहर', 'भारत के धार्मिक राजधानी', 'भगवान शिव के नगरी', 'पंडा–पुजारियन के शहर', 'ज्ञान नगरी' आदि विशेषण से संबोधित कइल जाला। एह शहर के कण–कण में संगीत के सुर–लय–ताल बसेला त पग–पग पर विश्वनाथ बाबा के कृपा धूनी रमेला। एहिजा के धूरा भगवान भोलेनाथ के भभूत हवे त बेयार, व्यवहार के मादकता बढ़ावे वाली सगुनी बायन। एहिजा के पानी के बुन–बुन में गंगा माई के ममता बा त बानी के आखर–आखर में हिया–हिया के लगाव के माहिनी–मंत्र। ई नगरी कबीर, बल्लभाचार्य, रविदास, रामानंद से ले के आजु ले के साहित्य के समृद्ध परंपरा के प्रेरक पूंजी हवे त पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया, उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि ले के लहरात संगीत के लहर के प्रमाण। बात ज्ञान, ध्यान चाहे पान के होखे भा अपने में मस्तमौला गुरू लोगन के अक्खड़ अंदाज के, बनारस के रस पोर–पोर से टपकेला। बाति दाँव–पेच सीखत–सीखावत कवनो अखाड़ा के होखे भा कवनो भाषा–भाव के उर्वर गाँव के, बनारस के रस केहू भुला ना सकेला।

कहे खातिर केहू कुछू कहे बाकिर भारत के समाज में महिला लोगन के योगदान कबो कम नइखे मानल गइल। बाति समाज के होखे, संस्कार के होखे भा साहित्य के होखे, हमनी के घर के नारी–शक्ति भले चउखट ना लांघ पावें त का, कलम के साधन बना के साहित्य के साधना हमेशा कइले बा लोग। बाति अपाला, लापामुद्रा, गार्गी जइसे विदुषी के होखे भा 'बंगड़ गुरू' के रचे–सिरजे वाली विदुषी डॉ. सुमन सिंह जी के, नारी के अनुभवजनीत साहित्य सदा–सर्वदा समाज में लोकप्रिय रहल बा। आदरणीया डॉ. सुमन सिंह जी एगो अइसन जीवट साहित्यकार के नाँव ह, जे हमेशा दरियाव में सिल्लियो पड़ला पर धार के उल्टा चलि के अपना ढंग से दिशा देबे में माहिर हवे।

आजु भोजपुरी साहित्य के बारे में चुटकियो भर ज्ञान राखे वाला मनई में से शायदे केहू होई जे डॉ. सुमन सिंह जी के साहित्य से परिचित ना होई। जहवाँ ऊहाँ के सुभाव में समाज के रूढ़ि–परंपरा के अपना कलम से ठोंक–ठेठा के सोंझ करे के कूबत बा त अपना सजग आँखि से सबके आँखि में अंजोर भरे के जुगत बा। जे भोजपुरी में लिखत बेरा अपना भाषा के ठेंठ बनारसीपन वाली रवानी से कहानी के पाठक के अतल मन में आपन तल बनावत चलि जाला त भावुकता आ भाव के अइसन संसार के सिरजना करेला, जहवाँ से कवनो पाठक कबो जाए के ना चाहेलन।

भोजपुरी कथा–कहानी के माध्यम से भाषा आ भाव के सुखद, मयगर आ अपनापन वाला संसार के सिरजना करे में जवन गुन डॉ. सुमन सिंह जी के लेखनी में बसल बा, ऊ आजु के समय में बिरले कहीं मिली। बाति कहीं से शुरू होखे बाकिर ओर रसधार पाठक के तारत–सम्हारत आपन बनाइए लेला। बाति एही कहानी–संग्रह के कइल जावय एहमें के कवनो कहानी उठावल जाव, लागेला कि काशी के कवनो अड़ी पर एह कहानी के कड़ी बनत होई। कवनो कुल्हड़ के चाय के चुस्की लेत कतहूँ बंगड़ गुरू अपना चेला–चपाटियन के साथे मिल जइहें। बंगड़ गुरू के अक्खड़पन होखे भा बनारसीपन, कहानी पाठक के कतहूँ छोडे के तइयार नइखे। भोरे–भोर के घड़ी–घंटाल होखे चाहे कवनो नुक्कड़ पर के पत्ता के दोना में चाभत घुघुनी–रबड़ी–जिलेबी के सुस्वादु, कवनो घटना से व्याकुल मन में थिरता देत गुरू आ उनकर चेला–चपाटी मिलिए जइहें। भावन के भाषा में विश्वास बनवला के बाति होखे भा कोरोना महामारी के बेरा जागरूकता फइलावे के उपाय, एह किताब के कहानियन के एगो अलगे रंग का।

'काशी, कोरोना अउर लाकडाउन' के एगो गलचाउर के दृश्य देखल जाव, – ''ए गुरू ! तकले से करोना नाही होई भाय। अरे दुई गाल बतिया लेबा त कवन बज्जर पड़ जाई। एक त लाकडउनवा ससुर साँसत में परान डलले ह अउर एक तू बाड़ा कि कवनों बतिये नइखा सुनत। चार दिन हो गइल, ना पूड़ी–कचौरी खाय के मिलल, ना भाँग छनाइल, ना खैनी ठोंकाइल। सबेरे–सबेर आज चौरसिया भइया क भी कुल आकी–बाकी पूरा कके अइलीं ह। एगो पान का

माँगे चल गइलीं ह लगल ह कि उनकर पराने चल जाई। हमके देखते अगिया–बइताल हो गइलन हवें। कहत का हउवन कि... सुनत हउवा न गुरु ? जाएदा। ना सुनबा त हम जात हईं। का एतना हमके खलिहर बुझत हउवा कि सील पर रसरी फेरत रहीं। जात हईं अब।''

एह पूरा किताब में बंगड़ के बंगड़ई पाठक के मन के मथ के बनारस के गली–गली पहुँचे के त विवश करबे करी, भोजपुरियन के अक्खड़पनो के रोचक रूप सामने लेआई। 'बाबा बोतलनाथ' के एगो दृश्य देखल जाव कि कवना भाव से कोरोना के विकराल रूप के वर्णन बा, जवना में सबके रोजी–रोजगार चउपट हो गइल रहल। देखीं, – ''सबेरे–सबेरे कवन आफत–बीपत आ गइल कि ध ावत धमक अइले तूँ। समझावत–समझावत हम हार गइलीं बाकिर तू हउवे कि मनते ना हउवे। कहत–कहत हार गइलीं कि अब पहिले नियन बात ना रह गइल। रोजी–रोजगार करोना के भेंट चढ़ गइल। महिनन्न भइल अदिमी के दू जून ढंग से खात–पियत। तीज–त्योहार, हाट–ठाठ कुल बिला गइल। देस–बिदेस बीरान हो गइल। अदिमी जन क अपनहीं घर–दुआर कारावास हो गइल आ तोहके अब्बो सरग–सुंदरी देखात हईं। भाई हम त जानत रहलीं कि तू बुधिये क भसुर हउवा बाकी तू त ! जा ए भाई...तू ना सुधरबा। हम कहत हईं कि चल जा इहा से नाही त बोलियो–चाली बन करे के परी।''

एह किताब के सगरो कहनियन के सबसे रोचक आ सशक्त पात्र बंगड़ पाठक के हर रूप में मिल जइहें। ऊ कबो केहू के परेशान करत बाड़ें, कबो अपनहीं परेशान होत बाड़ें। कबो केहू के चिंता में गलत बाड़न त कबो केहू के चिंता के विषय बनल बाड़न।

चिंता त 'बंगड़–गुरू' के एकहक कथा रचत–सिरजत कथाकारो में बा। चिंता त ऊहाँ के एकहक शब्दन में बा। पाठक पढ़ि के भले गाल फाड़ के, दाँत चिआर के आ ताल ठोंक के हँसे, ठहाका लगावे, बाकिर लेखिका के आँखि से देखला पर ठाँवे–ठाँव लउकेला कि चिंता बनारस के सूखत रस के कारन ऊहाँ के हर पैरा में बा, हर शब्द–संवाद में बा। लेखिका चिंतित बानी कि सबहर रस के बरसात करे वाला, इतिहास–पुराण–धर्मशास्त्र आदि में मंडित बनारस में बाति–बाति में गारी के पइसार कहाँ से हो गइल? दुअर्थी शब्दन के प्रयोग के परंपरा कहवाँ से विकसित हो गइल? सामने वाला पर दाँव खेले, लंगड़ी मारे आ मन के ककोर के नून मले वाला क्रिया कब से चालू हो गइल? ई सब हमरे बनारस के कवना परिपाटी के सिरजत बाटे, कवना परंपरा के प्रारंभ करत बाटे?

अगर हम आपन बाति कहीं त स्नातक करत बेरा से बनारस जाए के बदा होखे लागल रहे। कवनो ना कवनो बहाने। बाकिर ओह बहाना में धार्मिक–पारंपरिक मौका ढेर रहे। उन्नीस नौ निनानबे में माई के ले के गइनीं। बाबूजी के ना रहला के बाद, गंगा नहान करावे। दू हजार आठ के बाद बनारस से हमार चित्त फाटि गइल। वाराणसी जंक्शन के प्लेटफार्म नं. पाँच, आरपीएफ थाना के एकदम सामने, हमरा जिनगी के एगो अइसन अध्याय के घटना घटल कि तबसे हमार दिने–दशा बदलि गइल। तबसे बनारस से डर लागे लागल। हमरा पत्नी के गहना–गुरिया से भरल अटैची पर केहू हाथ साफ क लिहल। पुलिस दू महिना ले आपन लाचारी रोअत सांत्वना देत रहल। बाकिर जब डॉ. सुमन सिंह जी से परिचय भइल त लागल कि संबंधन के एगो मजबूत धागा हमके बनारस से बान्हि दिहले बा। हम अपना पीड़ा से तड़पत भले एह शहर से आपन नाता तूरे के चहनी, बाकिर ई शहर छोड़ी ना।

'बंगड़ गुरू' के कहनियन के पढ़त बेरा मन के कवनो कोना में समय के पत्थर से दबाइल ऊ टीस फेर से हरिहर होखे लागल। बनारस के गंगा, ज्ञान, आध्यात्म, साहित्य, संगीत, स्नेह और संस्कार के सकारात्मक आ पावन वातावरण में का सचहूँ अइसन परंपरा कहीं विकसित होत बा? अइसन भइल त फेर सरकार से ले के सगरो सामाजिक सरोकार के सकारात्मक काम धइले रहि जाई।

बनारस त देश–विदेश में सबके खातिर ध ार्म–संस्कार में रंगल–रचल नगरी हवे। एह कथा के रचवइया के साहस के सलाम करे के पड़ी जे अपना निसंकोची सुभाव से बनारस–कथा आ अड़ी–कथा के सिरजना कइले बा। एह कहा–संग्रह के चउहद्दी बनारस भले होखे, बाकिर एह संग्रह के हर कथा समाज के आइना बा। लेखिका के हास्य प्रधान एह कहानियन में दबल बनारस के बिलात रस देखि के अफनाहटो बा ज अनुराग के गंगा के धारो बा। एह गुरू के चरित्र के बहाने बनारस के वैचारिक बतकुच्चन के ठाँव से ढेर लोग के परिचय हो जाई। ढेर लोग के मन–मस्तिष्क बंद पड़ल बज्जर कपट–कपाट खुली जाई आ ढेर लोग बंगड़ गुरू के बंगड़ई से साक्षात्कार करी।

पाठक लोग ई 'बंगड़–गुरू' के पढ़त बेरा बेर–बेर बंगड़ गुरू त मिलबे करिहें सथवे लगावे–बझावे वाला पिंकूओ मिली जे बंगड़ के हर बोली के खटका–मीठका गोली जइसन चुभलावेला। देश–दुनिया, सभा–समाज के चिंता के साथे भाषा–सुभाव पर आपन चिंता व्यक्त करे वाला, कुकुरझाँव से झँवाइल, लूह से तँवाइल कहीं खटपटिया गुरू मिलिहें त कहीं चौबिस घंटा चिंता में डुबल झगड़ू मास्टर मिल जइहें। तब हमरे लेखाँ ढेर लोग के अष्टभुजा शुक्ल जी के कविता ईयाद पड़ि जाई कि –

गुरु से संबोधन करके
किसी गाली पर ले जाकर पटकने वाले
बनारस में सब सबके गुरु हैं
रिक्शेवाला गुरु है
पानवाला गुरु है
पंडे, मल्लाह, मुल्ला, माली और डोम गुरु हैं
नाई गुरु है, कसाई गुरु है, भाई गुरु है
कॉमरेड गुरु हैं शिष्य गुरु हैं

और गुरु तो गुरु हैं ही कुल मिला के ऊहे हाल ई 'बंगड़–गुरू' के बा। एहमें बनारस के बहाने देश–समाज के चिंता हवे त हास–परिहास करत अनेक सामयिक विषय पर चर्चा के गोलमेज हवे। ई आजु के समाज के दिशाबोध बा त बदलत बेयार आ व्यवहार पर लेखिका के अनुभवी कलम से कमाल रचत शोध बा। निश्चित रूप से भोजपुरी कथा–संसार में एगो सुन्नर कहानी–संग्रह के प्रवेश होत बा। अइसन सर्जना बदे बेर–बेर बहिन डॉ. सुमन सिंह जी के बधाई आ ऊहाँ के कलम के बेर–बेर सलाम।

❑❑

❍ केशव मोहन पाण्डेय सर्वभाषा के संपादक ,सर्वभाषा ट्रस्ट के समन्वयक आ सर्वभाषा प्रकाशन के निदेशक बानी।

अंकुश्री

बसंत लेके उधार

सेमर आ परास
तहार चुनरी के रंग
ले के उधार
आइल बसंत के संग।

नकल उतार के
मीठ बोलिआ तहार
कोयलिया कुहुके ले
अमरइया के पार।

तहरे मिठास ले के
अमवा मोजराइल बा,
हवा में तहरे गंध से
सुगंध जे आइल बा।

बाजे पायलिया
गोरवा में तहरा जे
चिड़ई नकल उतारे
संझिया के पेड़वा पे।

तहरे ढ़िठाई
ले के पईंचा बयार
आ गइल बसंत
ईयाद देलस तहार।

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी,
सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

संत दरियादास के पठनीय जीवनी

धनंजय कटकैरा

जब पूरा देश में कर्मकांड,पाखंड, आडंबर, प्रपंच चरम पर रहे त श्रमण समाज एह रूढ़िवादियन के बनावल न्यायिक व्यवस्था आ कानूनी व्यवस्था से कराहत रहे। अगर कवनो गाय के जानबूझ के भा अनजाने में मारल गइल त ओकरा के तरह तरह के यातना के सामना करे के पड़े, सती के नाम पर विधवा जरा दिहल जात रहे, दलित पिछड़ा आ मेहरारू लोग के पढ़े लिखे के अधिकार ना रहे आ अइसने अउरी रोक–टोक रहे।अइसन घना अन्हार में कबीर जइसन सूरज निकलेला जे अपना ज्ञान से पूरा उत्तर भारत के रोशन करेला। कबीर आपन बात प्रभावी ढंग से कहे में सफल रहल बाड़े। उ रिजल्ट के चिंता कईले बिना कहतारे कि

पाथर पूजा हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़ ...
कंकर पाथर जोरी के, मस्जिद लियो बनाए ....

बिहार के दरिया दास कबीर की परम्परा के आगे बढ़ावत बानी । एही से उनुका के बिहार के कबीर भी कहल जाला। कबीर के विचार उनुका रचना में साफ–साफ झलकत बा। दरियादास कोचास–दीनारा के पास शाहाबाद के रहे वाला रहलें। उनकर जीवन आ विचार पर एगो नया किताब निकलल बा, जेकर नाम ह – 'संत दरियादास – जीवन आ विचार'। जितेन्द्र वर्मा जितेन्द्र वर्मा एकरा के बहुते रोचक तरीका से लिखले बाड़न. वर्मा एह किताब के बहुते मोट नइखन बनवले. संत दरिया के जीवन के महत्वपूर्ण घटना के उहाँ के एह किताब में खूबसूरती से बुनले बानी। एकरा खातिर उ लोग धन्यवाद के हकदार बाड़े। अपना लेखन के माध्यम से समाज के उपेक्षित नायक के जीवन के सोझा ले आ रहल बाड़े। एकरा से पहिले उहाँ के लोक कलाकार भिखारी ठाकुर अमर शहीद जगदेव प्रसाद के जीवनी के सोझा ले आइल बानी।

दरिया दास बचपन से ही समाज में मौजूद बुराई के खिलाफ लड़त बाड़े। एक जगह बकरी के बलि दिहल जा रहल बा। दरियादास ओह बलिदान के रोके खातिर आगे आवेला। ओह घरी ऊ बहुते छोट रहले. एही से लोग उहाँ से भगावेला। तब से समाज में फइलल बुराई, संस्कार आ दुनिया के खिलाफ लोग के जागरूक कर देले। समाज में फइलल बुराई के खिलाफ ऊ लिखे आ जोर से बोलले। उ आपन मानवीय संदेश जनता तक पहुंचावले। एकरा के सामाजिक सुधार मानल जा सकेला.

युवा साहित्यकार जितेन्द्र वर्मा अपना जीवन यात्रा के कहानी के रूप में प्रस्तुत कइले बाड़न. ई किताब पढ़े लायक बा। ई किताब युवा विधायक अजीत कुमार सिंह अजीत कुशवाहा के समर्पित बा। सर्वविदित बा कि अजीत कुमार सिंह राजनीति के सामाजिक परिवर्तन के माध्यम मानेले। सरकार बदले से जादे मुश्किल बा समाजिक बदलाव कईल। सामाजिक बुराई से लड़त घरी अजीत बाबू हमरा के दरियादास के याद दिलावत बाड़े। किताब उनुका के समर्पित करत लेखक सही लिखले बाड़न – अजीत कुमार सिंह, जेकरा में संत दरियादास जइसन कड़ुआ सच्चाई बतावे के हिम्मत बा आ खून–खराबा से भी ओकरा खातिर लड़ाई लड़े के हिम्मत बा।

किताब पातर बा, बोझिल नइखे होत बाकिर पाठक के मन आ दिल पर गंभीर असर छोड़त बा.

पुस्तक – संत दरिया दास (जीवनी)
लेखक – जीतेंद्र वर्मा
प्रकाशक – अनुज्ञा बुक्स , दिल्ली 110032
प्रथम संस्करण – 2022 मूल्य – 50 रुपया

❑❑

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय
आरा

पेज नं – 41 से आगु

देखि सुनि के जोश में भर गइल बाड़न से। फिलिम आगे बढ़ रहल बिया आ सङ्गे मेहमान के आवल भी सुरु हो गइल बा। 'ई मेहमान लोग अपना इलाका के त नइखे बुझात लोग' मदन मनही मन सोचत बा। राजा साहेब अभी ले ना देखइल हन मदन के। बुझाता ई कुल्हि तैयारी खाली मेहमान लोग खातिर भइल बा।

पुरनका लइका एक–एक कर उठत बाड़न से आ सेवा पानी मे लाग गइल बाड़न से। लइका एकदम ट्रेंड बाड़न से चवन्निया मुस्की सजवले एकदम नजाकत से मेहमानन के खाली चखना आ शराबे नइखन स परोसतय अपना देह पर फेरावत उहनी के हाथन के छुवला के झुरझुरी भी देत बाड़न स। मदन बीच–बीच में मेहमानन के ओरी तिकवत बा, फेर घबड़ा के मुँह फेर लेता।

अब पूरा हॉल नीला रोशनी से भर गइल बा आ अजबे रहस्यमई अउरी डरावना देखात बा। फिलिम खतम हो गइल बा आ भी.सी.आर.पर कवनो हद दरजा के बेहूदा फिलिम चल रहल बा। ई देखि के मदन के हूल उठे लागल बा। ऊ बाथरूम जाए खातिर उठे ता बाकिर अपना के सम्हार नईखे पावत। राजन ओकरा के सहारा देत बाथरूम तक ले गइल आ लवटत घरी विसेस रूप से आमंत्रित कइल विदेसी मेहमान के आगे खड़ा कर दिहलस। लइका एकदम अनछुआ फूल बा त विसेस मेहमान खातिर परोसल गइल बा।

ओहिजा मौजूद बाकी लड़िका दूसरा मेहमानन सङ्गे अलगा–अलगा कोठरी में बंद हो गइल बाड़न स। मदन पर घबड़ाहट हावी होत जाता अउरी कवनो अनहोनी के असंका से डेराइल ओहिजा से भाग गइल चाहता लेकिन गोड़ जैसे जमीन पर सट गइल बा। मेहमान के हाथ ओकरा पीठ से सरकत जांघि ले चहुँप गइल बा, मदना एकदम जड़ पाथर हो गइल होखे जइसेय ए. सी. के जाड़ में भी ओकरा माथा पर पसीना चुहचुहा गइल बा। दिल क धड़कन एतना तेज भ गइल बा कि लगातार ओकरा के धड़–धड़ के आवाज सुनाई दे रहल बा, बुझाता कि पसलियन के तोड़ दिल बहरी आ के गिर जाई। बिदेसी सराब आ महंग सेंट के महक दिमाग होस–हवास भुला गइल बा। मदन खूब जोर से चिल्ला दिहल चाहता, देह पर रेंगत ओह घिनहट छुआवन के झटक के अपना देह से हटा दहल चाहता बाकिर ओकर जीभ तारू से सट गइल बा। सूखल मुहँ में केहू बालू भर देहले बा, हाथ अइसन लटक गइल बा जैसे लकवा मार देले होखे।

रात एकदम अन्धियार हो गइल बा। अब कुल्हि चीज एकदम सांत बा बाहिर कहीं से उरुवा के बोले के आवाज आ रहल बा। मेहमान इसारा करता आ राजन मूर्ति नियर खड़ा मदन के उनुकर कोठरी में चहुँपा देता। एकदम सुई पटक सन्नाटा खिंचा गइल बा कि अचके खूब जोर के चीखे के आवाज ओहि सन्नाटा के चीर देता। कोठरी से लगातार चिल्लाए के आवाज धीरे–धीरे कमजोर पड़त जाता अउरी उ बड़हन कोठी के ऊंच दिवारन के बीच कहीं बिला जाता।

❑❑

❍ सेक्टर –74, नोएडा (उ.प्र.)

एह अंक के चित्रकार

श्रीकांत दुबे

श्रीकांत दुबे जी खलिसपुर, गाजीपुर (उ0 प्र0) के रहनिहार बानी। इहाँ के पोस्ट ग्रेजुएसन का संगे काशी विद्यापीठ वाराणसी से पेंटिंग में B F A कइले बानी। इहाँ के दू दर्जन से ऊपर पेंटिंग के एकल प्रदर्शनी, दू गो अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का संगही 4 दर्जन से उपरे ग्रुप प्रदर्शनी के हिस्सा रह चुकल बानी। इहाँ के एक दर्जन से ऊपर एकल सीरीज बना चुकल बानी। कई गो लाइव पेंटिंग के हिस्सो रह चुकल बानी। इहाँ के पेंटिंग खातिर कई दर्जन सम्मानो मिल चुकल बा।इहाँ के नाम से कई गो रिकार्डो दर्ज हो चुकल बा। दर्जनो टेलीविजन चैनल कार्यक्रमन के इहाँ के हिस्सा रह चुकल बानी। इहाँ के कई गो एडवाइजरी बोर्ड के सदस्यो बानी। एह घरी इहाँ के निवास गाजियाबाद (उ0 प्र0)बा।

भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार इहाँ के उज्जवल भविष्य के कामना कर रहल बा।

❑❑

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

अ अपनइत

(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)

अध्यक्ष : **सरोज त्यागी** संयोजक : **जे.पी. द्विवेदी**

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/- | संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।